कर्मकाण्डप्रबोध



डॉ. राममिलन मिश्र

कोहि पाना च्यातिएका छन् किन-लगीका
तिमीले खोलेको पाठ नभेटिन पनि सक्छ

कर्मकाण्डप्रबोध

(पञ्चाङ्ग-पूजन, वेदी पूजन, प्रधान देवता पूजन, हवन विधि, मण्डपपूजन एवं आरती मंत्रादि संवलित साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय अनुष्ठान पद्धति)

लेखक

डॉ० राममिलन मिश्र

(साहित्य, ज्योतिष, पुराणेतिहासाचार्य, नेट, पी-एच.डी. ज्योतिष)

अध्यक्ष- श्री वेदाङ्ग संस्थान प्रयागराज एवं

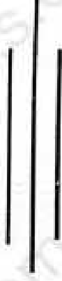
अखिल भारतीय प्रयाग पंडित सभा, प्रयागराज





कर्मकाण्डप्रबोध

(पञ्चाङ्ग-पूजन, वेदी पूजन, प्रधान देवता पूजन, हवन विधि, मण्डपपूजन एवं आरती, मंत्रादि संवलित साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय अनुष्ठान पद्धति)



लेखक

डॉ० राममिलन मिश्र

(साहित्य, ज्योतिष, पुराणेतिहासाचार्य, नेट, पी-एच.डी. ज्योतिष)

अध्यक्ष- श्री वेदाङ्ग संस्थान प्रयागराज एवं

अखिल भारतीय प्रयाग पंडित सभा, प्रयागराज



श्री वेदाङ्ग संस्थान, प्रयागराज - ६

ISBN : 978-81-935160-0-3



कर्मकाण्डप्रबोध : साङ्गोपाङ्ग शास्त्रीय अनुष्ठान पद्धति

संस्करण : प्रथम : गुरुपूर्णिमा २०७२ विक्रमी
द्वितीय : अक्षयतृतीया २०७४ विक्रमी
तृतीय : श्री गंगादशहरा २०७६ विक्रमी
चतुर्थ : अक्षयनवमी २०७७ विक्रमी

प्रकाशक: **श्री वेदाङ्ग संस्थान, प्रयाग**
कमला निलयम्
कमलानगर, यमुना विहार, तिगनौता
डांडी, प्रयागराज - २११००८
☎: ९४१५३६६८२२, ८८४०७६२३८१

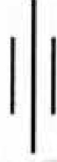
मूल्य : रु० २५०/-

पुस्तक प्राप्ति स्थान: **श्री वेदाङ्ग संस्थान, प्रयाग**
हरभजनदास का मन्दिर, ६३/५९, मोरी
दारागंज, प्रयागराज - ६ (उ.प्र.)

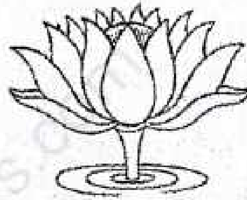
शब्द-संयोजन एवं पृष्ठ-विन्यास : ब्रह्मानन्द मिश्र
कृष्णा कम्प्यूटर संस्थान, दारागंज

मुद्रक : **एकेडमी प्रेस,**
दारागंज, प्रयागराज-०६

।। समर्पण ।।



ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।



देवीरामसखी सुमूर्ति विमला जननी पितुर्मातृका।
रुद्रात्मः श्रीब्रह्मदीन सुमनः ब्रह्मैक्यभावात्मकः।।
ब्रह्मर्षेः श्रीवत्सगोत्रजविधोः वंशावतंशो रविः।
ग्रन्थोऽयं उभयोश्चरणकमलयोः धर्माप्तये चार्पितम्।।

स्वर्गीया पितामही रामसखी देवी एवं रुद्रस्वरूप स्वर्गीय
पितामह ब्रह्मदीन मिश्र की पुण्यस्मृति में
''**कर्मकाण्ड प्रबोध**'' नामक ग्रन्थ सादर समर्पित



निवेदन

सच्चिदानन्दरूपाय विश्वोत्पत्यादिहेतवे।
तापत्रयविनाशाय श्रीकृष्णाय वयं नुमः।।

कर्मकाण्ड कराने में जिज्ञासा रखने वाले प्रारम्भिक छात्रों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत कर्मकाण्ड-प्रबोध नामक पुस्तक का सम्पादन किया जा रहा है। इसमें कर्मकाण्ड सम्बन्धी प्रारम्भिक जानकारी एवं गणेश गौरी, कलश, षोडश मातृका, सप्त घृत मातृका सहित वास्तु, योगिनी, क्षेत्रपाल, नवग्रह मण्डल, सर्वतोभद्रमण्डल, तथा चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डल का आवाहन, पूजन सहित और प्रधान देवता पूजन का विधान यथा सम्भव सरल ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। कुशकण्डिका विधान इस पुस्तक की विशेषता है जिसका प्रायः लोप ही देखा जाता है जबकि प्रत्येक हवन कर्म में कुशकण्डिका आवश्यक कर्म है। साथ ही पुरुषसूक्त, श्री सूक्त तथा रुद्र सूक्त भी दिया जा रहा है जिसका प्रयोग विष्णु शिव एवं लक्ष्मी या दुर्गा के पूजन में किया जा सके। इसके अतिरिक्त पूजन में प्रयुक्त होने वाले वैदिक मंत्र, कण्ठाग्र करणीय देवताओं के श्लोक, मङ्गलादि अष्टयोगिनियों के वैदिक मन्त्र मूल एवं पंचक नक्षत्रों के वैदिक मंत्र भी दिए जा रहे हैं। रत्न पूजन एवं वाहन पूजन की विधि भी अन्त में दी गई है, जो कि वर्तमान में अत्यन्त उपयोगी है। प्रत्येक कर्मकाण्ड में इनका प्रयोग होने से जिज्ञासुओं के लिए उपयोगी होगें। इसके माध्यम से आवश्यक सभी यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न किए जा सकते हैं। पुस्तक में वैदिक एवं पौराणिक दोनों प्रकार के मंत्रों का संकलन होने से सर्वग्राह्य होगी। कर्मकाण्ड प्रबोध का प्रथम संस्करण श्री गुरुपूर्णिमा, संवत् २०७२ विक्रमी को किया गया।

चतुर्थ संस्करण

कर्मकाण्ड प्रबोध ग्रन्थ के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय संस्करण का प्रकाशन आप सुधीजनों द्वारा हाथों हाथ स्वीकार किया गया तदर्थ साधुवाद। भगवत्कृपा से शीघ्र ही चतुर्थ संस्करण के प्रकाशन का सुअवसर प्राप्त हुआ है, अतः पूर्व संस्करणों में जो निर्दिष्ट त्रुटियाँ थीं उन्हें इस संस्करण में पूर्ण रूप से संशोधित करने का प्रयास किया गया है साथ ही प्रस्तुत संस्करण में जिज्ञासुओं

की अपेक्षा से मण्डप–पूजन भी दिया गया है जो आप सबकी अपेक्षा थी। इसके पूर्व संस्करण में जन्म तिथि पूजन विधि, दुर्गोपनिषत्कल्पद्रुम ग्रन्थावतारित चण्डी के विशिष्ट हवन विधान को दिया गया था। इस संस्करण को विशुद्धतम् करने का अथक प्रयास किया गया है, तथापि पाठक विद्वत् वरेण्य से निवेदन है कि जो त्रुटियां या सुधार की अपेक्षा हो कृपया सूचित कर ग्रन्थ को निर्दुष्ट बनाने में सहयोग करेंगे। इस महनीय सहयोग के लिये आप सबका अभार।

विश्वास है कि कर्मकाण्ड प्रबोध के पूर्व संस्करणों की भाँति इस चतुर्थ संस्करण में प्रकाशित प्रतियों को भी आप सब सहर्ष स्वीकार करेंगे, तदर्थ सदुपयोगार्थ यह ग्रन्थ आप सब के लिये सादर निवेदित है।

कर्मकाण्डप्रबोधोऽयं ग्रन्थः पण्डितश्रेयसे।
साररूपं समालिख्य सारल्येन प्रकाशितः।।
छात्राणां मृदुबुद्धीनां स्वल्पज्ञानवतां कृते।
क्रमाचर्या विबोधाय त्वदीयैव समर्पये।।

लेखक

श्री अक्षयनवमी, संवत् २०७७ विक्रमी

डॉ. राममिलन मिश्र
* बिसौंधा, इटवाँ, चित्रकूट (उ.प्र.)
* 'कमला निलयम', कमलानगर, तिगनौता,
डांड़ी, प्रयागराज (उ.प्र.)





।। श्रीमन्मङ्गलमूर्त्तये नमः।।

विषयानुक्रम



पूजन सम्बन्धित आवश्यक जानकारी

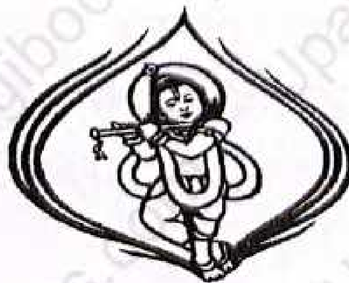
- पत्र पुष्प तथा फल अधोमुख न चढ़ावे किन्तु विल्व पत्र अधोमुख ही चढ़ावें। – पाटल आह्निक, पृ. १४२
- कमल पांच रात्रि तक, विल्व पत्र दश रात्रि तक, तथा ११ रात्रि तक तुलसी पर्युषित नहीं होती। – स्मृत्यन्तर।
- शिवजी को विल्वपत्र, विष्णु को तुलसी, गणेश को दूर्वा, दुर्गा को अनेक प्रकार के पुष्प, सूर्य को लाल करवीर पुष्प अतिप्रिय हैं। – स्मृत्यन्तर।
- पुष्प न मिलने पर पत्र ही निवेदित किया जा सकता है। पत्राभाव में तृण या छाल चढ़ा सकते हैं वह भी न हो तो भक्ति से मानसिक पूजन करें। – भविष्यपुराण
- कृमि कीट से छिद्र किये हुए, सड़े हुये, वासी, स्वयं गिरे हुये तथा जिनमें मलादि विकार लगा हो अर्थात् बहुत गंदा हो उन्हें देवताओं में नहीं चढ़ावे। – भविष्यपुराण
- अधोवस्त्र में रखे हुए तथा जल से धुले हुए फूल देवता नहीं ग्रहण करते। – भविष्यपुराण
- अङ्गुष्ठ के अग्रभाग से देव मूर्ति को नहीं रगड़ना चाहिए, कुशा के अग्रभाग से देवताओं में जल न छिड़के, वह वज्रपात के समान होता है। – वार्तिक
- जमीन में गिरे हुए तथा सूखे हुये फूलों से, पंखुड़ी पृथक् किये हुए फूलों से तथा पुष्पकली से देवपूजा नहीं करनी चाहिए। – हारीत
- बिना टूटे चावल ही अक्षत कहे जाते हैं अतः साबुत चावलों को शुद्ध जल से तीन बार धोकर ही देव पूजन में प्रयोग करना चाहिए।
- एक बार चढ़े हुए फूल, बेलपत्र या तुलसीदल को दोबारा नहीं चढ़ाना चाहिए।
- उग्र गन्ध वाले दूषित गन्धवाले तथा निर्गन्ध पुष्पों से पूजा न करें। – वार्तिक

- वस्त्र में लाए हुए, हाथ में लाए हुए, स्वयं गिरे हुए तथा एरण्ड पत्र में लाये हुए फूलों से पूजा न करें। – हारीत
- अक्षत से विष्णु (शालग्राम) की, तुलसी से गणेश की, दूर्वा से दुर्गा की, उन्मत्त (धतूरा) से सूर्य की पूजा न करें अर्थात्, इन्हें न चढ़ावें। – भट्टि ज्ञानमाला
- मदार का फूल तथा धतूरा विष्णु को सदा वर्जित है। कीड़े से युक्त फल भी देवों को नहीं चढ़ाना चाहिए। – ज्ञानमाला
- गणेश को लड्डू प्रिय हैं। गणेशो लड्डुकप्रियः।
- हरित या श्वेत दूर्वा पांच या तीन पत्र से युक्त २१ संख्या में गणेश को चढ़ावें।
- तुलसी के अतिरिक्त सभी पुष्प पत्र गणेश को चढ़ते हैं।
- शिवपूजा में जो पत्र-पुष्प विहित हैं सभी गौरी जी को प्रिय हैं।
- अपामार्ग (चिचिड़ी) गौरी जी को विशेष प्रिय है।
- जितने भी लाल पुष्प हैं वे भगवती को अभीष्ट हैं। सुगंधित सभी श्वेत पुष्प भी भगवती को प्रिय हैं।
- वेला, चमेली, केशर, श्वेत-रक्त फूल, श्वेत कमल, पलाश, तगर, अशोक, चंपा, मौलसिरी, मदार, कुंद, लोध, कनेर, आक, शीशम, अपराजिता (शंखपुष्पी) के फूलों से भी देवी जी की पूजा की जाती है।
- आक (मदार) का निषेध भी मिलता है, **देवीनामर्कमन्दारौ ...... वर्जयेत्।** किन्तु दुर्गा में चढ़ाया जा सकता है।
- शमी, अशोक, कर्णिकार (कनियार या अमलतास) गूमा, दोपहरिया, अगस्त्य, मदन, सिन्दुवार शल्लकी, माधवी आदि लताएं कुश की मंजरियां विल्वपत्र, केवड़ा, कदम्ब, भटकटैया, कमल इत्यादि फूल भगवती को प्रिय हैं।
- ताम्रपात्र में रखा हुआ चन्दन, चर्मपात्र में तीर्थजल या गंगा जल अपवित्र हो जाता है।

- दीपक को दीपक से नहीं जलाना चाहिए, ऐसा करने से दरिद्रता आती है।
- एक हाथ से प्रणाम तथा प्रदक्षिणा न करें।
- दूसरी की धारण की हुयी अंगूठी मंगल कार्य में न धारण करें।
- पूजन में स्त्री को दाहिने, किन्तु अभिषेक, विप्रपादप्रक्षालन, सिन्दूरदान तथा शय्या में बाएं बैठाने का विधान है।
- स्त्रियों के बाएं हाथ में रक्षा बाँधने की परम्परा है, जबकि रक्षा दाहिने हांथ में बांधना चाहिए।
- नित्य होम तथा विवाहादि संस्कार में पूर्णाहुति नहीं करना चाहिए।
- शनि, भौम, बुध तथा रविवार को लक्ष्मी पूजन आरम्भ न करें।
- पौष शुक्ल दशमी, चैत्र शुक्ल पंचमी, श्रावण पूर्णिमा को लक्ष्मी के अनुष्ठान से अभीष्ट की सिद्धि होती है।
- दुर्गा होम, ग्रह शान्ति होम, सत्यनारायण व्रत कथा होम, नित्य-नैमित्तिक होम तथा विवाहादि संस्कारों में किए जाने वाले हवन कर्म में अग्निवास का विचार नहीं किया जाता।
- ब्रह्ममुहूर्त, प्रदोषकाल, प्रदोष पर्व, सोमवार, श्रावणमास, आर्द्रा नक्षत्र, द्वादशी तिथि एवं अन्य शिवजी के विशेष पर्वों में रुद्राभिषेक रुद्रयज्ञारम्भ, महामृत्युञ्जय मंत्रारम्भ के लिए, शिववास का विचार नहीं करना चाहिए। — पर्वदर्शन
- किसी भी देवता की आराधना के लिए उनके दिन, तिथि, नक्षत्र काल, पर्व में पृथक् से मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं होती।

— वत्स संहिता





अथ पूजनोपचारा:

➲ पूजन में प्रयोग की जाने वाली क्रिया विधि को पूजन-उपचार कहते हैं।

त्रयोपचार

गन्धाक्षत पुष्पाणि त्रयो दत्वा समर्चयेत्।।

गन्ध, अक्षत (चावल) तथा फूलमाला से की जाने वाली पूजा त्रयोपचार पूजा है।

पञ्चोपचार

गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यः पञ्चते क्रमात्।।

गन्ध, पुष्प (माला) धूप, दीप तथा नैवेद्य (भोग) समर्पण पञ्चोपचार पूजा मानी जाती है।

दशोपचार

अर्घ्यं पाद्यं चाचमनं स्नानं वस्त्रनिवेदनम्।
गन्धादयो नैवेद्यान्ता उपचारा दशक्रमात्।। (ज्ञान मालायां)

अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य दशोपचार हैं।

षोडशोपचार

आवाहनाऽऽसने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं-वस्त्रोपवीतं च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात्।।१।।
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा।
पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।२।।
'फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पणात्'।

(कर्मप्रदीपे)

आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, जनेऊ, गन्ध, फूल (माला), धूप, दीप, नैवेद्य, पान, प्रदक्षिणा (परिक्रमा) तथा पुष्पांजलि षोडश उपचार के अन्तर्गत आते हैं। साथ में पूजा की सफलता हेतु फल तथा साङ्गता हेतु दक्षिणा भी चढ़ाया जाता है।

त्रिंशदुपचार

अर्घ्यं पाद्यमाचमनं मधुपर्कमुपस्पृशम्।
स्नानं नीराजनं वस्त्रमाचामं चोपवीतकम्।।
पुनराचमनं भूषा दर्पणालोकनं ततः।
गन्धपुष्पे धूपदीपौ नैवेद्यं च ततः क्रमात्।।
पानीयं तोयमाचामं हस्तवासस्ततः परम्।
ताम्बूलमनुलेपं च पुष्पदानं ततः पुनः।।
गीतं वाद्यं तथा नृत्यं स्तुतिं चैव प्रदक्षिणाः।
पुष्पाञ्जलि-नमस्कारौ त्रिंशोपचारमीरिताः।।
(ज्ञानमालायाम्)

अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, आचमन, स्नान, नीराजन, वस्त्र, आचमन, जनेऊ, आचमन, अलंकार, दर्पण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, जल आचमन, करोद्वर्त्तन, पान, अनुलेप, पुनःपुष्प, गीत, वाद्य, नृत्य, स्तुति, प्रदक्षिणा, पुष्पांजलि तथा नमस्कार तीस पूजोपचार कहे गये हैं।

राजोपचार

ततः पञ्चामृताभ्यङ्गमङ्गस्योद्वर्त्तनं तथा।
मधुपर्कं परिमल-द्रव्याणि विविधानि च।।
पादुकान्दोलनादर्शं व्यजनं छत्र चामरे।
वाद्यार्तिक्यं नृत्यगीत-शय्या-राजोपचारकाः।।

अर्थात् षोडशोपचार पूजा के सहित, पञ्चामृतादि से स्नान, चंदनादि द्रव्यों से स्नान (अंग सिंचन) मधुपर्क, नानापरिमलद्रव्य (अबीर गुलाल

सुगंधित द्रव्यादि) पादुका, दोला, व्यजन, छत्र, चामर, वाद्य, आरती, नृत्य, गीत तथा शय्या राजोपचार के अंतर्गत आते हैं।

मानसोपचार

पृथिव्यात्मक गन्ध, आकाशात्मक पुष्प, वाय्वात्मक धूप, तेजसात्मक दीप, अमृतात्मक नैवेद्य और सर्वात्मक पुष्पाञ्जलि को मन से कल्पना मात्र से समर्पित करना ही मानसोपचार पूजा है। तथा उक्त सभी उपचारों को मन से काल्पनिक समर्पण करते हुए देवता का ध्यान ही मानसोपचार पूजन है।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे पूजनोपचाराः समाप्ताः)



पूजन में प्रयोज्य पदार्थ परिचय

पञ्चामृत

गव्यमाज्यं दधिक्षीरं माक्षिकं शर्करान्वितम्।
एकत्र-मिलितं ज्ञेयं दिव्यं पञ्चामृतं परम्।।

(धन्वन्तरि)

गाय का घी, दही, दूध तथा शहद और शक्कर एकत्रित होनेपर दिव्य पञ्चामृत होता है।

पञ्चगव्य

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दध्याज्यं कुशोदकम्।
मंत्रेण मेलितं भूयाद् पञ्चगव्यमघापहम्।।

गाय का मूत्र, गोबर, दूध, दही, घी तथा कुशोदक इन पदार्थों को मंत्र से सम्मिश्रित करने से पापनाशक पञ्चगव्य बनता है।

पञ्चपल्लव

अश्वत्थोदुम्बर-प्लक्ष-चूतन्यग्रोध पल्लवाः।
पञ्चपल्लवमित्युक्तं सर्वकर्मणि शोभनम्।।

आम, पीपल, पाकर, गूलर, बरगद यही पञ्चपल्लव कहे जाते हैं जो कि सभी कर्मों में शुभ बर्द्धक हैं।

पञ्चरत्न

कनकं हीरकं नीलं पद्मरागं च मौक्तिकम्।
अभावे सर्व-रत्नानां हेमं सर्वत्र योजयेत्।।

सोना, हीरा, नीलम्, पुखराज और मोती पञ्चरत्न हैं इनके अभाव में केवल सोना प्रयोग किया जा सकता है। अथवा-

सुवर्णं रजतं मुक्ता लाजावर्त-प्रवालकम्।
रत्नपञ्चकमाख्यातं धर्मशास्त्रे स्फुटं बुधैः।।

सोना, चांदी, मोती, लाजावर्त तथा मूंगा को धर्मशास्त्र में विद्वानों ने पञ्चरत्न की संज्ञा दी है।

सप्तमृत्तिका

अश्वस्थानाद् गजस्थानाद् वल्मीकात् संगमाद् ह्रदात्।
राजद्वाराच्च गोष्ठाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्।।

घुड़सार की, गजशाला की, दीमक की, संगम की, तालाब की, राजद्वार (कचेहरी) की तथा गोशाला की मिट्टी को सप्तमृत्तिका कहते हैं।

सप्तधान्य

यव-धान्य-तिलाः कङ्गुः मुद्ग-चणक-श्यामकाः।
एतानि सप्त-धान्यानि सर्वकार्येषु योजयेत्।।

जवा, धान, तिल, काकुन, मूंग, चना तथा सांवा इन सात धानों को सभी शुभ कार्यों में प्रयुक्त करें।

सर्वौषधि

मुरा-मांसी-वचा-कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।
सठी-चम्पक-मुस्ता च सर्वौषधिगणः स्मृतः।।

मुरा, जटामासी, वच, कुष्ठ, शिलाजीत, हल्दी, दारुहल्दी, सठी, चम्पक और मुस्ता सर्वौषधि कहे गये हैं। सर्वौषधि के अभाव में शतावर का प्रयोग किया जाता है।

मधुरत्रय

दध्याज्यं मधुञ्चैव मधुरत्रयमुच्यते।।

दधि, घी तथा मधु (शहद) को मधुरत्रय अथवा त्रिमधु कहा जाता है। मधुपर्क में मधुरत्रय का प्रयोग होता है।

पञ्चपुष्प

चम्पकाम्र-शमी-पद्म-करवीरं च पञ्चकम्।।

चम्पा, आम, शमी, कमल तथा कनेर – ये पांच प्रकार के पुष्प पञ्चपुष्प कहे जाते हैं।

नवग्रहसमिधा

अर्कः पलाशश्च खदिरः अपामार्गोऽथ पिप्पलः।
उदुम्बरोः शमी-दुर्वा-कुशाश्च समिधः क्रमात्।।

सूर्य-मदार, चन्द्र-पलाश (छिउल), मंगल-खैर, बुध-अपामार्ग (चिचिड़ी), गुरु-पीपल, शुक्र-गूलर, शनि-शमी, राहु-दूर्वा तथा केतु की समिधा कुश है।

अष्टधातु

सोना, चांदी, तांबा, लोहा, शीशा, रांगा, पीतल, कांसा।

अष्टबीज

तिल, जव, मूँग, गेहूँ, नीकर, सांवा, सरसो, धान।

अष्टौषधि

हरताल, मैनशिल, अभ्रक, कुलञ्जन, गेस, सोनामक्खी, चांदीमक्खी, काशीस (काशीष)।

अष्टरत्न

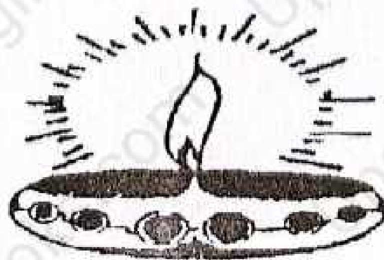
हीरा, मोती, मूंगा, शंख, स्फटिक, पुखराज, नीलम, माणिक।

महौषधि

शमी, पलाश, सारिवा, हल्दी, सरसो, प्रियंगु, कुलिञ्ज, पद्मकेशर, गोरोचन, नागकेशर, सहदेई, सिंधी, व्याघ्री, बला, शंखपुष्पी, वच, सुवर्चना, सिद्धि, वृद्धि, शतावर, सूर्यवर्त्त, अपराजिता, विष्णुक्रांता।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे पूजने प्रयोज्यपदार्थानां परिचयः समाप्तः)





यज्ञानुष्ठान में वेदी स्थापन क्रम

पूर्व

दक्षिण

योगिनी

वास्तु

सप्तघृत मातृका

षोडश मातृका

प्रधान वरुण कलश

गौरी गणेश

प्रधान देवपीठ

आचार्य आसन

यजमानपत्नी आसन

यजमान आसन

दीपक

रुद्र कलश

नवग्रह वेदी

क्षेत्रपाल

उत्तर

पश्चिम

पूजन प्रारम्भ करने से पूर्व ध्यातव्य

- पूजन प्रारम्भ होने के पूर्व पूजन सामग्री व्यवस्थित करके थाली में रख लें।
- जिस स्थान पर पूजन करना हो उसे पवित्र करके यथा स्थान आसन लगावें।
- गंगा जी की बालू या मिट्टी रखकर उस पर अष्टदल कमल की आकृति बनाकर मिट्टी का या धातु का कलश रखें।
- कलश में रोली से स्वस्तिक बनावें एवं उसके गले में कलावा बांध दें।
- कलश के ऊपर एक प्याले या कटोरे में धान्य या चावल भरकर रखें तथा उसके ऊपर नारियल लाल वस्त्र में लपेटकर या कलावा लपेटकर रखें।
- कलश के सामने आटा हल्दी अबीरादि से अष्टदलाकृति बनाकर किसी प्याले में पीला लाल चावल भरकर उसके ऊपर भी हल्दी से अष्टदल बनाकर गाय के गोबर की गौरी एवं सुपाड़ी में कलावा लपेटकर गणेशजी बनाकर रखें, गौरी जी में भी कलावा लपेट दें।
- कलश के दाहिनी ओर ईशान कोण में रोली या चावल से षट्कोण बनाकर घी का दीपक जलाकर रखें।
- कलश के बायीं ओर षोडश मातृका एवं षोडशमातृका के बायें या पीछे सप्तघृतमातृका रखें।
- पूजन की सामग्री एवं पूजन के लिए जलपात्र यजमान के दाहिनी ओर रखें।
- कलश से दक्षिण ईशान कोण में नवग्रह वेदी रखें।

- जिन देवता का मुख्य रूप से पूजन होना हो उनके लिए पूर्व दिशा में मध्य में प्रधान वेदी (सर्वतोभद्र अथवा लिङ्गतोभद्र के ऊपर मध्य में एक कलश स्थापितकर, कलश के ऊपर सिंहासन में प्रधान देवता की स्वर्ण प्रतिमा या उपलब्ध मूर्ति स्थापित करें।
- पूजा में कुश निर्मित या ऊन का आसन प्रयोग करें। किन्तु स्त्रियों के लिए कुशासन उचित नहीं है।
- पूजन में तांबे या कांसे आदि धातु के बर्तन का प्रयोग करें। किन्तु दूध, दही रखने में तांबे का प्रयोग वर्जित है।
- **पञ्चामृत** – गायका दूध, दही, घी, शहद एवं शक्कर मिलाकर पंचामृत बनता है, पञ्चामृत में केवल इन्हीं पांच द्रव्यों को मिलावे, पंचमेवा का प्रयोग पृथक् रूप से नैवेद्य में किया जाना चाहिए।
- पूजन में उतावलापन न करें श्रद्धा से भगवान की पूजा करें।
- आचार्य के निर्देशानुसार पूजन करने से ही फल की प्राप्ति होती है।
- किसी योग्य वैदिक एवं तपस्वी ब्राह्मण को ही आचार्य बनाना चाहिए।

❑❑



कर्मकाण्डप्रबोधः
प्रथमो भागः



।।श्री गणेशाय नमः।। ।।श्री गुरुभ्यो नमः।। ।।श्री सरस्वत्यै नमः।।
।।श्री वेदपुरुषाय नमः।।

अथ मंगलाचरणम्

ॐ गणनान्त्वा गणपति ॸ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ॸ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ॸ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।१।।

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।२।।

ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ २ अजस्त्रम्। तस्य पूषा प्रसवे यातिविद्वान् संपश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।।३।।

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः। शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।४।।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ॸ सुरे स्वाहा।।५।।

(इति मंगलाचरणम्।)



श्रीगणपति-अथर्वशीर्षम्

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः। भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैःस्तुष्टुवा गुं सस्तनूभिः। व्यशेमहिदेवहितं यदायुः।
स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः। स्वस्तिनो बृहस्तपतिर्दधातु।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि। त्वमेव केवलं कर्त्तासि। त्वमेव केवलं धर्त्तासि। त्वमेव केवलं हर्त्तासि। त्वमेव सर्वं खल्विदं ब्रह्मासि। त्वं साक्षादात्मासि नित्यम्। ऋतं वच्मि। सत्यं वच्मि। अव त्वं माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमवशिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अवचोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो मां पाहि पाहि समन्तात्। त्वं वाङ्मयस्त्वं चिन्मयः। त्वमानन्दमयस्त्वं ब्रह्ममयः। त्वं सच्चिदानन्दाद्वितीयोऽसि। त्वं प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वं ज्ञानमयो विज्ञानमयोऽसि। सर्वं जगदिदं त्वत्तो जायते। सर्वं जगदिदं त्वत्तस्तिष्ठति। सर्वं जगदिदं त्वयि लयमेष्यति। सर्वं जगदिदं त्वयि प्रत्येति। त्वं भूमिरापोऽनलोऽनिलो नभः। त्वं चत्वारि वाक् पदानि। त्वं गुणत्रयातीतः। त्वमवस्था-त्रयातीतः। त्वं देहत्रयातीतः।। त्वं कालत्रयातीतः। त्वं मूलाधार स्थितोऽसि नित्यम्। त्वं शक्ति-त्रयात्मकः। त्वां योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

गणादीन् पूर्वमुच्चार्य वर्णादींस्तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दु लसितम्। तारेण रुद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चान्त्यरूपम्। बिन्दुरुत्तररूपम्। नादः सन्धानम्। स गुं हितासन्धिः। सैषा गणेशविद्या। गणक ऋषिः। निचृद्

गायत्री छन्दः। गणपतिर्देवता। ॐ गं गणपतये नमः। एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्। एकदन्तं चतुर्हस्तं पाशमङ्कुश-धारिणम्। रदं च वरदं हस्तैर्बिभ्राणं मूषकध्वजम्।। रक्तं लम्बोदरं शूर्पकर्णकं रक्तवाससम्। रक्त-गन्धानुलिप्ताङ्गं रक्तपुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानुकम्पिनं देवं जगत्कारणमच्युतम्।। आविर्भूतं च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्। एवं ध्यायति यो नित्यं स योगी योगिनां वरः। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथ पतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैक-दन्ताय विघ्न-विनाशिने शिवसुताय श्रीवरद-मूर्त्तये नमः।।

एतदथर्वशीर्षं योऽधीते। स ब्रह्मभूयाय कल्पते। स सर्वविघ्नैर्न बाध्यते। स सर्वत्र गुणमेधते। स पञ्च-महापापात् प्रमुच्यते। सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति। सायं प्रातः प्रयुञ्जानो अपापो भवति। सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नो भवति। धर्माऽर्थ काम मोक्षं च विन्दति। इदमथर्वशीर्षमशिष्याय न देयम्। यो यदि मोहाद्दास्यति स पापीयान् भवति। सहस्रावर्तनाद्यं यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिमभिषिञ्चति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्यामनश्नञ्जपति स विद्यावान् भवति। इत्यथर्वण-वाक्यम्। ब्रह्माद्यावरणं विद्यान्न विभेति कदाचनेति। योदूर्वाङ्कुरैर्यजति। स वै श्रवणोपमो भवति। यो लाजैर्यजति स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक-सहस्रेण यजति। स वाञ्छित-फलमवाप्नोति। यः साज्य-समिद्भिर्यजति। स सर्वं लभते स सर्वं लभते। अष्टौ ब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्यां प्रतिमा-सन्निधौ वा जप्त्वा। सिद्धमन्त्रो भवति। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। महाप्रत्यवायात् प्रमुच्यते। स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति। य एवं वेद। इत्युपनिषत्।

सहना ववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषा-वहै।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

❑❑

।। श्री गणेशाय नमः ।।

अथ पूजन विधिः

प्रातःकाल नित्यक्रिया स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्वाभिमुख शुद्ध आसन में बैठें तथा अपने दायें पत्नी को बैठाकर अपने ऊपर जल सिंचन करें।

पवित्रीकरण-

ॐ पुनन्तु मा देव जनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वाभूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

आचमन- (दाहिने हाथ में जल लेकर ऋषि तीर्थ से (हथेली के मूल भाग से) तीन बार जल पी लेवें)

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः। (हाथ शुद्ध कर लें)

पवित्रीधारण- (दांये हाथ की अनामिका में दो कुश की तथा बायें हाथ की अनामिका में तीन कुश की पवित्री धारण करें।)

ॐ पवित्त्रे स्त्थो व्वैष्ण्णव्यौ सवितुर्व्वःप्प्रसव ऽउत्त्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्त्रेण सूर्य्यस्य रश्म्मिभिः। तस्य ते पवित्त्रपते पवित्त्रपूतस्य यत्त्कामः पुने तच्छकेयम्।।

कुशैः निर्मितां रम्यां पवित्रां देवप्रीतिदाम् ।
प्रशमनायासुरीं शक्तिं पवित्रीं धारयाम्यहम् ।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु। पुण्डरीकाक्षः पुनातु।।

आसनशुद्धि-

(आसन पर जल छिड़कें अथवा आसन का दोनों हाथ से स्पर्श करें)

ॐ स्योना पृथिविनो भवान्नृक्षरा निवेशनी।
यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः।।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

तिलक धारण- (रोली अक्षत से यजमान के माथे पर तिलक लगावें।)

ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूया स गुं सुवर्च्चा मुखेन।
सुश्रुत्कर्ण्णाभ्यांम्भूयासम् ।।

ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।

शिखाबन्धन-

(शिखा बाँधे, यदि शिखा न हो तो शिखा का स्पर्श ही कर लें।)

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान्नुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे।।

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजो बृद्धिं कुरुष्व मे।।

स्वस्तिवाचनम् – यजमान हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेशजी का ध्यान करते हुए ब्राह्मणों द्वारा किये जा रहे स्वस्ति पाठ को सुने।

ॐ आ नो भद्द्राः क्रतवो यन्तु व्विश्श्वतोऽदब्धासो ऽअपरीतास ऽउद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधेऽअसन्न प्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।१।।

देवानां भद्द्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना गुं रातिरभि नो निवर्त्तताम् । देवाना गुं सख्यमुपसेदिमा व्व्यं देवा न ऽआयुः प्प्रतिरन्तु जीवसे।।२।।

तान्पूर्व्वया निविदा हूमहे व्वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षमस्रिधम्। अर्य्यमणं व्वरुण गुं सोममश्श्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्क्करत्।।३।।

तन्नो व्वातो मयोभु व्वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्श्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।४।।

तमीशानञ्जगतस्तस्त्थुषस्प्पतिं धियञ्जिन्न्वमवसे हूमहे व्व्यम्। पूषा नो यथा व्वेद सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।।

स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्प्पतिर्द्दधातु।।६।।

पृषदश्श्वामरुतः पृश्निमातरः शुभं य्यावानो व्विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो व्विश्श्वे नो देवाऽअवसागमन्निह।।७।।

भद्द्रं कर्ण्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा गुं सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।८।।

शतमिन्नु शरदो ऽअन्ति देवा यत्त्रा नश्चक्क्रा जरसं तनूनाम्। पुत्त्रासो यत्त्र पितरो भवन्ति मा नो मद्ध्यारीरिषतायुर्ग्गन्तोः।।९।।

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पिता स पुत्त्रः। व्विश्श्वे देवा ऽअदितिः पञ्चजना ऽअदितिर्ज्जातमदितिर्ज्जनित्वम् ।।१०।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः प्पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वे देवाः शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिः सर्व्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।११।।

यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरु प्रजाब्भ्योऽभयन्नः पशुब्भ्यः।।१२।।

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्द्रं३ तन्न आसुव।।१३।। सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।।

(अक्षत पुष्प गणेश जी के सामने चढ़ा दें)

➲ बाएं हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से गणेश गौरी के सामने चढ़ावें।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नमः। उमा-महेश्वराभ्यां नमः। वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शची-पुरन्दराभ्यां नमः। मातृ-पितृ-चरणकमलेभ्यो नमः। इष्ट-देवताभ्यो नमः। कुल-देवताभ्यो नमः। ग्राम-देवताभ्यो नमः। वास्तु-देवताभ्यो नमः। स्थान-देवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। एतत् कर्मप्रधान-देवताभ्यो नमः। सिद्धि-बुद्धि-सहिताय श्रीमन्महा-गणाधिपतये नमः।।

मङ्गल-श्लोकपाठः

अक्षत पुष्प लेकर मंगलपाठ पूर्वक गणेशादि देवों का स्मरण करें।

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।१।।

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।२।।

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।३।।

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोप-शान्तये।।४।।

अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्न-हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।५।।

सर्वमङ्गल-माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते।।६।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।।७।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।८।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवर-श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।९।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।१०।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।११।।
स्मृतेः सकल-कल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।१२।।
सर्वेष्वारम्भ-कार्येषु त्रयस्त्रि-भुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान-जनार्दनाः।।१३।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणि-कर्णिकाम्।।१४।।
त्रिवेणीं माधवं सोमं भरद्वाजं च वासुकीम्।
वन्दे अक्षयवटं शेषं प्रयागं तीर्थ-नायकम्।।१५।।
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।१६।।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।

(अक्षत पुष्प गणेश जी में चढ़ा देवें)

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे मंगलश्लोक पाठः समाप्तः)

अथ प्रधान सङ्कल्पः

(यजमान दाहिने हाथ में अक्षत पुष्प जल द्रव्य कुशादि लेकर संकल्प करे।)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्‌भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवश्वत-मन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमे युगे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे (प्रयाग/काशी/क्षेत्रे) विक्रमशके बौद्धावतारे अमुकनाम-संवत्सरे अमुक अयने श्री सूर्ये अमुक-ऋतौ महामाङ्गल्यप्रद-मासोत्तमे अमुक-मासे अमुक-पक्षे अमुक-तिथौ अमुक-वासरे अमुक-राशिस्थिते चन्द्रे अमुक-राशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुकराशिस्थिते श्रीदेवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा-राशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः[१] अमुकशर्मा (वर्मा/गुप्तः) ऽहं श्रुति स्मृति-पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थं दैहिक-दैविक-भौतिक-तापत्रय विनाशाय धर्मार्थ-काम-मोक्ष पुरुषार्थ-चतुष्टय-सिद्ध्यर्थम्, मम जन्म राशि-वर्ष-गोचर दशा-अन्तर्दशा प्रत्यन्तरदशा-सूक्ष्मदशा योगिन्यादि दशा मध्ये च ये केचन् सूर्यादि अरिष्टप्रदाः ग्रहाः तेषां सकलारिष्ट वारणपूर्वकं शुभता-संसिद्ध्यर्थं, ग्रहकृता-राजकृता-शत्रुकृता च पीडा नाशार्थं सर्वविध-भयापमृत्युरोगादि-दूरीकरणाय सर्वत्र सुखशान्ति प्राप्तये च, मम समस्त-पापक्षयपूर्वकं दीर्घायुर्विपुल-धन-धान्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्मी-बहुकीर्तिलाभ - शत्रु-पराजय-सदभीष्ट-सिद्ध्यर्थं मनोभिलषितं समस्त-कामना-सिद्ध्यर्थञ्च सपरिवारस्य सर्वविध-कल्याणार्थं श्री

अमुक देवता-कृपा-प्रसाद-सिद्ध्यर्थं प्रसन्नार्थञ्च ब्राह्मण द्वारा अमुक मन्त्रस्य/स्तोत्रस्य अमुक संख्याकं जपं/पाठं कारयिष्ये तदङ्गत्वेन वास्तुयोगिनी -क्षेत्रपाल-नवग्रह-सर्वतोभद्र/ लिङ्गतोभद्र मण्डल देवानां आवाहन स्थापन पूजन पूर्वकं प्रधान-वेद्यामुपरि सुवर्ण-रजत-ताम्रमयीं वा अमुक देवस्य प्रतिमां अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा-पूर्वकं यथोपचार-पूजनं तत्रादौ च निर्विघ्नतायै गणपत्यादि-पञ्चाङ्ग-देवानां आवाहनं स्थापनं पूजनं पुण्याह-वाचनं दिग्रक्षणं साचार्यस्य ब्राह्मणानां वरणञ्च करिष्ये। (संकल्प द्रव्यादि गणेश जी के सामने रख देवें।)

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे प्रधान-संकल्पः समाप्तः)

भूमिपूजनम्-

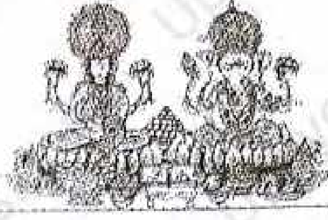
ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशिनी।
यच्छानः शर्म्म सप्रथाः।।
ॐ भूभुर्वः स्वः आधार शक्त्यै पृथिव्यै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

(भूमि पूजन केवल गृहारम्भ, मण्डपारम्भ, जलाशयारम्भ, देवालयारम्भ इत्यादि कार्यों में किया जाता है। किन्तु सम्प्रति सभी पूजनादि में भूमि पूजन होता है अतः उक्त मंत्र दिया गया है।)

दीपपूजनम्- (ईशान कोण में स्थापित घृत दीप का पूजन करे।)

भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दीप देवतायै नमः।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

□□



अथ श्रीगणेशाऽम्बिकापूजनम्

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम् ।।

हे हेरम्ब त्वमेह्येहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।१।।

नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुश-परश्वधैः।।२।।

आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।३।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्

**ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्।
ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पील-वासिनीम्।।**

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा – (गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं

तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स ऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम् – (गणेश गौरी को आसन के लिए पुष्प समर्पित करें)

ॐ पुरुष ऽएवेद गुं सर्व्वं य्यद्भूतं य्यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्त्व स्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।

बिचित्र-रत्न-खचितं दिव्यास्तरण-संयुतम्।
स्वर्णसिंहासनं चारु गृह्णीष्व सुरपूजित।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि।

पाद्यम् – (पाद्य के लिए एक आचमनी जल पैरों के पास छोड़ दें।)

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्श्च पूरुषः।
पादोऽस्य व्विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।

सर्वतीर्थ-समुद्भूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।
विघ्नराज! गृहाणेदं जगद्धात्रि! प्रसीद च।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यः – (किसी पात्र में जल गन्ध अक्षत पुष्प फल लेकर अर्घ्य देवें)

ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो व्विष्ष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि।।

गणाध्यक्ष! नमस्तेऽस्तु गृहाण जगदम्बिके!।
अर्घ्यं च फलसंयुक्तं गन्धमाल्याक्षतैर्युतम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम् – (तीन आचमनी जल मुख के सामने गिरावे)

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो ऽअधि पूरुषः।
स जातो ऽअत्त्य रिच्च्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।

विनायक! नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित!।
गङ्गोदकेन देवेश! कुरुष्वाचमनं शिवे!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि।

स्नानम् – (जल से स्नान करायें)

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानम् – (पञ्चामृत से स्नान करावे)

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नानम् – (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्श्विनाः
श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा
ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्न्याः।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रम् – (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि। (वस्त्र चढ़ाने के बाद दो आचमनी जल गिरावें।)

यज्ञोपवीतम् – (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।
आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्येभ्यस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।
यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि। जनेऊ के बाद भी दो आचमनी जल गिरावें।

उपवस्त्रम् – (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।
व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूप गुं संव्ययस्व विभावसो।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि।। उपवस्त्र के बाद दो आचमनी जल गिरावे

चन्दनम् – (चंदन या रोली (कुंकुम) चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः – (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावे)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि (माला) – (सुगंधित फूल तथा माला चढ़ावे।)

**ॐ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।**

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

दूर्वा – (गणेश जी को कोमल दूर्वा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें।)

**ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।**

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूरम् – (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्व्वाः।
घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्न्वमानः।।

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीरादि परिमलद्रव्यम् – (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावे।)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।
हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्श्वतः।।

नाना–परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।
अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम्– (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात् ।।

नानासुगन्ध–पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।
सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

धूपम् – (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्स्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्व्यं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्ट्टतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्योज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।
(हस्तप्रक्षालनम्।)

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान्न निवेदित करें)

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्त्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। आचमनीयं समर्पयामि मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

करोद्वर्त्तनम् – (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम् – (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावे)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत्।
व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्म्म ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा – (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ–गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।
अनन्त–पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा – (''एकाचण्ड्याः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके''– के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा गुं सहस्र-योजनेऽव धन्नवानि तन्मसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि–फलं ददाति।
तां सर्वपापक्षय–हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः – (हाथ में पुष्प लेकर मंत्र पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवें।)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

विशेषार्घ्यम् – (विशेषार्घ्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्घ्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्घ्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।१।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद!।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।२।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

गणेश प्रार्थना – (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुति–यज्ञ–विभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।१।।

भक्तार्ति–नाशनपराय गणेश्वराय,
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय,
भक्त–प्रसन्न–वरदाय नमो नमस्ते।।२।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।३।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे ।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।४।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।५।।
त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्या-प्रदेत्यघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,
तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।६।।

गौरी प्रार्थना

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।१।।
मेधासि देवि विदिताखिल शास्त्रसारा,
दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौर सङ्गा।
श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,
गौरी त्वमेव शशिमौलि- कृतप्रतिष्ठा।।२।।
मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।
स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम् ।।२।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

❑❑

अथ कलशस्थापनं-पूजनञ्च

भूमिस्पर्शः – (जहाँ कलश स्थापित करना हो वहाँ पर शुद्ध मिट्टी रखकर रोली हल्दी से अष्टदल कमल बनाकर मिट्टी का स्पर्श करें।)

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं य्यज्ञं मिमिक्षताम्।
पिपृतान्नो भरीमभिः।।

सप्तधान्य विकिरणम् – (मिट्टी के ऊपर सप्तधान्य (अथवा जव) विकीर्ण करे)

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा।
यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्त गुं राजन्पारयामसि।।

कलशस्थापनम् – (धान्य के ऊपर कलश रखें)

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा व्विशताद्द्रयिः।।

कलशे जलपूरणम् – (कलश में जल भरें)

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्क्कम्भसर्ज्जनी स्त्थो व्वरुणस्य ऽऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद।।

कलशे गन्ध-प्रक्षेपः – (कलश में गन्ध चंदन छोड़े)

ॐ त्वाङ्गन्धर्व्वाऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

सर्वौषधि प्रक्षेपः– (कलश में सर्वौषधि डाले या अभाव में सतावर डाले।)

ॐ या ऽओषधीःपूर्व्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रियुगं पुरा।
मनैनु बब्भ्रूणामह गुं शतन्धामानि सप्त च।।

कलशे दूर्वा प्रक्षेपः– (कलश में दूब डालें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

कलशे कुश प्रक्षेपः– (कलश में कुशा डालें)

ॐ पवित्त्रे स्थो व्वैष्णव्व्यौ सवितुर्व्वः प्प्रसव ऽउत्त्पुनाम्म्यच्छिद्द्रेण पवित्त्रेण सूर्य्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्त्रपते पवित्त्रपूतस्य यत्त्कामः पुने तच्छकेयम्।।

कलशे सप्तमृत्तिका प्रक्षेपः- (कलश में सप्तमृत्तिका या गंगा की मिट्टी डालें)

ॐ स्योना प्पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म्म सप्प्रथाः।।

कलशे पूगीफल प्रक्षेपः – (कलश में सुपाड़ी डालें)

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्श्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व गुं हसः।।

कलशे पञ्चरत्न प्रक्षेपः- (कलश में पंचरत्न डालें)

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्व्यान्न्यक्रमीत।
दधद्रत्नानि दाशुषे।।

कलशे द्रव्य प्रक्षेपः– (कलश में स्वर्ण या दक्षिणा छोड़ें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्ग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

कलशे पञ्च पल्लव प्रक्षेपः- (कलश में पञ्च पल्लव या अभाव में आम्र का पल्लव रखें)

ॐ अश्वत्त्थे वो निषदनं पर्ण्णे वो व्वसतिष्क्कृता।
गोभाज ऽइत्त्किलासथ यत्त्सनवथ पूरुषम्।।

कलशकण्ठे वस्त्रावेष्टनम् – (कलश को दो वस्त्रों से वेष्टित करें या उसके कंठ में रक्षासूत्र बाधें)

ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।
व्वासोऽअग्ग्ने व्विश्श्वरूप गुं संव्व्ययस्व व्विभावसो।।

कलशे पूर्णपात्र स्थापनम्- (कलश के ऊपर धान्य से पूर्ण भरा हुआ पात्र रखे)

ॐ पूर्ण्णा दर्व्वि परापत सुपूर्ण्णा पुनरापत।
व्वस्नेव व्विक्रीणावहा ऽइषमूर्ज्जं गुं शतक्क्रतो।।

नारिकेल स्थापनम्- (पूर्णपात्र के ऊपर नारियल लालवस्त्र से आवेष्टित करके रखें)

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व गुं हसः।।

कलशे वरुण आवाहनम् - (हाथ में अक्षत पुष्प लेकर वरुण का ध्यान करते हुए आवाहन करें।)

ॐ तत्त्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश गुं स मा न ऽआयुः प्प्रमोषीः।।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। ॐ अपाम्पतये वरुणाय नमः।

अक्षत पुष्प कलश के ऊपर चढ़ा देवें।

कलशे गङ्गाद्यावाहनम्- (कलश में अक्षत छोड़ते हुए गंगादि देवताओं का आवाहन करें)

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।१।।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।२।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।३।।
कावेरी कृष्णवेणा च गङ्गा चैव महानदी।
ताप्ती गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।४।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।५।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।६।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।७।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।।८।।

कलशे देवानां प्रतिष्ठा – (कलश का स्पर्श करके अक्षत छोड़ें)

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्श्वेदेवा स ऽइह मादयन्तामोँ३प्प्रतिष्ठ।। कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः।

गणेश पूजन में प्रयुक्त वैदिक मंत्रों से क्रमशः षोडश उपचारों से कलश का पूजन करें

आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं

समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये पानीयम् उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। आर्तिक्यं समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारं समर्पयामि।

कलश-प्रार्थना

देव - दानव - संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।।१।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।२।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः स-पैतृकाः।।३।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा।।४।।

नमो नमस्ते स्फटिक-प्रभाय सुश्वेत-हाराय सुमङ्गलाय।
सुपाश-हस्ताय झषासनाय जलाधि-नाथाय नमो नमस्ते।।५।।

हांथ में जल लेकर कलश के सामने गिरावें-

अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

।। इति कर्मकाण्डप्रबोधे कलशस्थापनं पूजनञ्च समाप्तम् ।।





अथ पुण्याह-वाचनम्

➲ एकं पुण्याहवाचन-धातु-कलशं पृथक्त्वेन पूर्वविधिना संस्थाप्य षोडशोपचारैः पूजनं कृत्वा प्रार्थयेत्। (वरुण कलश के अतिरिक्त एक अलग से धातु कलश सामने रखकर विधिपूर्वक कलश स्थापन विधि से पूर्ववत् स्थापित कर षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें)

प्रार्थना –

नमो नमस्ते स्फटिक-प्रभाय सुश्वेत-हाराय सुमङ्गलाय।
सुपाश-हस्ताय झषासनाय जलाधिनाथय नमो नमस्ते।।१।।
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीव-नायक।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधो भव।।२।।

➲ **यजमानः वज्रासने उपविश्य, कलशं प्रणम्य मुकुलाञ्जलौ पुण्याहवाचन-कलशमादाय वारत्रयमभिवन्द्य प्रार्थयेत्।** (यजमान वज्रासन में बैठकर कलश को प्रणाम करके कमलवत् हाथों में कलश लेकर तीन बार माथे लगावे)

यजमानः–

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।
तेनाऽऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

विप्राः – **अस्तु दीर्घमायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।। अस्तु दीर्घमायुः।।**
ॐ त्रीणि पदा व्विचक्क्रमे व्विष्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः।
अतो धर्म्माणि धारयन्।।

यजमानः– **दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च।**
तेनाऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

विप्राः – **अस्तुदीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः।**
ॐ त्रीणि पदा व्विचक्क्रमे व्विष्ण्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

यजमानः– **दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णु पदानि च। तेनाऽऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।**

विप्राः – **अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः। अस्तु दीर्घमायुः।।**
ॐ त्रीणि पदा व्विचक्क्रमे व्विष्ण्णुर्ग्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

इस प्रकार तीनों आशिषों के बाद कलश को यथा स्थान रख देवें।

यजमानः– (ब्राह्मणों को जल देवे) **ॐ शिवा आपः सन्तु।**

विप्राः – **ॐ सन्तु शिवा आपः। सन्तु शिवा आपः। सन्तु शिवा आपः।।**

यजमानः– (ब्राह्मणों को पुष्प देवे) **ॐ सौमनस्यमस्तु।**

विप्राः – **ॐ अस्तु सौमनस्यम्। अस्तु सौमनस्यम्। अस्तु सौमनस्यम्।**

यजमानः– (ब्राह्मणों को अक्षत देवे) **ॐ अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु।**

विप्राः – **ॐ अस्त्वक्षतमरिष्टं च। अस्त्वक्षतमरिष्टं च। अस्त्वक्षतमरिष्टं च।**

यजमानः– (ब्राह्मणों को गन्ध प्रदान करे) **ॐ गन्धाः पान्तु।**

विप्राः – **ॐ सौमङ्गल्यं चाऽस्तु। सौमङ्गल्यं चाऽस्तु। सौमङ्गल्यं चाऽस्तु।**

यजमानः– (ब्राह्मणों को अक्षत देवे) **ॐ अक्षताः पान्तु।**

विप्राः – **ॐ आयुष्यमस्तु। आयुष्यमस्तु। आयुष्यमस्तु।**

यजमानः– (ब्राह्मणों को पुष्प देवे) ॐ पुष्पाणि पान्तु।

विप्राः – ॐ सौश्रियमस्तु। सौश्रियमस्तु। सौश्रियमस्तु।।

यजमानः– (ब्राह्मणों को ताम्बूल देवे) ॐ सफल ताम्बूलानि पान्तु।

विप्राः – ॐ ऐश्वर्यमस्तु। ऐश्वर्यमस्तु। ऐश्वर्यमस्तु।।

यजमानः– (ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे) ॐ दक्षिणाः पान्तु

विप्राः – ॐ बहुदेयं चास्तु। बहुदेयं चास्तु। बहुदेयं चास्तु।।

यजमानः– (ब्राह्मणों को पुनः जल देवे) ॐ पुनरापः पान्तु

विप्राः – ॐ स्वर्चितमस्तु। ॐ स्वर्चितमस्तु। ॐ स्वर्चितमस्तु।

यजमानः– (करौ संयोज्य) ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीः यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।।

विप्राः – ॐ तथाऽस्तु। तथाऽस्तु। तथाऽस्तु।

यजमानः – (हाथ जोड़कर) यं कृत्वा सर्व वेद-यज्ञ-क्रियाकरण-कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा ऋग्-यजुः सामऽऽथर्वाऽशीर्वचनं बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

विप्राः – ॐ वाच्यताम्। वाच्यताम्। वाच्यताम्।।

यजमानः (हाथ जोड़कर)– ॐ व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दान-विशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्माणानां मनः समाधीयताम्।

ब्राह्मणाः – ॐ समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः। समाहित-मनसः स्मः।

यजमानः – ॐ प्रसीदन्तु भवन्तः।

ब्राहमणाः – ॐ प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः। प्रसन्नाः स्मः।

पुण्याह वाचन कलशं उत्थाप्य दक्षिणपात्रे एकस्मिन कांस्यपात्रे शरावे वा (दक्षिणभागे संस्थापिते पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमानः– ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ॐ इष्टसम्पदस्तु।

बामपात्रे– (बाम भागे संस्थापिते शरावे जलं पातयेत्)–

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

(दक्षिण पात्रे)– ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु-पुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

बामपात्रे- ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः।

दक्षिण पात्रे- ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽङ्गारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

➢ कलश यथा स्थान में रखकर हाथ जोड़कर कहें।

यजमानः– एतत्कल्याण-युक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मणाः– ॐ वाच्यताम्। वाच्यताम्। वाच्यताम्।।

यजमानः– ॐ ब्राह्मं पुण्यं महद्यच्च सृष्ट्युत्पादन-कारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य। अमुक[1] कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।।

ब्राह्मणाः – ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्। ॐ पुण्याहम्।
ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु व्विश्श्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमानः– ॐ पृथिव्यामुद्धृतायां तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्ध-गन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः– ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्। ॐ कल्याणम्।
ॐ यथे मां व्वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्म राजन्याभ्या गुं शूद्राय चार्य्याय च स्वाय-चारणाय च।
प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं।
मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।।

यजमानः– ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

---

१. अमुक के स्थान में जो अनुष्ठान कर रहे हैं उसका उच्चारण करें।

ब्राह्मणाः– ॐ कर्मत्रृध्यताम्। ॐ कर्मत्रृध्यताम्। ॐ कर्मत्रृध्यताम्।।

ॐ सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता ऽअभूम।
दिवं पृथिव्या ऽअध्यारुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमानः– स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या पुण्य-कल्याण-वृद्धिदा।
विनायक-प्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः– ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। ॐ आयुष्मते स्वस्ति।।

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमानः– ॐ समुद्र-मथनाज्जाता जगदानन्द-कारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मया क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मणाः– ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः। ॐ अस्तु श्रीः।।

ॐ श्रीश्श्च ते लक्ष्मीश्श्च पत्न्या-वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म ऽइषाण सर्व्वलोकं म ऽइषाण।।

दक्षिणा संकल्प (कुशाक्षत जल द्रव्य लेकर)

हरिः ॐ पूर्वोच्चारित ग्रहगुणगणविशेषण विशिष्टायां गोत्रः ..... नामाहं कृतस्य पुण्याहवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणामिमां विभज्य दातुमुत्सृजे।

➲ वामपात्र को नापित या किसी सेवक द्वारा मण्डप या घर से बाहर फेंकवा देवे।

अभिषेक: (पुण्याह वाचन के समय जो जल दक्षिण पात्र में गिराया गया है उसी जल से अविधुर चार ब्राह्मण यजमान पत्नी को यजमान से बांए बैठाकर अभिषेक करें।)

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिः सर्व्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। अमृताभिषेकोऽस्तु।

➲ यजमान का अभिषेक करके माथे में तिलक लगावे।

➲ यजमान हांथ में जल लेकर- '**ॐ पुण्याह वाचन कर्माङ्ग देवता प्रीयतान्न मम**' कहते हुए जल सामने गिरा देवे।

(इति कर्मकाण्ड-प्रबोधे पुण्याहवाचनम् समाप्तम्)



अथ ब्राह्मण-पूजनं वरणञ्च

➲ यजमान चन्दन, कुंकुम, अक्षत तथा पुष्पमाला लेकर क्रमशः आचार्य से प्रारम्भ करके सभी ब्राह्मणों को तिलक लगाकर माला पहनाते हुए पूजन करें।

ब्राह्मण पूजन मन्त्रः

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर ऽइषव्योति व्याधी महारथो जायतान्दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः। सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान्निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ।।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षःस्थले कौस्तुभम्।
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम्।।
सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपाल चूडामणिः।।

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।।

➲ ब्राह्मण पूजन के पश्चात् अपने आसन पर बैठकर हाथ में कुश, अक्षत, जल, पुष्प, वस्त्र, आसन, माला, खडाऊँ, पंचपात्र, दक्षिणा इत्यादि वरण द्रव्य लेकर वरण संकल्प करके सभी ब्राह्मणों को प्रदान करे।

वरण संकल्पः

देशकालौ संकीर्त्य........गोत्रः.......नामाहं करिष्यमाण अमुक[१] मन्त्रस्य संकल्पित संख्या परिमितं जपार्थं (अमुक स्तोत्रस्य पाठार्थं वा) यथा यथा गोत्रोत्पन्नान् नाना नामधेयान् ब्राह्मणान् हस्तस्थापितेभिर्वरणद्रव्यैः युष्मान् वृणे।

(एक ब्राह्मण के वरण के लिए- **गोत्रोत्पन्नं यथा नामधेयं अमुक शर्माणं यथा वरण द्रव्यैः त्वामहं वृणे**)

आचार्य वरणम्

अस्मिन् कर्मणि शास्त्रविधिना कर्मसंपादनाय अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक नामधेयमाचार्यं आचार्य-कर्म-कर्तृत्वेन एभिर्वरण-द्रव्यैस्त्वामहं वृणे।

➲ वरण द्रव्य ग्रहण करके आचार्य एवं ब्राह्मणगण **वृतोऽस्मि** यह प्रतिवचन अवश्य बोलें।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे ब्राह्मणपूजनं वरणञ्च समाप्तम्)

❑❑

अथ दिग् रक्षणम्

➲ किसी प्याले या दोने में पीली सरसो लेकर बाएं हाथ में रखकर दाहिने हाथ से ढककर मंत्र पढें –

१. अमुक के स्थान में जो अनुष्ठान कर रहे हों उसका उच्चारण करें।

ॐ यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।१।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता चात्र संस्थिताः।
ये सन्ति विघ्नकर्त्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।२।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन शान्ति-कर्म समारभे।।३।।
भूतानि राक्षसा वाऽपि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यप गच्छन्तु शान्ति (यज्ञ) कर्मकरोम्यहम् ।।४।।

➲ उक्त मंत्र पाठोपरान्त दाहिने हाथ से पीली सरसो के दानों को क्रमशः पूर्वादि दस दिशाओं में प्रक्षेपित करें –

ॐ पूर्वे रक्षतु वाराहः आग्नेयां गरुडध्वजः।
दक्षिणे पद्मनाभस्तु नैर्ऋत्यां मधुसूदनः।।१।।
पश्चिमे चैव गोविन्दो वायव्यां तु जनार्दनः।
उत्तरे श्रीपती रक्षेत् ऐशान्यां हि महेश्वरः।।२।।
ऊर्ध्वं रक्षतु धाता वो ह्यधोऽनन्तश्च रक्षतु।
एवं दशदिशो रक्षेत् वासुदेवो जनार्दनः।।३।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे दिग्रक्षणम् समाप्तम्)

अथायुष्य-मंत्र-पाठः

➲ दिग्-रक्षण के बाद आचार्य यजमान के हांथ में रक्षा सूत्र बांधे तथा ब्राह्मण आयुष्य मंत्रों का पाठ करें।

ॐ आयुष्यं व्वर्च्चस्य गुं रायस्पोषमौद्भिदम् । इद गुं हिरण्यं व्वर्च्चस्व ज्जैत्रायाविशता दुमाम्।।१।।

ॐ न तद् रक्षा गुं सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्प्रथमज गुं ह्येतत्। यो विभर्त्ति दाक्षायण गुं हिरण्य गुं स देवेषु कृणुते

दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।२।।

ॐ यदा बध्नन् दाक्षायणा हिरण्य गुं शतानीकाय सुमनस्यमानाः।

तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्य्यथासम्।।३।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे आयुष्यमंत्रपाठः समाप्तः)



षोडश-मातृका-निर्माण-विधिः

पूर्व

उत्तर | दक्षिण

आ.कु.देवता १६ (लाल)	लोकमाता १२ (पीला)	देवसेना ८ (लाल)	मेधा ४ (पीला)
तुष्टि १५ (पीला)	माता ११ (लाल)	जया ७ (पीला)	शची ३ (लाल)
पुष्टि १४ (लाल)	स्वाहा १० (पीला)	विजया ६ (लाल)	पद्मा २ (पीला)
धृति १३ (पीला)	स्वधा ९ (लाल)	सावित्री ५ (पीला)	१ गौरी (लाल) गणेश (धूम्र)

पश्चिम

- किसी चौकी या पीढ़े में सफेद लाल अथवा पीला वस्त्र बांधकर उसमें उक्त प्रकार से षोडश (१६) खाने बनाकर लाल पीले रंग से रंगे हुए अक्षतों से षोडश मातृका के सभी खानों को पूर्ण करें।
- पूजन के समय षोडश मातृका को अग्निकोण में या अग्निकोण तथा पूर्व के मध्य, कलश से दक्षिण पूर्व दिशा में रखना चाहिए।

अथ षोडशमातृकाणामावाहनं* पूजनञ्च

(मातृका वेदी के सामने पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठकर अक्षत छोड़कर क्रमशः आवाहन करें)

गणेश आवाहनम्

ॐ गणानान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवा महे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

१. गौरी-आवाहनम्

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

---

* **एकतन्त्रेण मातृकाणामावाहनम् -**

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

२. पद्मा-आवाहनम्

ॐ हिरण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्राऽउदिथः सूर्य्यश्च। आरोहतं व्वरुण मित्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदितिं दितिं च मित्त्रोऽसि व्वरुणोऽसि।।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरु-संस्थिताम्।
जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

३. शची-आवाहनम्

ॐ निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां व्विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः। देव ऽइव सविता सत्त्य-धर्म्मेन्द्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्।।

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचि-कुण्डल-धारिणीम्।
रक्तमुक्ताद्यलंङ्कारां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।

४. मेधा-आवाहनम्

ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः।
मेधामिन्द्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।
बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावहयामि स्थापयामि।

५. सावित्री-आवाहनम्

ॐ सविता त्त्वा सवाना गुं सुवतामग्निर्ग्गृहपतीना गुं सोमो व्वनस्प्पतीनाम्। बृहस्प्पति र्व्वाचऽइन्द्द्रो ज्ज्यैष्ठ्याय रुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्त्रः सत्त्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम्।।

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव-मातृकाम्।
वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

६. विजया-आवाहनम्

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ२उत।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः।।
सर्वास्त्र-धारिणीं देवीं सर्वाभरण-भूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्द्यां विजयां स्थापयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयामावाहयामि स्थापयामि।

७. जया-आवाहनम्

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्त्रश्श्चिश्चाकृणोति समनावगत्य।
इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्प्रसूतः।।
सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभय-प्रदाम्।
त्रैलोक्य-वन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।

८. देवसेना-आवाहनम्

ॐ इन्द्र ऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः देवसेनानामभि-भञ्जतीनाञ्जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।
मयूर-वाहनां देवीं खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम्।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुर-मर्दिनीम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

९. स्वधा-आवाहनम्

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः

स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।।

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।
पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

१०. स्वाहा–आवाहनम्

ॐ स्वाहा प्प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः। पृथिव्व्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।
तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

११. मातृ–आवाहनम्

ॐ आपो ऽअस्म्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्प्वः पुनन्तु। व्विश्व गुं हि रिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि। दीक्षा–तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा गुं शग्ग्मां परिदधे भद्द्रं व्वर्णं पुष्ष्यन्।।

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।
सर्वकल्याण–रूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातृ आवाहयामि स्थापयामि।

१२. लोकमातृ-आवाहनम्

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे व्विभु च मे प्प्रभु च मे पूर्ण्णञ्च मे पूर्ण्णतरञ्च मे कुयवञ्च मेऽक्षितञ्च मेऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।।

आवाहयेल्लोक-मातृर्जयन्ती-प्रमुखाः शुभाः।
नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोक-हितावहाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृ आवाहयामि स्थापयामि।

१३. धृति-आवाहनम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऽऋते किञ्चन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।
हर्षोत्फुल्लास्य-कमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

१४. पुष्टि-आवाहनम्

ॐ अङ्गान्यात्क्मन्भिषजा तदश्विनात्क्मानमङ्गैः समधात्त्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप गुं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्ज्योतिरमृतन्दधानाः।।

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेह-प्रभवैर्नवैः।
शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

१५. तुष्टि-आवाहनम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम-सोममरातीयतो निदहाति-वेदः।
सनःपर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव-सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोष-कारिणीम्।
प्रसाद-सुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

१६. आत्मकुलदेवता-आवाहनम्

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्त्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

मातृणां प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ गुं समिमन्दधातु। व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः।
सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः-
ऐसा कहते हुए वैदिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

प्रार्थना

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्य्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।१।।

बर्द्धन्तां कुलमातरो हि सततं धान्यं धनं वाहनम् ।
दीर्घायुश्च यशश्च श्रीः समतां ज्ञानं महद् गौरवम् ।।

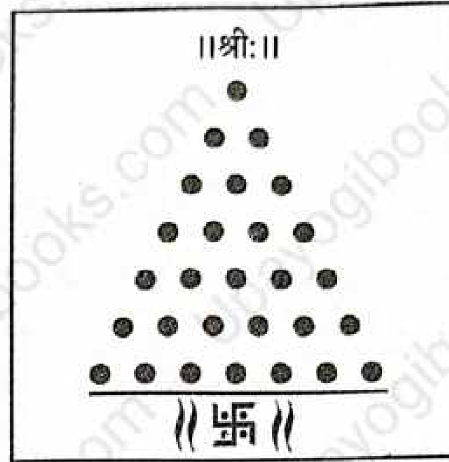
पुत्रं पौत्रमथास्तु मङ्गलसदा सर्वत्र निर्विघ्नता।
पीडां पापरतिं हरन्तु जाड्यं तन्वन्तु छत्रं सुखम् ।।२।।

हाथ में जल लेकर "अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।" कहकर सामने जल गिराकर पूजन समर्पित करें।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे षोडशमातृकाणामावाहनं पूजनञ्च समाप्तम्।)

□□

सप्तघृत-मातृका-निर्माण-विधिः



अग्निकोण में दिवाल में या पीढ़े को वस्त्रावेष्टित करके रोली या सिन्दूर से चित्रानुसार ऊपर से नीचे तक एक, दो तीन, चार, पाँच, छह और सात बिन्दुओं को बनाकर अर्थात् ऊपर एक बिन्दु, उसके नीचे दो बिन्दु, पुनः उसके नीचे तीन बिन्दु, इसी प्रकार क्रमशः सात बिन्दु तक निर्माण करें तथा उन बिन्दुओं के ऊपर भाग में 'श्रीः' लिखें।

उक्त प्रकार घृत मातृका का निर्माण करके षोडश मातृका से दक्षिण या पीछे रखकर पूजन करना चहिए।

अथ सप्तघृत-मातृकाणामावाहनं[१] पूजनञ्च

घृतधाराकरणम्– (सप्तघृतमातृकाओं पर घी से सात धार बनावें)

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्प्वा....

---

१. एकतंत्रेणावाहनम्

ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वसोर्धारादेवताभ्यो नमः, आवाहयामि स्थापयामि।

कहकर धारा देवें तथा धारा के आधे भाग से ही सभी धाराओं को गुड़ से मिला देवें और शेषमंत्र भाग पढ़ें। **'कामधुक्षः'** (प्रत्येक धारा में क्रमशः एक-एक देवता का आवाहन करें)

१. श्री-आवाहनम्

ॐ मनसः काममाकूतिं व्वाचः सत्त्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।
आगच्छ मातर्भुवनैक भूषे श्रीर्मोद-माङ्गल्य मनोरथाढ्ये।
कल्याणकोषं वितरन्त्यमन्दं मखेऽत्र चञ्चत्सुषमासुबुद्ध्यै।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि स्थापयामि।

२. लक्ष्मी-आवाहनम्

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्त्रे पार्श्वे नक्षत्त्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्ष्णन्निषाणामुम्म ऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

इन्द्राणि देवगण-मौलि-किरीटकोटि-रत्नाङ्कुरैः सततरञ्जित-पाठपीठम्।
दुःखाभिभूतजन दुर्गति नाशिनीं त्वामावाहयामि कृपया भव संमुखीना।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमाबाहयामि स्थापयामि।

३. धृति-आवाहनम्

ॐ भद्द्रङ्कर्ण्णेभिः शृणुयाम देवा भद्द्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्त्राः। स्थिरैरङ्गै स्तुष्टुवा गुं संस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः।।

एह्येहि भक्ताभयदे कुमारि समस्त-लोकप्रिय-हेतु-मूर्त्ते।
प्रोत्फुल्ल-पङ्केरुह-लोलनेत्रे धृते मखं पाहि शिवस्वरूपे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

४. मेधा-आवाहनम्

ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः। मेधामिन्द्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।

एह्येहि मेधे शुभ-भूरि-वस्त्रे पीताम्बरे पुस्तक-पात्र-हस्ते।
बुद्धि-प्रदे हंससमाधिरूढे, पूजां ग्रहीतुं मखमस्मदीयम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावाहयामि स्थापयामि।

५. स्वाहा-आवाहनम्

ॐ प्राणाय स्वाहा ऽअपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा। चक्षुषे स्वाहा श्रोत्त्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

एह्येहि वैश्वानरतुल्य देहे तडित्प्रभो शक्ति-धरे कुमारि।
हविर्गृहीत्वा सुर-तृप्ति हेतोः स्वाहे च शीघ्रं मखमस्मदीयम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

६. प्रज्ञा-आवाहनम्

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

पवित्रचित्ते प्रतिमा प्रमार्दे लब्धुं मनोज्ञाममितः सपर्याम्।
प्रज्ञेऽत्र यज्ञेऽखिल-विघ्न-हन्त्रि एह्येहि देवाधिप-वन्दनीये।।
ॐ भूर्भुवः स्वः प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।

७. सरस्वती-आवाहनम्

ॐ पावका नः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवति। यज्ञं व्वष्टु धियावसुः।।

मुनीन्द्रवृन्दारक-वृन्दवन्द्ये विद्वज्जनाराधित-पादयुग्मे।
श्री शारदे शारद-कान्ति-युक्ते आवाहये त्वां भव सम्मुखीना।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहायमि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमंदधातु। विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ।।

वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

➲ षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

प्रार्थना

यदङ्गत्वेन भो देव्यः! पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।१।।
धाराधरो दुग्धघृतस्य ऋद्धिं सिद्धिञ्च ऐश्वर्यमनन्त-कीर्तिम् ।
दीर्घायुषं यान-पदं महत्त्वं गो-वाजि-बृद्धिं च गृहे मम स्यात् ।।२।।
आरोग्यतामीष्ट-प्रसन्नताञ्च कुलाभिबृद्धिं हि ददातु कामान् ।
नमामि सप्ताज्य च मातृकाभ्यो घृतेन तृप्यन्ति वरप्रदात्र्यः।।३।।

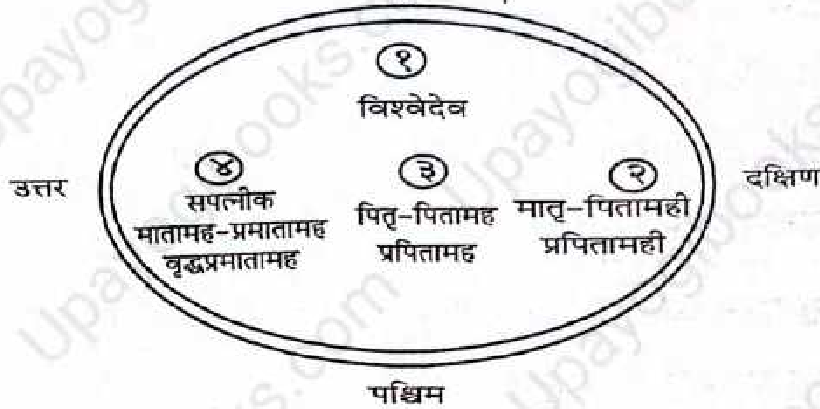
सामने जल गिरावें- **अनया पूजया वसोर्धारादेवताः प्रीयन्ताम् न मम।**

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे वसोर्धारा-सप्तघृतमातृका पूजनम् समाप्तम्)

❑❑

अथ सांकल्पिक नान्दी श्राद्धम्

नान्दीश्राद्ध देवतास्थापन क्रम



➲ चित्रानुसार चार स्थानों में पत्तल या दोनिया में रखकर प्रथम में पूर्वाग्र तथा शेष तीनों में उत्तराग्र कुश आसनार्थ रखकर पितरों की प्रसन्नता के लिए सांकल्पिक नान्दीश्राद्ध करे। यह श्राद्ध सव्य ही किया जाता है। यथा-

अनस्मद् वृद्धशब्दानामरूपाणामगोत्रिणाम्।
अनाम्नामतिलाद्यैश्च नान्दीश्राद्धं च सव्यवत्।।

संकल्पः - (कुशाक्षत, जल-पुष्प-द्रव्य लेकर संकल्प करें)

अद्य .... गोत्रः ... अहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्तये करिष्यमाण अमुक अनुष्ठानाङ्गतया सांकल्पिकेन विधिना नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये।

पाद्यम् - (चारों पात्रों में जल चढ़ावें)

१. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यवसु-संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद-प्रक्षालनं वृद्धिः।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद-प्रक्षालनं वृद्धिः।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद-प्रक्षालनं वृद्धिः।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः। इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद-प्रक्षालनं वृद्धिः।

आसनदानम् - (कुश निर्मित आसन के अभाव में दूर्वा का आसन दीजिए)

१. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यवसु-संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्य इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखा इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखा इमे आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

गन्धादि-दानम् – (जल, वस्त्र, जनेऊ, चंदन, रोली अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, पानसुपारी इत्यादि क्रम से चढ़ावे)

१. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखा इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्य इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखा इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

➲ पितरों के निमित्त सीधा निकालना चाहिए।

भोजननिष्क्रियद्रव्यदानम्

१. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यवसु-संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखा इदं युग्म-ब्राह्मणभोजन-पर्याप्तान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्य इदं युग्म-ब्राह्मण-भोजन-पर्याप्तान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखा इदं युग्म ब्राह्मण-भोजन-पर्याप्तान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

४. ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयगोत्राः मातामह प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका इदं युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्तान्न-निष्क्रयभूतं द्रव्यममृत-रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

स-क्षीरयवमुदकदानम् – (दूध, जौ तथा जल चढ़ावे)

ॐ सत्यवसु-संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम् । स्वगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। स्वगोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। द्वितीयगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दी-मुखाः प्रीयन्ताम्।

जलाऽक्षत-पुष्पदानम् – (जल, अक्षत तथा श्वेत पुष्प चढ़ावे।)

चतुर्षु-स्थानेषु-शिवा आपः सन्तु-इति जलम्। सौमनस्यमस्तु-इतिपुष्पम्। अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु-इत्यक्षतान् समर्पयेत्।

जलधारादानम् – (जल से पूर्वाग्र धारा दें।)

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। (इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्)

ब्राह्मणाः – सन्त्वघोराः पितरः।

दक्षिणादानम् – (चारों में दक्षिणा चढ़ावें)

ॐ भूर्भुवः स्वः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षाऽऽमलक-यव-मूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वगोत्राः पितृ-पितामह प्रपितामहा नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षामलकंयवमूल निष्क्रमभिणीम् दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयगोत्राः मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य

फलप्रतिष्ठार्थं द्राक्षा-ऽऽमलक-यव-मूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।

अर्घ्य-दानम् - (अर्घ्य के लिए चारों खानों में जलाक्षत, छोहारा, श्वेत पुष्पादि देवें।)

ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२। इयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुद गुं स गुं निसङ्गो शश्वत्तम गुं हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो व्विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्व स्मे।।

प्रार्थना - (यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।)

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च।
श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु।
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन ।

यजमानः - एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणाः- सन्त्वेताः सत्या आशिषः। सन्त्वेताः सत्या आशिषः।
सन्त्वेताः सत्या आशिषः।।

यजमानः- अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्।

ब्राह्मणाः- ॐ सुसम्पन्नम्। सुसम्पन्नम्। सुसम्पन्नम्।।

विसर्जनम् - (विसर्जन मन्त्र पढ़े तथा घण्टी बजाएं।)

ॐ व्वाजे वाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषु व्विप्रा अमृता ऽऋतज्ञाः।
अस्य मद्ध्वः पिबत मादयद्ध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।।

ॐ आ मा व्वाजस्य प्प्रसवो जगम्म्यादेमे द्यावापृथिवी व्विश्वरूपे ।
आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्वेन गम्म्यात् ।।

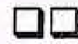
विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् -कहकर सामने जल गिरावें।

यजमानः- **मयाऽचरिते साङ्कल्पिक-नान्दीश्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टानां ब्राह्मणानां वचनात् श्रीगणपति-प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।**

ब्राह्मणाः- **ॐ अस्तु परिपूर्णः। अस्तु परिपूर्णः। अस्तु परिपूर्णः।।**

हस्ते जलमादाय - **अनेन कृतेन सांकल्पिक नान्दीश्राद्धकर्मणा विश्वेदेवासहिताः पितृगणाः प्रीयन्ताम् न मम।।**

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे नान्दीश्राद्धं सम्पूर्णम्।)



वास्तुमण्डल निर्माण विधि

एक हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर आठ-आठ खाने कुल चौंसठ (६४) खाने बनावे तथा चारों कोने के तीन-तीन खानों को आधे से रेखाङ्कित करें, तत्पश्चात् पुस्तक के अन्त में दिये गये वास्तु-मण्डल वेदी चित्र के अनुसार उन खानों को रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञमण्डप अथवा पूजन स्थल के नैर्ऋत्यकोण में रखकर आवाहन व पूजन करें।

वास्तुपीठ में जो ९-९ ऊर्ध्व तिर्यक रेखाएँ होती हैं, उन रेखाओं के देवताओं का नाम भी प्राप्त होता है अतः उनका भी आवाहन पूजन समीचीन होगा।

रेखा देवता आवाहनम्

पश्चिम से पूर्व के रेखा देवता

१. ॐ लक्ष्म्यै नमः। २. ॐ यशोवत्यै नमः। ३. ॐ कान्तायै नमः। ४. ॐ सुप्रियायै नमः। ५. ॐ विमलायै नमः। ६. ॐ शिवायै नमः। ७. ॐ सुभगायै नमः। ८. ॐ सुमत्यै नमः। ९. ॐ इडायै नमः।

दक्षिण से उत्तर के रेखा देवता

१. ॐ धन्यायै नमः। २. ॐ प्राणायै नमः। ३. ॐ विशालायै नमः। ४. ॐ स्थिरायै नमः। ५. ॐ भद्रायै नमः। ६. ॐ जयायै नमः। ७. ॐ निशायै नमः ८. ॐ विरजायै नमः। ९. ॐ विभवायै नमः।

ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवताभ्यो नमः, सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।

ॐ भूर्भुवः स्वः रेखादेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अथ वास्तुमण्डल-देवानामावाहनं पूजनञ्च

(अक्षत पुष्प से क्रमशः वास्तुमण्डल चित्र में लिखे गए क्रम के अनुसार देवताओं का आवाहन करें।)

१. ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिने नमः, शिखिनमावाहयामि-स्थापयामि।
२. ॐ भूर्भुवः स्वः पर्जन्याय नमः, पर्जन्यमावाहयामि-स्थापयामि।
३. ॐ भूर्भुवः स्वः जयन्ताय नमः, जयन्तमावाहयामि-स्थापयामि।
४. ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि-स्थापयामि।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि-स्थापयामि।
६. ॐ भूर्भुवः स्वः सत्याय नमः, सत्यमावाहयामि-स्थापयामि।
७. ॐ भूर्भुवः स्वः भृशाय नमः, भृशमावाहयामि-स्थापयामि।
८. ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि-स्थापयामि।
९. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि-स्थापयामि।
१०. ॐ भूर्भुवः स्वः पूष्णे नमः, पूष्णमावाहयामि-स्थापयामि।
११. ॐ भूर्भुवः स्वः वितथाय नमः, वितथमावाहयामि-स्थापयामि।
१२. ॐ भूर्भुवः स्वः गृहक्षताय नमः, गृहक्षतमावाहयामि-स्थापयामि।
१३. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि-स्थापयामि।
१४. ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाय नमः, गन्धर्वमावाहयामि-स्थापयामि।
१५. ॐ भूर्भुवः स्वः भृङ्गराजाय नमः, भृङ्गराजमावाहयामि-स्थापयामि।

१६. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि-स्थापयामि।
१७. ॐ भूर्भुवः स्वः पितृभ्यः नमः, पितृनावाहयामि-स्थापयामि।
१८. ॐ भूर्भुवः स्वः दौवारिकाय नमः, दौवारिकमावाहयामि-स्थापयामि।
१९. ॐ भूर्भुवः स्वः सुग्रीवाय नमः, सुग्रीवमावाहयामि-स्थापयामि।
२०. ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्पदन्ताय नमः, पुष्पदन्तमावाहयामि-स्थापयामि।
२१. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।
२२. ॐ भूर्भुवः स्वः असुराय नमः, असुरमावाहयामि-स्थापयामि।
२३. ॐ भूर्भुवः स्वः शोषाय नमः, शोषमावाहयामि-स्थापयामि।
२४. ॐ भूर्भुवः स्वः पापाय नमः, पापमावाहयामि-स्थापयामि।
२५. ॐ भूर्भुवः स्वः रोगाय नमः, रोगमावाहयामि-स्थापयामि।
२६. ॐ भूर्भुवः स्वः अहये नमः, अहिमावाहयामि-स्थापयामि।
२७. ॐ भूर्भुवः स्वः मुख्याय नमः, मुख्यमावाहयामि-स्थापयामि।
२८. ॐ भूर्भुवः स्वः भल्लाटाय नमः, भल्लाटमावाहयामि-स्थापयामि।
२९. ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि-स्थापयामि।
३०. ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पाय नमः, सर्पमावाहयामि-स्थापयामि।
३१. ॐ भूर्भुवः स्वः अदित्यै नमः, अदितिमावाहयामि-स्थापयामि।
३२. ॐ भूर्भुवः स्वः दित्यै नमः, दितिमावाहयामि-स्थापयामि।
३३. ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि-स्थापयामि।
३४. ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्राय नमः, सावित्रमावाहयामि-स्थापयामि।
३५. ॐ भूर्भुवः स्वः जयाय नमः, जयमावाहयामि-स्थापयामि।
३६. ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि-स्थापयामि।
३७. ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यमणे नमः, अर्यमणमावाहयामि-स्थापयामि।
३८. ॐ भूर्भुवः स्वः सवित्रे नमः, सवित्रमावाहयामि-स्थापयामि।
३९. ॐ भूर्भुवः स्वः विवस्वते नमः, विवस्वतमावाहयामि-स्थापयामि।
४०. ॐ भूर्भुवः स्वः बिबुधाधिपाय नमः, बिबुधाधिपमावाहयामि-स्थापयामि।

४१. ॐ भूर्भुवः स्वः मित्राय नमः, मित्रमावाहयामि-स्थापयामि।
४२. ॐ भूर्भुवः स्वः राजयक्ष्मणे नमः, राजयक्ष्माणमावाहयामि-स्थापयामि।
४३. ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीधराय नमः, पृथ्वीधरमावाहयामि-स्थापयामि।
४४. ॐ भूर्भुवः स्वः आपवत्साय नमः, आपवत्समावाहयामि-स्थापयामि।
४५. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि-स्थापयामि।
४६. ॐ भूर्भुवः स्वः चरक्यै नमः, चरकीमावाहयामि-स्थापयामि।
४७. ॐ भूर्भुवः स्वः विदार्यै नमः, विदारीमावाहयामि-स्थापयामि।
४८. ॐ भूर्भुवः स्वः पूतनायै नमः, पूतनामावाहयामि-स्थापयामि।
४९. ॐ भूर्भुवः स्वः पापराक्षस्यै नमः, पापराक्षसीमावाहयामि-स्थापयामि।
५०. ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि-स्थापयामि।
५१. ॐ भूर्भुवः स्वः अर्यम्णे नमः, अर्यम्णमावाहयामि-स्थापयामि।
५२. ॐ भूर्भुवः स्वः जृम्भकाय नमः, जृम्भकमावाहयामि-स्थापयामि।
५३. ॐ भूर्भुवः स्वः पिलिपिच्छाय नमः, पिलिपिच्छमावाहयामि-स्थापयामि।
५४. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि-स्थापयामि।
५५. ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि-स्थापयामि।
५६. ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि-स्थापयामि।
५७. ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि-स्थापयामि।
५८. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।
५९. ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि-स्थापयामि।
६०. ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि-स्थापयामि।
६१. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि-स्थापयामि।
६२. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि-स्थापयामि।
६३. ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि-स्थापयामि।
६४. ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पतये नमः वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

वास्तु वेदी के सामने अथवा ऊपर रखे गये कलश का आवाहन करें - **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्द्रयिः।** तत्पश्चात् कलश के ऊपर वास्तुपुरुष देवता का आवाहन करें।[१]

वास्तु मंत्र-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे सं चतुष्पदे ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तु पुरुषाय नमः। वास्तुपुरुषं आवाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमंदधातु। विश्वे देवा स ऽइह मादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तुमण्डलदेवतासहितवास्तोष्पतये नमः, सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

- वास्तुमण्डल देवताओं का तथा वास्तोष्पति का पुरुष सूक्त के मन्त्रों से अथवा पूजन मन्त्रों से षोडशोपचार पूजन करें।

प्रार्थना

जानामि नोऽर्चनविधिं परमं क्षमध्वं
लोकार्तिपुञ्जमतुलं क्षमयन्तु नित्यम्।
शिख्यादिकाः सुविमलाः सुखमाकिरन्तु
कुर्वन्तु दूरमनिशं दुरितान् समन्तात्।।१।।

---

१. इस प्रकार वास्तुमण्डलदेवताओं का आवाहन करके वेदी के मध्य में कलश स्थापन विधि से एक धातु कलश स्थापित करे। कलश के ऊपर सोने, चांदी अथवा तांबे की पुरुषाकार वास्तु प्रतिमा का अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा करके कलश के ऊपर पूर्णपात्र में स्थापित करके यथोपचार पूजन करना चाहिए।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिश्रद्धाविवर्जितम्।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।२।।
नमस्ते वास्तुदेवेश सर्वदोषहरो भव।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान् कामान् प्रयच्छ मे।।३।।

हस्ते जलमादाय- **अनेन पूजनेन वास्तुपुरुष सहित वास्तु मण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।।**

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे वास्तुमण्डलदेवानां स्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्)



❑ **कलश वेदी के ऊपर या सामने** - वेदी के ऊपर कलश स्थापन का विधान है। सम्प्रति कलश जल भरकर रखने से वेदी के विकृति के भय से वेदी के सामने मिट्टी का कलश स्थापित कर दिया जाता है और वेदी के ऊपर पूर्णपात्र के रूप में धातु कलश को अन्न से पूरित करके युग्म वस्त्रावेष्टित करके रखा जाता है जिसके ऊपर मध्य में प्रधान देवता की प्रतिमा स्थापित करके पूजन करने की परम्परा भी समुचित है।

चतुःषष्ठि योगिनी वेदी निर्माण विधि

एक हाथ चौकोर काठ की चौकी में श्वेत, रक्त या पीत वस्त्रावेष्टित करके उसमें ऊपर की ओर तीन कोष्ठक महाकाली महालक्ष्मी तथा महासरस्वती के लिए बनायें शेष भाग में खड़ी तथा पड़ी ९-९ रेखाएं खींचे। इस प्रकार कुल ६४ कोष्ठक बनेंगे, जिन्हें क्रमशः पुस्तक के अन्त में दिये गये चतुःषष्ठि योगिनी वेदी चित्र के अनुसार रक्त एवं पीत अक्षतों से पूर्ण करके मण्डप या पूजन स्थल के अग्नि कोण में स्थापित करके पूजन करें।

अथ चतुःषष्ठि-योगिनीनामावाहनं पूजनञ्च

आग्नेय दिशा में (पूर्व दक्षिण के कोने में) योगिनी वेदी रख करके अक्षत छोड़ते हुए बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से छोड़ते हुए वेदी के बांयी ओर दक्षिण दिशा की ओर से पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः ६४ योगिनियों का आवाहन करें -

प्रथम पंक्तौ (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

१. ॐ भूर्भुवः स्वः गजाननायै नमः, गजाननामावाहयामि-स्थापयामि।
२. ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहमुख्यै नमः, सिंहमुखीमावाहयामि-स्थापयामि।
३. ॐ भूर्भुवः स्वः गृध्रास्यायै नमः, गृध्रास्यामावाहयामि-स्थापयामि।
४. ॐ भूर्भुवः स्वः काकतुण्डिकायै नमः, काकतुण्डिकामावाहयामि-स्थापयामि।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः उष्ट्रग्रीवायै नमः, उष्ट्रग्रीवामावाहयामि-स्थापयामि।
६. ॐ भूर्भुवः स्वः हयग्रीवायै नमः, हयग्रीवामावाहयामि-स्थापयामि।
७. ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि-स्थापयामि।
८. ॐ भूर्भुवः स्वः शरभाननायै नमः, शरभाननामावाहयामि-स्थापयामि।

द्वितीय पंक्तौ (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

९. ॐ भूर्भुवः स्वः उलूकिकायै नमः, उलूकिकामावाहयामि-स्थापयामि।
१०. ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाख्यायै नमः, शिवाख्यामावाहयामि-स्थापयामि।
११. ॐ भूर्भुवः स्वः मयूर्यै नमः, मयूरीमावाहयामि-स्थापयामि।
१२. ॐ भूर्भुवः स्वः विकटाननायै नमः, विकटाननामावाहयामि-स्थापयामि।
१३. ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवक्रायै नमः, अष्टवक्रामावाहयामि-स्थापयामि।
१४. ॐ भूर्भुवः स्वः कोटराक्ष्यै नमः, कोटराक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।
१५. ॐ भूर्भुवः स्वः कुब्जायै नमः, कुब्जामावाहयामि-स्थापयामि।
१६. ॐ भूर्भुवः स्वः विकटलोचनायै नमः, विकटलोचनामावाहयामि-स्थापयामि।

तृतीय पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

१७. ॐ भूर्भुवः स्वः शुष्कोदर्यै नमः, शुष्कोदरीमावाहयामि-स्थापयामि।
१८. ॐ भूर्भुवः स्वः ललजिह्वायै नमः, ललजिह्वामावाहयामि-स्थापयामि।

१९. ॐ भूर्भुवः स्वः श्वदंष्ट्रायै नमः, श्वदंष्ट्रामावाहयामि-स्थापयामि।
२०. ॐ भूर्भुवः स्वः वानराननायै नमः, वानराननामावाहयामि-स्थापयामि।
२१. ॐ भूर्भुवः स्वः ऋक्षाक्ष्यै नमः, ऋक्षाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।
२२. ॐ भूर्भुवः स्वः केकराक्ष्यै नमः, केकराक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।
२३. ॐ भूर्भुवः स्वः वृहत् तुण्डायै नमः, वृहत्तुण्डामावाहयामि-स्थापयामि।
२४. ॐ भूर्भुवः स्वः सुराप्रियायै नमः, सुराप्रियामावाहयामि-स्थापयामि।

चतुर्थ पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

२५. ॐ भूर्भुवः स्वः कपालहस्तायै नमः, कपालहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।
२६. ॐ भूर्भुवः स्वः रक्ताक्ष्यै नमः, रक्ताक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।
२७. ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्यै नमः, शुकीमावाहयामि-स्थापयामि।
२८. ॐ भूर्भुवः स्वः श्येन्यै नमः, श्येनीमावाहयामि-स्थापयामि।
२९. ॐ भूर्भुवः स्वः कपोतिकायै नमः, कपोतिकामावाहयामि-स्थापयामि।
३०. ॐ भूर्भुवः स्वः पाशहस्तायै नमः, पाशहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।
३१. ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डहस्तायै नमः, दण्डहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।
३२. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रचण्डायै नमः, प्रचण्डामावाहयामि-स्थापयामि।

पञ्चम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

३३. ॐ भूर्भुवः स्वः चण्डविक्रमायै नमः, चण्डविक्रमामावाहयामि-स्थापयामि।
३४. ॐ भूर्भुवः स्वः शिशुघ्न्यै नमः, शिशुघ्नीमावाहयामि-स्थापयामि।
३५. ॐ भूर्भुवः स्वः काल्यै नमः, कालीमावाहयामि-स्थापयामि।
३६. ॐ भूर्भुवः स्वः पापहन्त्र्यै नमः, पापहन्त्रीमावाहयामि-स्थापयामि।
३७. ॐ भूर्भुवः स्वः रुधिरपायिन्यै नमः, रुधिरपायिनीमावाहयामि-स्थापयामि।
३८. ॐ भूर्भुवः स्वः वसाधयायै नमः, वसाधयामावाहयामि-स्थापयामि।
३९. ॐ भूर्भुवः स्वः गर्भभक्षायै नमः, गर्भभक्षामावाहयामि-स्थापयामि।
४०. ॐ भूर्भुवः स्वः शवहस्तायै नमः, शवहस्तामावाहयामि-स्थापयामि।

षष्ठ पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

४१. ॐ भूर्भुवः स्वः आन्त्रमालिन्यै नमः, आन्त्रमालिनीमावाहयामि-स्थापयामि।
४२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलकेश्यै नमः, स्थूलकेशीमावाहयामि-स्थापयामि।
४३. ॐ भूर्भुवः स्वः वृहत्कुक्ष्यै नमः, वृहत्कुक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।

४४. ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पास्यायै नमः, सर्पास्यामावाहयामि-स्थापयामि।
४५. ॐ भूर्भुवः स्वः प्रेतवाहनायै नमः, प्रेतवाहनामावाहयामि-स्थापयामि
४६. ॐ भूर्भुवः स्वः दन्त शूक-करायै नमः, दन्तशूक-करामावाहयामि-स्थापयामि
४७. ॐ भूर्भुवः स्वः क्रौञ्च्यै नमः, क्रौञ्चीमावाहयामि-स्थापयामि।
४८. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगशीर्षायै नमः, मृगशीर्षामावाहयामि-स्थापयामि।

सप्तम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

४९. ॐ भूर्भुवः स्वः वृषाननायै नमः, वृषाननामावाहयामि-स्थापयामि।
५०. ॐ भूर्भुवः स्वः व्यात्तास्यायै नमः, व्यात्तास्यामावाहयामि-स्थापयामि।
५१. ॐ भूर्भुवः स्वः धूमनिश्वासायै नमः, धूमनिश्वासमावाहयामि-स्थापयामि।
५२. ॐ भूर्भुवः स्वः व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः,
व्योमैक-चरणोर्ध्वदृशमावाहयामि-स्थापयामि।
५३. ॐ भूर्भुवः स्वः तापिन्यै नमः, तापिनीमावाहयामि-स्थापयामि।
५४. ॐ भूर्भुवः स्वः शोषणीदृष्ट्यै नमः, शोषणीदृष्टिमावाहयामि-स्थापयामि।
५५. ॐ भूर्भुवः स्वः कोटर्यै नमः, कोटरीमावाहयामि-स्थापयामि।
५६. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थूलनासिकायै नमः, स्थूलनासिकामावाहयामि-स्थापयामि।

अष्टम पंक्तौ- (पश्चिम से पूर्व की ओर क्रमशः आठ कोष्ठकों में आवाहन करें)

५७. ॐ भूर्भुवः स्वः विद्युत् प्रभायै नमः, विद्युत् प्रभामावाहयामि-स्थापयामि।
५८. ॐ भूर्भुवः स्वः वलाकास्यायै नमः, वलाकास्यामावाहयामि-स्थापयामि।
५९. ॐ भूर्भुवः स्वः मार्जार्यै नमः, मार्जारीमावाहयामि-स्थापयामि।
६०. ॐ भूर्भुवः स्वः कटपूतनायै नमः, कटपूतनामावाहयामि-स्थापयामि।
६१. ॐ भूर्भुवः स्वः अट्टाट्ट-हासायै नमः,
अट्टाट्ट-हासामावाहयामि-स्थापयामि।
६२. ॐ भूर्भुवः स्वः कामाक्ष्यै नमः, कामाक्षीमावाहयामि-स्थापयामि।
६३. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाक्ष्यैः नमः, मृगाक्षीमावाहधामि-स्थापयामि।
६४. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगलोचनायै नमः, मृगलोचनामावाहयामि-स्थापयामि।

❑ वेदी के पूर्व भाग में जो तीन कोष्ठक हैं उनमें तीन कलश रखकर, कलश का आवहन करें - **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा विशन्त्विन्दवः।**

पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशतादृयिः। दक्षिण में काली, मध्य में लक्ष्मी तथा उत्तर वाले में सरस्वती का आवाहन करें -

१. ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महाकाल्यै नमः,
श्री महाकालीमावाहयामि-स्थापयामि।

२. ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महालक्ष्म्यै नमः,
श्री महालक्ष्मीमावाहयामि-स्थापयामि।

३. ॐ भूर्भुवः स्वः श्री महासरस्वत्यै नमः,
श्री महासरस्वतीमावाहयामि-स्थापयामि।

ॐ आवाहयाम्यहं देवीम् योगिनीम् परमेश्वरीम्।
योगाभ्यासेन सन्तुष्टाः परध्यान समन्विताः।।
चतुःषष्टि समाख्याता योगिन्यो हि वरप्रदाः।
पूजां गृह्णन्तु मद्दत्तां पुत्र-पौत्र-प्रवर्धिनीम्।।
आवाहिताः चतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत।।

❑ वेदी कलशों के ऊपर क्रमशः महाकाली, महालक्ष्मी तथा महासरस्वती तीनों की मूर्ति (सोने, चाँदी, या तांबे की मूर्ति) अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा करके स्थापित कर पूजन करें। प्रतिमा के अभाव में नारियल रखें।

प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयान्तामोम्३प्रतिष्ठ।।

पूजन-

ॐ चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः अथवा **श्रीसूक्तमंत्रों** से पाद्य-अर्घ्य-आचमन-स्नान-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा फल आदि चढ़ा कर पूजन करे।

प्रार्थना

याषां रोष-प्रचण्ड-पावकसमो वित्तं कुलध्वंशिनः,
दौर्भाग्यं भवतीति वक्र-दृष्ट्या दुःखार्णवाडम्बरः।
तुष्यन्त्वति योगिनि विधातृ-तनया कालीश्रिया संयुता,
कल्याणानि प्रदा-भवन्तु सर्वा सिद्धिं सुखं ऋध्यताम्।।१।।
ॐ यदंगत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।२।।
चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः। क्षेमकर्त्र्यः, पुष्टिकर्त्र्यः वरदा भवत।।

➲ हाथ में जल लेकर छोड़े - **अनया पूजया श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती सहिता चतुःषष्टि-योगिन्यः प्रीयन्तां न मम।**

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे चतुःषष्टियोगिनीनां आवाहनं स्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्।)



क्षेत्रपालमण्डल (वेदी) निर्माण-विधिः

एक हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर नव खाने बनावे, प्रत्येक खाने में छः-छः उत्तर तथा ईशान वाले खाने में सात-सात अक्षत पुञ्ज रखें जबकि मध्य वाले में एक अक्षत पुञ्ज ही रखें। पुस्तक के अन्त में दिये गये क्षेत्रपालमण्डल वेदी चित्र के अनुसार उन खानों को रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञमण्डप अथवा पूजन स्थल के वायव्य कोण में रखकर आवाहन व पूजन करें।

अथैकपञ्चाशत् क्षेत्रपाल-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनञ्च

➲ हाथ में अक्षत लेकर निम्नलिखित नाम मंत्रो से वेदी में अंकित क्रमानुसार अक्षत छोडते हुए क्षेत्रपाल देवताओं का आवाहन करे।)

पूर्वदले सप्तकोष्ठेषु (पूर्वदल के सात कोष्ठकों में आवाहन करें)

१. ॐ भूर्भुवः स्वः अजराय नमः, अजरमावाहयामि-स्थापयामि।
२. ॐ भूर्भुवः स्वः व्यापकाय नमः, व्यापकमावाहयामि-स्थापयामि।
३. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रचौराय नमः, इन्द्रचौरमावाहयामि-स्थापयामि।
४. ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रमूर्त्तये नमः, इन्द्रमूर्त्तिमावाहयामि-स्थापयामि।
५. ॐ भूर्भुवः स्वः उक्षाय नमः, उक्षमावाहयामि-स्थापयामि।
६. ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डाय नमः, कूष्माण्डमावाहयामि-स्थापयामि।
७. ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि-स्थापयामि।

आग्नेयदले सप्तकोष्ठेषु (अग्निकोण वाले दल के सात कोष्ठकों में आवाहन करे)

८. ॐ भूर्भुवः स्वः वटुकाय नमः, वटुकमावाहयामि-स्थापयामि।
९. ॐ भूर्भुवः स्वः विमुक्ताय नमः, विमुक्तमावाहयामि-स्थापयामि।
१०. ॐ भूर्भुवः स्वः लिप्तकामाय नमः, लिप्तकाममावाहयामि-स्थापयामि।
११. ॐ भूर्भुवः स्वः लीलाकाय नमः, लीलाकमावाहयामि-स्थापयामि।
१२. ॐ भूर्भुवः स्वः एकदंष्ट्राय नमः, एकदंष्ट्रमावाहयामि-स्थापयामि।
१३. ॐ भूर्भुवः स्वः ऐरावताय नमः, ऐरावतमावाहयामि-स्थापयामि।
१४. ॐ भूर्भुवः स्वः ओषधिघ्नाय नमः, ओषधिघ्नमावाहयामि-स्थापयामि।

दक्षिणदले षड्कोष्ठेषु (दक्षिण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करे)

१५. ॐ भूर्भुवः स्वः बन्धनाय नमः, बन्धनमावाहयामि-स्थापयामि।
१६. ॐ भूर्भुवः स्वः दिव्यकाय नमः, दिव्यकमावाहयामि-स्थापयामि।
१७. ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि-स्थापयामि।
१८. ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणाय नमः, भीषणमावाहयामि-स्थापयामि।
१९. ॐ भूर्भुवः स्वः गवयाय नमः, गवयमावाहयामि-स्थापयामि।
२०. ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टाय नमः, घण्टामावाहयामि-स्थापयामि।

नैर्ऋत्यदलेषड्कोष्ठेषु (नैर्ऋत्यकोण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करे)

२१. ॐ भूर्भुवः स्वः व्यालाय नमः, व्यालमावाहयामि-स्थापयामि।
२२. ॐ भूर्भुवः स्वः अणवे नमः, अणुमावाहयामि-स्थापयामि।
२३. ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रवारुणाय नमः, चन्द्र-वारुणमावाहयामि-स्थापयामि।
२४. ॐ भूर्भुवः स्वः पटाटोपाय नमः, पटाटोपमावाहयामि-स्थापयामि।

२५. ॐ भूर्भुवः स्वः जटालाय नमः, जटालमावाहयामि-स्थापयामि।
२६. ॐ भूर्भुवः स्वः क्रतवे नमः, क्रतुमावाहयामि-स्थापयामि।

पश्चिमदलेषड्कोष्ठेषु (पश्चिम दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करे)

२७. ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टेश्वराय नमः, घण्टेश्वरमावाहयामि-स्थापयामि।
२८. ॐ भूर्भुवः स्वः विटङ्काय नमः, विटङ्कमावाहयामि-स्थापयामि।
२९. ॐ भूर्भुवः स्वः मणिमानाय नमः, मणिमानमावाहयामि-स्थापयामि।
३०. ॐ भूर्भुवः स्वः गणबन्धवे नमः, गणबन्धुमावाहयामि-स्थापयामि।
३१. ॐ भूर्भुवः स्वः डामराय नमः, डामरमावाहयामि-स्थापयामि।
३२. ॐ भूर्भुवः स्वः ढुण्डिकर्णाय नमः, ढुण्डिकर्णमावाहयामि-स्थापयामि।

वायव्यदले षड्कोष्ठेषु (वायव्यकोण के दल में छः कोष्ठकों में आवाहन करे)

३३. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थविराय नमः, स्थविरमावाहयामि-स्थापयामि।
३४. ॐ भूर्भुवः स्वः दन्तुराय नमः, दन्तुरमावाहयामि-स्थापयामि।
३५. ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः, धनदमावाहयामि-स्थापयामि।
३६. ॐ भूर्भुवः स्वः नागकर्णाय नमः, नागकर्णमावाहयामि-स्थापयामि।
३७. ॐ भूर्भुवः स्वः महाबलाय नमः, महाबलमावाहयामि-स्थापयामि।
३८. ॐ भूर्भुवः स्वः फेत्काराय नमः, फेत्कारमावाहयामि-स्थापयामि।

उत्तरदलेषड्कोष्ठेषु (उत्तर दिशा के दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करे)

३९. ॐ भूर्भुवः स्वः चीकराय नमः, चीकरमावाहयामि-स्थापयामि।
४०. ॐ भूर्भुवः स्वः सिंहाय नमः, सिंहमावाहयामि-स्थापयामि।
४१. ॐ भूर्भुवः स्वः मृगाय नमः, मृगमावाहयामि-स्थापयामि।
४२. ॐ भूर्भुवः स्वः यक्षाय नमः, यक्षमावाहयामि-स्थापयामि।
४३. ॐ भूर्भुवः स्वः मेघवाहनाय नमः, मेघवाहनमावाहयामि-स्थापयामि।
४४. ॐ भूर्भुवः स्वः तीक्ष्णोष्ठाय नमः, तीक्ष्णोष्ठमावाहयामि-स्थापयामि।

ईशानदलेषड्कोष्ठेषु (ईशानकोण वाले दल के छः कोष्ठकों में आवाहन करे)

४५. ॐ भूर्भुवः स्वः अनलाय नमः, अनलमावाहयामि-स्थापयामि।
४६. ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्लतुण्डाय नमः, शुक्लतुण्डमावाहयामि-स्थापयामि।
४७. ॐ भूर्भुवः स्वः सुधालापाय नमः, सुधालापमावाहयामि-स्थापयामि।
४८. ॐ भूर्भुवः स्वः बर्बरकाय नमः, बर्बरकमावाहयामि-स्थापयामि।

४९. ॐ भूर्भुवः स्वः पवनाय नमः, पवनमावाहयामि-स्थापयामि।
५०. ॐ भूर्भुवः स्वः पावनाय नमः, पावनमावाहयामि-स्थापयामि।

मध्यदले (मध्यदल के कोष्ठक में आवाहन करें)

५१. ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।

➢ वेदी के सामने (या ऊपर) कलश स्थापन करें – ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशतादृयिः।

❑ वेदी के मध्य में एक धातुकलश स्थापित कर उसका पूजन करके कलश के ऊपर भैरव की ताम्र या लौह की मूर्ति का आवाहन करके अग्न्युत्तारण, प्रतिष्ठा कर पूजन करें। मूर्ति के अभाव में यंत्र अथवा नारियल रख सकते हैं।

भैरव-आवाहन मंत्र-

ॐ नहि स्पश मवि दन्न न्य मस्माद् वैश्वानरात् पुरुएतारमग्नेः। एमेन म वृधन्नमृता अमर्त्यम् वैश्वानरं क्षैत्र जित्याय देवाः।।

ॐ भूत प्रेत पिशाचाद्यैरावृतं शूल-पाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं तु कर्मण्यस्मिन् सुखायनः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भैरवाय नमः भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमन्दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् ३ प्रतिष्ठ।।
ॐ भुर्भुवः स्वः अजरादिमण्डलदेवता सहित श्री क्षेत्रपालाय नमः, सुप्रतिष्ठतो वरदो भव।।

पूजन-

ॐ भूर्भुवः स्वः सभैरव अजरादि क्षेत्रपालमण्डलदेवताभ्यो नमः अथवा **पुरुषसूक्त** के मंत्रों से षोडशोपचार पाद्य-अर्घ्य-आचमन-

स्नान-गन्ध-अक्षत-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-ताम्बूल-पूगीफल-दक्षिणा चढ़ाकर पूजने करें।

प्रार्थना-

ॐ करकलित कपालः कुण्डलीदण्डपाणिः
तरुणतिमिर नीलः व्याल यज्ञोपवीती।
क्रतु समयसपर्या विघ्नविच्छेद हेतुः
जयतु बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।१।।

वन्दे क्षेत्रपक्षेत्रपालमखिलं वन्दे पिशाचावृतम् ,
वन्दे भैरवि सेवितं शुभकरं वन्दे प्रभुं रक्षकम्।
वन्दे विघ्न विनाशनं, सुखप्रदं वन्देऽरविन्दाक्षकम् ,
वन्दे पन्नगवीतिनं त्रिनयनं वन्दे विभुं भैरवम्।।२।।
यं यं यं यक्षरूपं दशदिशिवदनं भूमिकम्पायमानम्।
सं सं संहारमूर्तिं शिरमुकुट जटा शेखरं चन्द्रबिम्बम्।
दं दं दीप्तकायं विकृतनखमुखंचोर्ध्वरेखा कपालम्।।
पं पं पं पापनाशं प्रणतपशुपतिं क्षेत्रपालं नमामि।।३।।

ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वामजरादि-गणैः सह।
पूजां गृहाण मे देव निर्विघ्नं कुरु सर्वदा।।४।।

➲ हाथ में जल लेकर छोड़े -

ॐ अनया पूजया सभैरव-अजरादि-क्षेत्रपाल-मण्डल-देवाः प्रीयन्तां न मम।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे क्षेत्रपालमण्डलदेवानामावाहनं पूजनञ्च समाप्तम्)

❑❑

अथ नवग्रहमण्डल (वेदी) निर्माण-विधिः

एक हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर नव खाने बनावे तथा पुस्तक के अन्त में दिये गये नवग्रह वेदी चित्र के अनुसार उन खानों में रंगीन अक्षत से ग्रहों की आकृति का निर्माण करके यज्ञमण्डप अथवा पूजन स्थल के ईशान कोण में रखकर ग्रहों का आवाहन व पूजन करें।

अथ नवग्रह-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनञ्च

- हाथ में अक्षत पुष्प, लेकर क्रमशः मंत्रोच्चार पूर्वक अक्षत, पुष्प छोड़ते हुए ग्रहों का आवाहन करें।

१. सूर्यावाहनम् – (नवग्रह वेदी के मध्य कोष्ठक में)

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

जपा-कुसुम-सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भवाय काश्यपसगोत्राय रक्तवर्णाय श्रीसूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।

२. चन्द्र-आवाहनम् - (नवग्रह वेदी के अग्निकोण वाले कोष्ठक में)

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न गुं सुबद्धवम्महते क्षत्त्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जान राज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्त्रममुष्यै पुत्त्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना गुं राजा।।

दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णव-सम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भवाय आत्रेयसगोत्राय शुक्लवर्णाय श्रीसोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।

३. भौम-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के दक्षिण कोष्ठक में)

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्। अपा गुं रेता गुं सि जिन्वति।।

धरणीगर्भ-सम्भूतं विद्युत्तेजः सम-प्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भवाय भारद्वाजसगोत्राय रक्तवर्णाय श्रीभौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि।।

४. बुध-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के ईशानकोण के कोष्ठक में)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स गुं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अद्ध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्।।

प्रियङ्गु-कलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य-गुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भवाय आत्रेयसगोत्राय हरितवर्णाय श्रीबुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि।।

५. बृहस्पति-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के उत्तर कोष्ठक में)

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चन-सन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भवाय आङ्गिरसगोत्राय पीतवर्णाय श्रीबृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।

६. शुक्र-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के पूर्व कोष्ठक में)

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान गुं शुक्क्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

हिम-कुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र-प्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भवाय भार्गवसगोत्राय शुक्लवर्णाय श्रीशुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।

७. शनि-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के पश्चिम कोष्ठक में)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽ आपो भवन्तु पीतये।
शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः।।

नीलाम्बुज-समाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्ड-सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भवाय काश्यपसगोत्राय कृष्णवर्णाय श्रीशनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि स्थापयामि।।

८. राहु-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के नैऋत्यकोण कोष्ठक में)

ॐ कया नश्चित्त्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया व्वृता।।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्य-विमर्दनम्।
सिंहिका-गर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनापुरोद्भवाय पैठिनसगोत्राय कृष्णवर्णाय श्रीराहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि।।

९. केतु-आवाहनम् – (नवग्रह वेदी के वायव्यकोण के कोष्ठक में)

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

पलाश-धूम्र-सङ्काशं तारकाग्रह-मस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदि-समुद्भवाय जैमिनिसगोत्राय कृष्णवर्णाय श्रीकेतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि।।

अधिदेवतास्थापनम्

☐ ततो ग्रहाणांदक्षिणपार्श्वेऽधिदेवतास्थापनं कुर्यात्।

१. ईश्वरः- (सूर्य के दाहिने (उत्तर) ईश्वर का आवाहन करें)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्ग-वरधारिणम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

२. उमा- (चन्द्र के दाहिने (दक्षिण) उमा का आवाहन करें।)

ॐ अम्बेऽ अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि।

३. स्कन्दः- (मंगल के दाहिने (पश्चिम) स्कन्द का आवाहन करें।)

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा

पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्त्यं महि जातं ते ऽअर्व्वन्।।

रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रजं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

४. विष्णुः- (बुध के दाहिने (पूर्व) विष्णु का आवाहन करे)

ॐव्विष्ष्णोरराटमसि व्विष्ष्णोः श्नप्प्त्रे स्थो व्विष्ष्णोः स्यूरसि व्विष्ष्णोर्ध्रुवोऽसि। व्वैष्ष्णवमसि व्विष्ष्णवे त्त्वा।।

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रह–कारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

५. ब्रह्मा - (वृहस्पति के दाहिने (पूर्व) में ब्रह्मा का आवाहन करे।)

ॐ आ ब्व्रह्मन्ब्राह्मणो ब्व्रह्मवर्च्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्न्यः शूर ऽइषव्व्योऽति व्व्याधी महारथो जायतां दोग्ग्ध्री धेनुर्व्वोढा नड्वानाशुः सप्प्तिः पुरन्धिर्य्योषा जिष्ष्णूरथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्ज्जन्न्यो व्वर्षतु फलवत्त्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

६. इन्द्रः- (शुक्र के दाहिने (दक्षिण) इन्द्र का आवाहन करे।)

ॐ सजोषा ऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब व्वृत्रहा शूर

व्विद्वान्। जहि शत्रूँ२ रपमृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि व्विश्श्वतो न:।।

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इद्रमावाहयामि स्थापयामि।

७. यमः- (शनि के दाहिने (उत्तर) यम का आवाहन करे।)

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

८. कालः- (राहु के दाहिने (पश्चिम) काल का आवाहन करे।)

ॐ कार्षिरसि समुद्द्रस्य त्त्वा क्षित्त्या ऽउन्नयामि।
समापो ऽअद्भिरग्गमत समोषधीभिरोषधीः।।

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने-दिने।
कला-काष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि।

९. चित्रगुप्तः- (केतु के दाहिने (पूर्व) चित्रगुप्त का आवाहन करे।)

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।।

धर्मराज-सभासंस्थं कृताऽकृत-विवेकिनाम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनी-पत्रहस्तकम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्ताय नमः, चित्रगुप्तमावाहयामि स्थापयामि।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

❑ ततो ग्रहाणां वामपार्श्वे प्रत्यधिदेवतास्थापनं कुर्यात्।

१. **अग्निः-** (सूर्य से बाएं (उत्तर) अग्नि का आवाहन करे।)

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे।
देवाँ२ ऽआसादयादिह।।

रक्त-माल्याम्बर-धरं रक्त-पद्मासन-स्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

२. **अपः-** (चन्द्र से बाएं (पूर्वोत्तर) में अप का आवाहन करे।)

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन।
महेरणाय चक्षसे।।

आदिदेव-समुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अपामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि स्थापयामि।

३. **पृथ्वीः-** (मंगल से बांए (पूर्व) में पृथ्वी का आवाहन करे।)

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरि-स्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

४. **विष्णुः-** (बुध से बाएं (उत्तर पश्चिम) विष्णु का आवाहन करे।)

ॐ इदं व्विष्णुर्व्विचक्क्रमे त्त्रेधा निदधे पदम्।
समूढमस्य पा ᳬ सुरे स्वाहा।

शङ्ख-चक्र-गदा-पद्म-हस्तं गरुडवाहनम्।
किरीट-कुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

५. इन्द्रः- (गुरु से बांए (पश्चिम) इन्द्र का आवाहन करे।)

ॐ इन्द्र ऽआसां नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुर ऽएतु सोमः। देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

ऐरावत-गजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

६. इन्द्राणी- (शुक्र के बांए (उत्तर) इन्द्राणी का आवाहन करे।)

ॐ आदित्त्यै रास्स्नासीन्द्राण्ण्या ऽउष्ष्णीष ।
पूषासि घर्म्माय दीष्ष्व।।

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानाऽलङ्कार-संयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

७. प्रजापतिः- (शनि से बांए (दक्षिण) प्रजापति का आवाहन करे।)

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्न्यन्न्यो व्विश्श्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो ऽअस्तु व्वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्।।

आवाहयाम्यहं देव-देवेशं च प्रजापतिम्।
अनेक-व्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

८. सर्पाः- (राहु से बांए (पूर्व) सर्प का आवाहन करे।)

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यः सर्प्पेब्भ्यो नमः।।

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणि-विराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तक-मण्डितान्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि स्थापयामि।

९. ब्रह्मा- (केतु के बांए (पश्चिम) ब्रह्मा का आवाहन करे।)

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेन ऽआवः। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्श्च व्विवः।।

हंसपृष्ठ-समारूढं देवतागण-पूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

पञ्चलोकपालस्थापनम्

❑ विनायकादिपञ्चलोकपालान् आवाहयेत्।

१. गणपतिः- (राहो उत्तरे गणपतिमावाहयेत् ।)

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।।

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२. दुर्गा- (शनेरुत्तरे दुर्गामावाहयेत् ।)

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातितीयतो वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजाति–कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

३. वायुः- (सूर्यस्योत्तरे वायुमावाहयेत् ।)

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि।
नियुत्वान्सोमपीतये।।

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणाम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

४. आकाशः- (राहोर्दक्षिणे आकाशमावाहयेत् ।)

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश ऽआदिशो व्विदिश ऽउद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तर-स्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि।

५. अश्विनौ- (केतोर्दक्षिणे अश्विनौ आवाहयेत् ।)

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्श्विना सूनृतावती।
तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

दशदिक्पालस्थापनम्

❑ वेदी में परिधि से बाहर चारों ओर क्रमशः पूगीफल में अक्षत छोड़ते हुए दशदिक्पालों का आवाहन करें।

१. इन्द्रः- (परिधि से बाहर पूर्व में इन्द्र का आवाहन करें।)

*ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवेहवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्क्रं पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।*

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

२. अग्निः- (अग्निकोण में अग्नि का आवाहन करें।)

*ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्श्च व्वन्द्य।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्व्रते।।*

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

३. यमः- (दक्षिण में यम का आवाहन करें।)

*ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा।
स्वाहा घर्म्माय स्वाहा घर्म्मः पित्रे।।*

महामहिषमारुढं दण्डहस्तं महाबलम् ।
यज्ञ-संरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

४. **निर्ऋतिः-** (नैऋत्यकोण में निर्ऋति का आवाहन करें।)

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त ऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

५. **वरुणः-** (पश्चिम दिशा में वरुण का आवाहन करें।)

ॐ तत्त्वा यामि ब्ब्रह्मणा व्वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोध्युरुश ँ स मा न ऽआयुः प्रमोषीः।।

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं जलेशं यादशां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

६. **वायुः-** (वायव्य कोण में वायु का आवाहन करें।)

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। व्वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम् ।
यज्ञ-संरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

७. **सोमः-** (उत्तर दिशा में सोम का आवाहन करें।)

ॐ व्वयय ँ सोम व्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।

८. ईशानः- (ईशान कोण में ईशान का आवाहन करें।)

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा व्वेद-सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

९. ब्रह्मा- (पूर्व-ईशान के मध्य में ब्रह्मा का आवाहन करें।)

ॐ अस्म्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः श ६ सते स्तुवते धायि पज्ज्र ऽइन्द्रज्ज्येष्ठा ऽअस्माँ२ ऽअवन्तु देवाः।।

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञ-संसिद्धि-हेतवे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

१०. अनन्त- (नैर्ऋत्य-पश्चिम के मध्य में अनन्त का आवाहन करें।)

ॐ स्योना पृथिविनो भवान्नृक्षरा निवेशनी।
यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।।

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

❑ इस प्रकार आवाहन करके सम्मुख या वेदी के ऊपर कलश की स्थापना करे - **ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा व्विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा**

निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्रयिः।

तदनन्तर मध्यवेदी में धातु कलश के ऊपर पूर्णपात्र में सूर्य की स्वर्ण प्रतिमा को अग्न्युत्तारण पूर्वक प्रतिष्ठा करे अथवा नारियल रखकर पूजन करें।

ॐ ग्रहा ऽऊर्ज्जाहुतयो व्यन्तो विप्प्राय मतिम्। तेषां विशिप्प्रियाणां व्वोऽहमिषमूर्ज्ज ꣳ समग्ग्रभमुपयामगृहीतो ऽसीन्द्राय त्त्वा जुष्टं गृह्णाम्म्येष ते योनिरिन्द्राय त्त्वा जुष्टतमम्।।

प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं य्यज्ञ ꣳ समिमं दधातु। विश्श्वेदेवास ऽइह मादयन्तामोंऽ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिनवग्रह-मण्डलदेवेभ्यो नमः।। सूर्याद्यनन्तान्त-देवताः सुप्रितिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसूर्यादि नवग्रह मण्डलदेवताभ्यो नमः। अथवा पूजन मंत्रों द्वारा ग्रहों का षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

प्रार्थना

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।१।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरुच्चपदवीं सन्मङ्गलं मङ्गलः।
सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।।
राहुर्बाहुबलं करोतु विपुलां केतुः कुलस्योन्नतिम् ।
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु सततं सर्वे प्रसन्नाः ग्रहाः।।२।।

हाथ में जल लेकर ग्रह वेदी के सामने गिरावें- **अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहमण्डलदेवाः प्रीयन्तां न मम।** (यह वाक्य पढ़ें।)

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे नवग्रहमण्डलदेवानां स्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्)

❑❑

असंख्यात-रुद्रकलश-स्थापनं पूजनञ्च

- नवग्रह से ईशानकोण में कलश स्थापन विधि से एक कलश स्थापित करके उसके ऊपर रुद्रों का आवाहन व पूजन करें। कुछ विद्वान प्रधानवेदी और नवग्रह के मध्य में स्थापित करते हैं।
- सर्वप्रथम कलश स्थापन विधि से कलश का स्थापन पूजन करे।

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माविशताद्द्रयिः।।

कलश में जल भरकर गन्ध-दूर्वा-पूगीफल-द्रव्य इत्यादि डालकर पूर्णपात्र रखकर उसके ऊपर रुद्र की स्वर्णप्रतिमा को अग्न्युत्तारण करके अथवा छोटा शिवलिङ्ग या श्रीफल ही रखकर असंख्यात रुद्र का आवाहन करें-

<u>आवाहन</u>- (हाथ में अक्षत विल्वपत्र तथा पुष्प लेकर आवाहन करे।)

ॐ असंख्याता सहस्त्राणि ये रुद्रा अधिभूम्याम्।
तेषा ᳪ सहस्त्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

रुद्राः रुद्रगणाश्चैव असंख्याताः प्रकीर्तिताः।
तेषामावाहये भक्त्या स्वीकुर्वन्त्वर्चनं मम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः, असंख्यात रुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

<u>प्रतिष्ठा</u> -

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः असंख्यात रुद्रेभ्यो नमः, असंख्यातरुद्रानः सुप्रतिष्ठताः वरदाः भवन्तु।

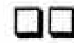
- **नमस्ते रुद्रमन्यव०** इत्यादि रुद्रसूक्त के मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करे।

प्रार्थना

ॐ रुद्राः रुद्रगणाश्च रुद्र-सुहृदाः शान्तं शिवं शंकरम्।
कैलाशाचल-वासिनः शिव-समाः सर्वे च शूलं धराः।।
वृषभस्था च भुजंगहार-भसिता-भस्माङ्गरागान्विताः।
ते सर्वे शिवरूपि-भद्ररुद्राः कुर्वन्तु नः मंगलम्।।

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करे- **अनेन पूजनेन असंख्यात् रुद्राः प्रीयन्तां न मम।।**

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे असंख्यातरुद्रकलशस्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्।)



सर्वतोभद्र-मण्डल (वेदी) निर्माण-विधिः

सवा हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर १८-१८ खाने बनावे तथा पुस्तक के अन्त में दिये गये सर्वतोभद्र वेदी चित्र के अनुसार उन खानों में रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञ मण्डप अथवा पूजन स्थल के पूर्व भाग में, मध्य में रखकर आवाहन व पूजन करें।

अथ सर्वतोभद्र-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनञ्च

(किसी भी देवी देवताओं के पूजन, अनुष्ठान यज्ञादि में प्रधान वेदी के रूप में सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण तथा पूजन किया जा सकता है। प्रायः लोग विष्णु इत्यादि देवताओं के पूजन में इसका प्रयोग करते हैं।

- अक्षत छोड़ते हुए देवताओं का आवाहन करे।
- ..आवाहयामि.. के बाद **स्थापयामि**, **पूजयामि** का भी उच्चारण करे।

१. <u>ब्रह्मा</u> (मध्ये कर्णिकायाम्)- **ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।**

२. सोमः (उत्तरवाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।

३. ईशानः (ऐशान्यां खण्डेन्दौ)- ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

४. इन्द्रः (पूर्वे वाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

५. अग्निः (आग्नेय्यां खण्डेन्दौ)- ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

६. यमः (दक्षिणे वाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

७. निर्ऋतिः (नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ)- ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

८. वरुणः (पश्चिमे वाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

९. वायुः (वायव्यां खण्डेन्दौ)- ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

१०. अष्टवसवः (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवावाहयामि स्थापयामि।

११. एकादशरुद्राः (सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः एकादश-रुद्रेभ्यो नमः, एकादश-रुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

१२. द्वादशादित्याः (ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।

१३. अश्विनौ (इन्द्राग्निमध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

१४. विश्वेदेवाः (अग्नि-यममध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृक-विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि।

१५. सप्तयक्षाः (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानामावाहयामि स्थापयामि।

१६. नागाः (निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुल-नागेभ्यो नमः, अष्टकुल-नागानावाहयामि स्थापयामि।

१७. गन्धर्वाप्सरसः (वरुण-वायुमध्ये भद्रे)- ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाऽप्सराभ्यो नमः, गन्धर्वाऽप्सरस आवाहयामि स्थापयामि।

१८. स्कन्दः(ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा)- ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

१९. वृषभः (तदुत्तरे)- ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

२०. शूलमहाकालौ (तदुत्तरे)- ॐ भूर्भुवः स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः, शूलमहाकालौ आवाहयामि स्थापयामि।

२१. दक्षादिसप्तगणाः (ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि-सप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादि-सप्तगणान् आवाहयामि स्थापयामि।

२२. दुर्गा (ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

२३. विष्णुः (तत्पूर्वे)- ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

२४. स्वधा (ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

२५. मृत्युरोगाः (ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगान् आवाहयामि स्थापयामि।

२६. गणपतिः(ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२७. अपः (ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि स्थापयामि।

२८. मरुतः(ब्रह्म-वायुमध्ये शृङ्खलायाम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुत आवाहयामि स्थापयामि।

२९. पृथ्वी (ब्रह्मणः पादमूले)- ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।

३०. गङ्गादि नद्यः (तदुत्तरे)- ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदी आवाहयामि स्थापयामि।

३१. सप्तसागराः (तदुत्तरे)- ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरान् आवाहयामि स्थापयामि।

३२. मेरुः (कर्णिकापरिधौ)- ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

३३. गदा (सत्त्वबाह्यपरिधौ)- ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।

३४. त्रिशूलः (ऐशान्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

३५. वज्रः (पूर्वे)- ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

३६. शक्तिः (आग्नेय्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

३७. दण्डः (दक्षिणे)- ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

३८. खड्गः (नैर्ऋत्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

३९. पाशः (पश्चिमे)- ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।

४०. अङ्कुशः (वायव्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

४१. गौतमः (तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण)- ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।

४२. भरद्वाजः (ईशान्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

४३. विश्वामित्रः (पूर्वे)- ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वमित्रमावाहयामि स्थापयामि।

४४. कश्यपः (आग्नेय्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

४५. जमदग्निः (दक्षिणे)- ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

४६. वशिष्ठः (नैर्ऋत्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

४७. अत्रिः (पश्चिमे)- ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

४८. अरुन्धती (वायव्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

४९. ऐन्द्री (पूर्वे)- ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

५०. कौमारी (आग्नेय्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

५१. ब्राह्मी (दक्षिणे)- ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

५२. वाराही (नैर्ऋत्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

५३. चामुण्डा (पश्चिमे)- ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

५४. वैष्णवी (वायव्ये)- ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

५५. माहेश्वरी (उत्तरे)- ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

५६. वैनायकी (ईशान्याम्)- ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

सर्वतोभद्रमण्डल देवताओं की प्रतिष्ठा करें –

प्रतिष्ठा –

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्त्वरिष्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। व्विश्वेदेवास ऽइह मादयन्तामोँ३ प्रतिष्ठ।।

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रा-वरुण-निर्मिता।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह।।

ब्रह्माद्यावाहित-सर्वतोभद्रमण्डलदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। इति प्रतिष्ठाप्य, 'ॐ ब्रह्मादिसर्वतोभद्रमण्डलदेवेभ्यो नमः' इति षोडशोपचारैः सम्पूजयेत्।।

प्रार्थना

ॐ यं ब्रह्मावरुणेन्द्र-रुद्रमरुतस्तुन्वन्ति दिव्यैस्तवै-
र्वेदैः साङ्गपद-क्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः देवाय तस्मै नमः।।

इस प्रकार प्रार्थना करके पूजन समर्पित करे- अनेन पूजनेन ब्रह्माद्यावाहित सर्वतोभद्रमण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।।

तत्पश्चात् वेदी के सामने या ऊपर कलश स्थापित करें -

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्त्वा व्विशन्त्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सानः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्माव्विशतादद्रयिः।

➲ वेदी के ऊपर कलश के ऊपर विष्णु इत्यादि जो भी प्रधान देवता हों स्वर्ण की प्रतिमा की अग्न्युत्तारण पृष्ठ संख्या १२५ में प्रधानदेवता प्रतिष्ठा पूजन विधि के अनुसार करें।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे सर्वतोभद्रमण्डलदेवानां स्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्)





चतुर्लिङ्गतोभद्र-मण्डल निर्माण-विधिः

सवा हाथ की चौकोर काठ की चौकी पर श्वेत वस्त्र बांधकर बराबर-बराबर १७-१७ खाने बनावे तथा पुस्तक के अन्त में दिये गये चतुर्लिङ्गतोभद्र वेदी चित्र के अनुसार उन खानों में रंगीन अक्षत से पूरित करके यज्ञ मण्डप अथवा पूजन स्थल के पूर्व भाग में, मध्य में रखकर आवाहन व पूजन करें। *(भैरव रुद्र या शिव जी के अनुष्ठान में महामृत्युञ्ज्य जप में अथवा इनके यज्ञ में इस वेदी का प्रधान वेदी के रूप में पूजन किया जाता है)*

व्रतोद्यापन चन्द्रिकानुसारेण

अथ चतुर्लिङ्गतोभद्र-मण्डल-देवानामावाहनं पूजनञ्च

➲ अक्षत छोड़ते हुए क्रमशः आवाहन करें।

पूर्वलिङ्गे-

१. लिङ्गस्य अधः भागे- ॐ भूर्भुवः स्वः वीरभद्राय नमः, वीरभद्रमावाहयामि, स्थापयामि।

२. लिङ्गस्य मध्यभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः शम्भवे नमः, शम्भुमावाहयामि, स्थापयामि।

३. लिङ्गस्य अग्रभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः अजैकपदे नमः, अजैकपादमावाहयामि, स्थापयामि।

दक्षिणलिङ्गे-

४. लिङ्गस्य अधः भागे- ॐ भूर्भुवः स्वः अहिर्बुध्न्याय नमः, अहिर्बुध्न्यमावाहयामि, स्थापयामि।

५. लिङ्गस्य मध्यभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः पिनाकिने नमः, पिनाकिनमावाहयामि, स्थापयामि।

६. लिङ्गस्य अग्रभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः शूलपाणये नमः, शूलपाणिमावाहयामि स्थापयामि।

पश्चिमलिङ्गे-

७. लिङ्गस्य अधःभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः भुवनाधीश्वराय नमः, भुवनाधीश्वर-मावाहयामि स्थापयामि।

८. लिङ्गस्य मध्यभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः कपालिने नमः, कपालिनमावाहयामि स्थापयामि।

९. लिङ्गस्य अग्रभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः दिक्पतये नमः, दिक्पतिमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरलिङ्गे-

१०. लिङ्गस्य अधःभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।

११. लिङ्गस्य मध्यभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाय नमः, शिवमावाहयामि स्थापयामि।

१२. लिङ्गस्य अग्रभागे- ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वराय नमः, महेश्वरमावायहामि स्थापयामि।

चतुष्पद-वल्यां हरितखंडे ईशानाद्यष्ट दिक्षु-

१३. ॐ भूर्भुवः स्वः असितांग-भैरवाय नमः, असिताङ्ग-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

१४. ॐ भूर्भुवः स्वः रुरु-भैरवाय नमः, रुरु-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

१५. ॐ भूर्भुवः स्वः चण्ड-भैरवाय नमः, चण्ड-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

१६. ॐ भूर्भुवः स्वः क्रोध-भैरवाय नमः, क्रोध-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

१७. ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्त-भैरवाय नमः, उन्मत्त-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

१८. ॐ भूर्भुवः स्वः काल-भैरवाय नमः, काल-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

१९. ॐ भूर्भुवः स्वः भीषण-भैरवाय नमः, भीषण-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

२०. ॐ भूर्भुवः स्वः संहार-भैरवाय नमः संहार-भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

शृंखला-समीपे त्रिपद-पीतवल्ल्यां ईशानाद्यष्टदिक्षु चतुर्विंशति देवता-

२१. ॐ भूर्भुवः स्वः भवाय नमः, भवमावाहयामि स्थापयामि।

२२. ॐ भूर्भुवः स्वः शर्वाय नमः, शर्वमावाहयामि स्थापयामि।

२३. ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।

२४. ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतये नमः, पशुपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२५. ॐ भूर्भुवः स्वः महते नमः, महान्तमावाहयामि स्थापयामि।

२६. ॐ भूर्भुवः स्वः भीमाय नमः, भीममावाहयामि स्थापयामि।

२७. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

२८. ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।

२९. ॐ भूर्भुवः स्वः तक्षकाय नमः, तक्षकमावाहयामि स्थापयामि।

३०. ॐ भूर्भुवः स्वः वासुकये नमः, वासुकिमावाहयामि स्थापयामि।

३१. ॐ भूर्भुवः स्वः कुलिशाय नमः, कुलिशमावाहयामि स्थापयामि।

३२. ॐ भूर्भुवः स्वः कर्कोटकाय नमः, कर्कोटकमावाहयामि स्थापयामि।

३३. ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खपालाय नमः, शङ्खपालमावाहयामि स्थापयामि।

३४. ॐ भूर्भुवः स्वः कम्बलाय नमः, कम्बलमावाहयामि स्थापयामि।

३५. ॐ भूर्भुवः स्वः अश्वतराय नमः, अश्वतरमावाहयामि स्थापयामि।

३६. ॐ भूर्भुवः स्वः शूलिने नमः, शूलिनमावाहयामि स्थापयामि।

३७. ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमौलिने नमः, चन्द्रमौलिमावाहयामि स्थापयामि।

३८. ॐ भूर्भुवः स्वः चन्द्रमसे नमः, चन्द्रमसमावाहयामि स्थापयामि।

३९. ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभध्वजाय नमः, वृषभध्वजमावाहयामि स्थापयामि।

४०. ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिलोचनाय नमः, त्रिलोचनमावाहयामि स्थापयामि।

४१. ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तिधराय नमः, शक्तिधरमावाहयामि स्थापयामि।

४२. ॐ भूर्भुवः स्वः महेश्वराय नमः, महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

४३. ॐ भूर्भुवः स्वः शूलधारिणे नमः, शूलधारिणमावाहयामि स्थापयामि।

४४. ॐ भूर्भुवः स्वः स्थाणवे नमः, स्थाणुमावाहयामि स्थापयामि।

मध्येकार्णिकायाम्–

४५. ॐ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

४६. उत्तर-शिवलिङ्गस्याधः– ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।

४७. ईशान्यां खण्डेन्दौ – ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

४८. पूर्वलिङ्गस्याधः– ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

४९. आग्नये खण्डेन्दौ –ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

५०. दक्षिणलिङ्गस्याधः– ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

५१. नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ– ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

५२. पश्चिमे लिङ्गस्याधः- ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

५३. वायव्यां खण्डेन्दौ- ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

५४. अष्ट रक्तभद्रे-वायुसोमयोर्मध्ये - ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि।

५५. सोमेशानयोर्मध्ये- ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादशरुद्रान् आवाहयामि स्थापयामि।

५६. ईशानेन्द्रयोर्मध्ये - ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यान् आवाहयामि स्थापयामि।

५७. इन्द्राग्नेययोर्मध्ये - ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।

५८. अग्नियमयोर्मध्ये - ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, विश्वदेवान् आवहयामि स्थापयामि।

५९. यमनिर्ऋतियोर्मध्ये - ॐ सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षान् आवाहयामि स्थापयामि।

६०. नैर्ऋत्य- वरुणयोर्मध्ये - ॐ भूर्भुवः स्वः भूतनागेभ्यो नमः, भूतनागान् आवाहयामि स्थापयामि।

६१. वरुणवायव्योर्मध्ये- ॐ भूर्भुवः स्वः गंधर्वाप्सराभ्यो नमः, गंधर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

उत्तरलिङ्गस्याधः-

६२. ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

६३. तत्रैव - ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः, नन्दीश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

६४. तत्रैव - ॐ भूर्भुवः स्वः शूलमहाकालाभ्यां नमः, शूलमहाकालौ आवाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मेशानयोर्मध्ये शृंखलायाम्–

६५. ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादि सप्तकाय नमः, दक्षादि सप्तकान् आवाहयामि स्थापयामि।

६६. पूर्वलिङ्गस्याधः– ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

६७. तत्रैव– ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्माग्नियोर्मध्ये शृंखलायाम्–

६८. ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

६९. दक्षिणलिङ्गस्याधः– ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगाभ्यां नमः, मृत्युरोगौ आवाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्म निर्ऋत्योर्मध्ये शृंखलायाम् –

७०. ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावहयामि स्थापयामि।

७१. पश्चिमलिङ्गस्याधः – ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मवायोर्मध्ये शृंखलायाम्–

७२. ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुत आवाहयामि स्थापयामि।

७३. ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकायाम्–

७४. तत्रैव – ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।

७५. ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरान् आवहयामि स्थापयामि।

७६. ब्रह्मणो मस्तके कर्णिकोपरि – ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

७७. उत्तर-लिङ्गे– ॐ भूर्भुवः स्वः सद्योजाताय नमः, सद्योजातमावाहयामि स्थापयामि।

७८. प्राच्यां-लिङ्गे– ॐ भूर्भुवः स्वः वामदेवाय नमः, वामदेवमावाहयामि स्थापयामि।

७९. दक्षिणलिङ्गे – ॐ भूर्भुवः स्वः अघोराय नमः, अघोरमावाहयामि स्थापयामि।

८०. प्रतीच्यां लिङ्गे– ॐ भूर्भुवः स्वः तत्पुरुषाय नमः, तत्पुरुषमावाहयामि स्थापयामि।

८१. कर्णिकायां मेरूपरि– ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

मध्य परिधौ (पीतवर्णे षोडशपदे) –

८२. ॐ भूर्भुवः स्वः परिधये नमः, परिधिमावहयामि स्थापयामि।

मेरोः परिधिः समन्तात् लिङ्गानां स्कन्धे विंशति रक्तकोष्ठेषु (पंचपदा पीतकोणेषु) –

८३. ॐ भूर्भुवः स्वः चतुःपुरीभ्यो नमः, चतुश्पुरीः आवहयामि स्थापयामि।

आग्नेयादिषु त्रिपद कोणेषु शृंखला शिरसि –

८४. ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेदाय नमः ऋग्वेदमावाहयामि स्थापयामि।

८५. ॐ भूर्भुवः स्वः यजुर्वेदाय नमः, यजुर्वेदमावाहयामि स्थापयामि।

८६. ॐ भूर्भुवः स्वः सामवेदाय नमः, सामवेदमावाहयामि स्थापयामि।

८७. ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय नमः, अथर्ववेदमावाहयामि स्थापयामि।

उत्तरलिंगस्य दक्षिणवापीमारभ्य वामवापीपर्यन्तासु पंचवाप्यां–

८८. ॐ भूर्भुवः स्वः भवाय नमः, भवमावाहयामि स्थापयामि।

८९. ॐ भूर्भुवः स्वः शर्वाय नमः, शर्वमावाहयामि स्थापयामि।

९०. ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपतये नमः, पशुपतिमावाहयामि स्थापयामि।

९१. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

९२. ॐ भूर्भुवः स्वः उग्राय नमः, उग्रमावाहयामि स्थापयामि।

९३. ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।

९४. ॐ भूर्भुवः स्वः भीमाय नमः, भीममावाहयामि स्थापयामि।

९५. ॐ भूर्भुवः स्वः महते नमः, महान्तमावाहयामि स्थापयामि।

वापीसमीपस्थैकै कपदेषु पीतवर्णेषु क्रमशः–

९६. ॐ भूर्भुवः स्वः भवान्यै नमः, भवानीमावाहयामि स्थापयामि।

९७. ॐ भूर्भुवः स्वः शर्वाण्यै नमः, शर्वाणीमावाहयामि स्थापयामि।

९८. ॐ भूर्भुवः स्वः पशुपत्यै नमः, पशुपतिमावाहयामि स्थापयामि।

९९. ॐ भूर्भुवः स्वः ईशान्यै नमः, ईशानीमावाहयामि स्थापयामि।

१००. ॐ भूर्भुवः स्वः उग्रायै नमः, उग्रामावाहयामि स्थापयामि।

१०१. ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राण्यै नमः, रुद्राणीमावाहयामि स्थापयामि।

१०२. ॐ भूर्भुवः स्वः भीमायै नमः, भीमामावाहयामि स्थापयामि।

१०३. ॐ भूर्भुवः स्वः महत्यै नमः, महतीमावाहयामि स्थापयामि।

पूर्वादिक्रमेण परिधि समीपे-

१०४. पूर्वे- ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वीतत्त्वाय नमः, पृथिवीतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०५. दक्षिणे- ॐ भूर्भुवः स्वः जलतत्त्वाय नमः, जलतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०६. पश्चिमे- ॐ भूर्भुवः स्वः तेजस्तत्त्वाय नमः, तेजसतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०७. उत्तरे- ॐ भूर्भुवः स्वः वायुतत्त्वाय नमः, वायुतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

१०८. मध्ये- ॐ भूर्भुवः स्वः आकाशतत्त्वाय नमः, आकाशतत्त्वम् आवाहयामि स्थापयामि।

बाह्यश्वेत-परिधौ उत्तरत सोमारभ्य वायुपर्यन्तमायुधानि-

१०९. ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।

११०. ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

१११. ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

११२. ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

११३. ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

११४. ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

११५. ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।

११६. ॐ भूर्भुवः स्वः अंकुशाय नमः, अंकुशमावाहयामि स्थापयामि।

तद्बाह्ये रक्तपरिधौ उत्तरतः क्रमेण–

११७. ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।

११८. ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।

११९. ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

१२०. ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

१२१. ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जगदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

१२२. ॐ भूर्भुवः स्वः वशिष्ठाय नमः, वशिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

१२३. ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

१२४. ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

तद्बाह्ये कृष्ण परिधौ उत्तरतः क्रमेण–

१२५. ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

१२६. ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

१२७. ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

१२८. ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

१२९. ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः, चमुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

१३०. ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

१३१. ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

१३२. ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायिक्यै नमः, वैनायिकीमावहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा-मन्त्रः

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टम्।
यज्ञ ꣳ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलदेवताः सुप्रतिष्ठताः वरदा भवन्तु।

चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डल का रुद्रसूक्त मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करें।

प्रार्थना

यस्याङ्के च विभाति भूधरसुता देवापगामस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूति-विभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
सर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशङ्करः पातु माम्।।

हस्ते जलमादाय- **अनेन कृतेन यथोपचार पूजनेन श्रीचतुर्लिङ्गतोभद्र-मण्डलदेवताः प्रीयन्तां न मम।** इति जलं क्षिपेत्।

तत्पश्चात् कलश स्थापन करके उसके ऊपर शिव स्वर्णप्रतिमा का अग्न्युत्तारण पूर्वक प्रतिष्ठा तथा पूजन करे, प्रधान देवता पूजन के अनुसार करे।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलदेवानां स्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्।)



शंख-पूजनम्

❑ किसी आसन पर शंख को रखकर चंदन से 'ॐ' या स्वस्तिक बनाकर प्रधान देवता के दाहिनी ओर शंख में जल भरकर रखें और पुष्प लेकर शंखदेवता का ध्यान आवाहन करें-

ॐ अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्। उपयामगृहीतोऽस्यग्नये त्वा वर्चस एष ते योनिरग्नये त्वा वर्च्चसे।।

शङ्खं चन्द्रार्क दैवत्यं मध्ये वरुण दैवतम् ।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वतीम् ।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र! तस्मात् शंखं प्रपूजयेत् ।।

ॐ शंखस्थ देवतायै नमः (शंख में पुष्प चढ़ा देवे)।

तत्पश्चात् गन्ध, अक्षत, पुष्प समर्पित करें–

ॐ शंखस्थ देवतायै नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि।।

घण्टा-पूजनम्

- प्रधान देवता के बायीं ओर घण्टा (घण्टी) रखकर अक्षत पुष्प लेकर घण्टा देवता का पूजन करें–

ॐ सुपर्णोऽसि गरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दा गुं स्टाङ्गानि यजू गुं षि नाम। साम ते तनूर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः। सुपर्णोऽसि गुरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पत।।

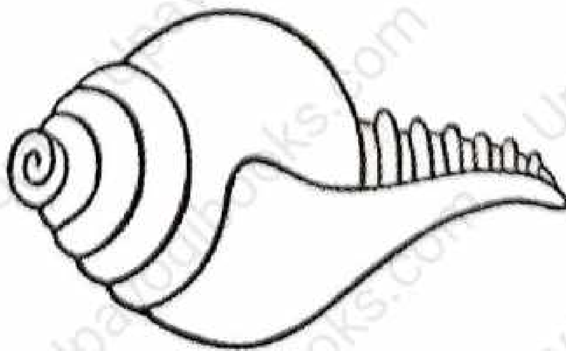
आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम्।
कुर्वे घण्टारवं तस्माद् देवताह्लाद-कारकम्।।

ॐ घटायैनमः। (अक्षत पुष्प घण्टा में चढ़ा देवे।)

तत्पश्चात् – **सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि** - कहते हुए गन्ध, अक्षत, पुष्प घण्टा में चढ़ा देवे, घण्टा निनाद भी करें।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे शंखघण्टा पूजनम् सम्पूर्णम्।)







अथ प्रधानदेवता-प्रतिष्ठा-पूजनञ्च

➲ सर्वतोभद्र अथवा लिङ्गतोभद्र पीठ के मध्य में रचित अष्टदल कमल में विधि पूर्वक ताम्रकलश स्थापित करके विधिवत पूजन तथा प्रार्थना करके पूर्ण पात्र के ऊपर प्रधान देवता का यंत्र (ताम्र या भोजपत्र में स्वयं बनाकर) स्थापित करें, उसके ऊपर प्रधान देवता की स्वर्णादि धातुमयी प्रतिमा को अग्न्युत्तारण प्रतिष्ठा करके स्थापित कर पूजन करना चाहिए।

संकल्प-

देशकालौ संकीर्त्य.....गोत्रोत्पन्नः....... नामाहं मम अमुकदेवता प्रीतिलाभाय अमुक अनुष्ठान कर्म सिद्ध्यर्थम् अमुक देवस्य स्वर्णमयी/रजतमयी/ताम्रमयी वा प्रतिमायाः घटनकालिक स्वर्णकारकृत टंकाद्याघातदोषपरिहारार्थम् अग्न्युत्तारणपूर्वकं आवाहनं प्राणप्रतिष्ठा पूजनं च करिष्ये।

☐ मूर्ति पर घृत लेप करके अग्नि में तपाकर किसी थाली में रखकर जलधारा करें।

जलधारा मंत्राः

ॐ समुद्रस्य त्वा वकयाग्ने परिव्ययामसि। पावकोऽ-अस्मभ्य गुं शिवो भव।।१।। हिमस्य त्वा जरायुणाग्ने परि-व्ययामसि पावकोऽअस्मभ्य गुं शिवो भव।।२।। उपज्मनुपवेतसे वतरनदीष्वा अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिराग हिसेमन्नो यज्ञम्पावक वर्ण गुं शिवङ्कृधि।।३।। अपामिदन्न्यन गुं समुद्रस्य निवेशनम्। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य गुं शिवोभव।।४।। अग्ने पावकरोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आदेवान्वक्षि यक्षि च।।५।। स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ इहावह। उपयज्ञ गुं हविश्वनः।।६।। पावकया यश्चिन्त्या

कृपाक्षामन् रुरुच उषसो न भानुना। तूर्वन्नयामन्नेतशस्य नूरण आयो घृणेन ततृषाणोऽजरः।।७।। नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य गुं शिवोभव।।८।। नृषदेवेडप्सुषदेवेड् वर्हिषदेवेड् वनसदेवेड् स्वर्विदेवेड्।।९।। ये देवा देवानां यज्ञियाना गुं संव्वत्सरीणामुप भागमासते आहुतादो हविषा यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य।।१०।। ये देवा देवेष्वधिदेवत्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य। येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधिस्नुषु।।११।। प्राणदा अपानदा व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्य गुं शिवो भव।।१२।।

➲ जलधारा के पश्चात् मूर्ति को पंचगव्य से शुद्ध करके जल से स्नान कराकर किसी दूसरे पात्र में रखकर आवाहन करें।

आवाहनम्

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।
स चेतसो विश्वेदेवा यज्ञं प्रावन्तुं नः शुभेः।।

आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहे।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक[1] देवताभ्यो नमः आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि।।

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः-सामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुः प्राणाख्या

१. अमुक के स्थान में प्रधान देवता विष्णु, शिव, देवी अथवा जो भी प्रधान देवता हों उनका नामोच्चारण करें।

देवता, आं बीजम् , ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं देवे प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

प्रतिष्ठा – पुष्प से मूर्ति का स्पर्श करते हुए प्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्यां मूर्तौ प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोऽहं अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः सोहं अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनः त्वक् चक्षुः श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-पाणि-पाद-पायु-उपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।।

पुष्प चढ़ाकर अक्षत चढ़ावें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुं समिमंदधातु विश्वेदेवा स इहमादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

प्रतिष्ठा करके मूर्ति के दाहिने कान में १६ बार **ॐ** मंत्र का उच्चारण करके स्पर्श करे और कहे – **'अस्यां मूर्तौ गर्भाधानादयः षोडशसंस्काराः सम्पद्यन्ताम्''** तत्पश्चात् स्वर्णशलाका से मधु घी द्वारा नेत्रों में नेत्रोन्मीलन की कल्पना करें – **ॐ वृत्रस्यसि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि** – वाक्य पढ़ें। इस प्रकार प्रतिष्ठा करके प्रधान वेदी के ऊपर स्थापित कलश के ऊपर सिंहासन में मूर्ति को स्थापित कर देवे तत्पश्चात् पूजन करें।

आसनम् – आसन के लिए पुष्प समर्पित करें

ॐ यविष्ठदाशुषो नृ गुं पाहि शृणुधी गिरः रक्षातोकमुत्मना।।

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम्।
आसनञ्च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

ध्यानम् – अक्षत पुष्प लेकर हांथ जोड़कर ध्यान करें।

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमि गुं सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।

ॐविश्वम्भर जगन्नाथ त्रैलोक्याधिपति प्रभो।
पूजां गृहाण विश्वेश श्रद्धाभक्ति समन्वितम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि।

पाद्यम् – आचमनी से २ बार जल चढ़ावें।

एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य व्विश्श्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम्।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिग्रह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यः – किसी पात्र में अक्षत, दूर्वा, गंध, चंदन, पुष्प, जल लेकर अर्घ्य देवें

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा-भवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्क्रा मत्साशनानशनेऽअभि।।

ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम् – आचमन के लिए तीन आचमनी जल समर्पित करें

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः।।

१. अमुकदेवताभ्यो के स्थान में प्रधान देवता के नाम का उच्चारण करें। यथा – विष्णवे, शिवाय, दुर्गायै इत्यादि।

ॐ सर्वतीर्थसमायुक्त सुगन्धिनिर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि।

स्नानम् – पवित्र जल से स्नान करावें

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्ज्जे दधातन, महेणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ, आपो जनयथा च नः।।

ॐ गङ्गा–सरस्वतीरेवा–पयोष्णी–नर्मदाजलैः।
स्नापितोसि मया देव ह्यतः शान्तिं कुरुष्व मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

(शीघ्रता की स्थिति में पञ्चामृत के दुग्धादि पदार्थों में मिश्रित करके एक साथ स्नान कराएं।)

एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानम् –

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेभवत्सरित्।।

ॐ पयो दधि घृतं चैव मधुशर्कर्यान्वितम्।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, एकतन्त्रेण पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि। (पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें)

➲ दुग्धादि पञ्चामृत के पदार्थों से पृथक् पृथक् स्नान के मंत्र

दुग्धस्नानम् -

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः। पयः स्नानं समर्पयामि। पयः स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि। (पुनः शुद्ध जल से स्नान करायें)

दधिस्नानम् -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू गुं षि तारिषत्।।

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, दधिस्नानं समर्पयमि। दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (पुनः शुद्ध जल से स्नान करावें)

घृतस्नानम् -

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत व्वसां व्वसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

ॐ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोष-कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, घृतस्नानं समर्पयामि। घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान करावें)

मधुस्नानम् -

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गुं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

ॐ पुष्परेणुसमुत्पन्नं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, मधुस्नानं समर्पयामि। मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि। (पुनः शुद्धोदक से स्नान कराये)

शर्करास्नानम् -

ॐ अपा गुं रसमुद्वयस गुं सूर्ये सन्त गुं समाहितम्। अपा गुं रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।

ॐ इक्षुरससमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि। शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि।

* पुनः शुद्ध जल से स्नान कराकर निर्माल्य विसर्जित करके प्रधान देव प्रतिमा का उनके सूक्त मंत्रों से अभिषेक स्नान करावे। (पुनः शुद्ध जल से स्नान करावें।)

शुद्धोदकस्नानम् -

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः। श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णाया मा अवलिप्ता रौद्रा नभो रूपाः पार्जन्याः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदक-स्नानान्ते आचमनीयं समर्पयामि। (तत्पश्चात् प्रतिमा पोंछकर सिंहासन में स्थापितकर पूजन करें।)

वस्त्रोपवस्त्रम् – दो वस्त्र चढ़ावें

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्। सऽउ श्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि। तदन्ते आचमनीयं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत – जनेऊ चढ़ावें

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत अर्पण करे, पुनः दो आचमनी जल समर्पित करें।)

गन्ध (चंदनम्) – (केसरमिश्रित चन्दन का लेप करें अभाव में कुंकुम, हल्दी चढ़ावें)

ॐ त्वाङ्गधर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वाँ बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वाँन्यक्ष्मादमुच्यत्।।

ॐ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नम, गन्धं समर्पयामि।

अक्षताः – (अक्षत चढ़ावें।)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मतीयो जान्वेन्द्रते हरी।।

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पाणि पुष्पमाला च – (पुष्प और पुष्पमालाओं से अलङ्कृत करें।)

ॐ ओषधीः प्रतिमोदद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव स जित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयानीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, पुष्पाणि पुष्पमालां च समर्पयामि।

दूर्वा – (दूर्वाङ्कुर समर्पित करें।)

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमल-द्रव्याणि – (अबीर, हरिद्रा चूर्णादि अर्पित करें।)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुञ्याया हेतिम्परिबाधमनः। हस्तग्घ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमा गुं सम्परिपातु व्विश्वतः।।

ॐ श्वेतचूर्ण-रक्तचूर्ण-हरिद्रा-कुंकुमान्वितैः।
नाना-परिमल-द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, अबीर-गुलालादि-नानापरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि।

सिन्दूरम् – (सिन्दूर चढ़ाए)

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्व्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

ॐ सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं प्रियवर्धनम् ।
सुखदं मोक्षदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

सुगन्धित-द्रव्यम् – (सुगन्धित द्रव्य लगाएं)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

पुष्पैः पुष्पसारैश्च निर्मितं पुष्टिकारकम्।
सुगिन्धतमिदं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

धूपम् – (बांए हांथ से घण्टा बजाते हुए, धूप आघ्रापित करे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वन्तं योस्मान्धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि बह्नितम गुं सस्नितमम्पप्रितमञ्जुष्टतमन्देवहूतम्।।

ॐ वनस्पतिरसोद् भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम् – (बांए हांथ से घण्टी बजाते हुए, घृत का दीप दिखावें।)

ॐ अग्निर्ज्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्योज्ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा, सूर्य्यो व्वर्चो ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

ॐ आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, नेत्रादिपाद पर्यन्तं दीपं दर्शयामि। (दीपक दिखाने के बाद हाथ धो लेवे।)

नैवेद्यम् - (भोग के निमित्त अनेक प्रकार के मिष्ठान्नादि नैवेद्य निवेदित करें।)

ॐ अन्नपतेन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्रदातारं तारिषऽऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ शर्करा-खण्डखाद्यानि-दधि-क्षीर-घृतादिभिः।
आहारं भक्ष्य-भोज्यञ्च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।
नैवेद्य गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्रेह परां गतिम् ।।

(नैवेद्य सामने रखकर गायत्री मंत्र या तद् देवता का मूलमंत्र जपते हुए नैवेद्य पात्र में (विष्णु के तुलसी दल, शिव को विल्वपत्र तथा अन्य देवता में पुष्प) रखकर अधोमुख दाहिने हांथ के ऊपर वाम हस्त रखकर नैवेद्य को अच्छादित करे (ढके) तत्पश्चात् धेनु (सुरभी) मुद्रा दिखाकर पांच ग्रास मुद्रा प्रदर्शित करें।)

१. **ॐ प्राणाय स्वाहा** – कनिष्ठिका, अनामिका और अंगूठा मिलाये।

२. **ॐ अपानाय स्वाहा** – अनामिका, मध्यमा और अँगूठा मिलाये।

३. **ॐ व्यानाय स्वाहा** – मध्यमा, तर्जनी और अँगूठा मिलाये।

४. **ॐ उदानाय स्वाहा** – तर्जनी, मध्यमा, अनामिका और अंगूठा मिलाये।

५. **ॐ समानाय स्वाहा** – सब अँगुलियाँ मिलाये।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। इति ग्रासमुद्रया नैवेद्यं समर्प्य अन्तःपटं दत्त्वा घण्टां वामहस्तेन वादयन्। पूर्वापोशनं समर्पयामि। नैवेद्यमध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोशनं समर्पयामि। ततः सपरिवारं देवं तृप्तं विभाव्य हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि। मुखप्रक्षालनं समर्पयामि। आचमनीयं जलं च समर्पयामि। (नैवेद्य निवेदित करे तथा पानीय जल अर्पित करे, पुनः आचमनीय जल अर्पित करे।)

करोद्वर्तनार्थे गन्धम् – (दोनों हाथ के अनामिका अंगुष्ठ से चंदन छिड़कें)

ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

अष्टगन्ध समायुक्तं चन्दनं चारुशीतलम्।
निर्मितं तु मया देव, करोद्वर्त्तन मया कुरु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, करोद्वर्त्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि – (अनेक प्रकार के ऋतुफल समर्पित करें।)

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व गुं हसः।।

ॐ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, नाना-ऋतुफलानि समर्पयामि।

ताम्बूलम् – (इलायची, लवंग तथा पूगीफल युक्त ताम्बूल अर्पित करें।)

ॐ उतस्माद् द्रवतस्तुरण्यतः पर्णन्नवेरनुवाति प्रगर्द्धिनः। श्येनस्येवद् ध्रजतोऽअङ्कसम्परि दधिक्राब्णः सहोर्ज्जा तरित्रतः स्वाहा।।

ॐ पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, मुखवासार्थे एलालवाङ्ग-पूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि।

दक्षिणा – (द्रव्य दक्षिणा अर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

ॐ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, सुवर्ण-पुष्पदक्षिणां (तदभावे किञ्चिद् व्यावहारिकं द्रव्यं वा) समर्पयामि।

कर्पूरारार्तिक्यम् – (कपूर का दीपक जलाकर आरती करें। शंख, घण्टा बजाएं।)

ॐ आरार्तिपार्थिव गुं रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा गुं सि बृहती वितिष्ठ स आत्त्वेषं वर्त्तते तमः।।

ॐ कदलीगर्भ सम्भूतं कर्पूरञ्च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, कर्पूरार्तिक्यं दर्शयामि। जलेन मण्डलीकरणं पुष्पैः देववन्दनं, आत्मवन्दनं आर्तिक्य ग्रहणं, हस्तं प्रक्षाल्य।

प्रदक्षिणा– (अपने स्थान पर ही प्रदक्षिणा करें।)

ॐ यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः –

(हाथ में पुष्प लेकर खड़े होकर मंत्र पढ़कर पुष्पाञ्जलि देवे)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

नाना सुगंध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, पुष्पं समर्पयामि। इति पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा प्रणमेत् ।

विशेषार्घः -

(अर्घपात्रे जलं प्रपूर्यं गन्धाक्षत पुष्पसहितं नारिकेलं पूगीफलं वा धृत्वा)

ॐ नमस्ते देवदेवेश नमस्ते धरणीधर।
नमस्ते जगदाधार अर्घ्यं नः प्रतिगृह्यताम् ।।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।
अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना -

गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुखसम्पत्तिः पुण्योऽहं तव दर्शनात्।
पुराकृतं मया घोरं ज्ञातमज्ञातकिल्विषम्।
यन्मयाद्यदिनं यावत् तस्मात्पापात्पुनीहि माम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।।

पूजार्पणम् -

हस्ते जलं गृहीत्वा - **ॐ अनेन यथाज्ञानेन यथामिलितोपचारद्रव्यैः ध्यानावाहनासन-पाद्यार्घाचमनीय-स्नान-वस्त्रोपवीत गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूल-दक्षिणा-प्रदक्षिणा-मन्त्र-पुष्परूपैः षोडशोपचारैः अन्योपचारैश्च कृतेन पूजनेन श्रीअमुकदेवताः प्रीयन्तां न मम।।** इति जलं

क्षिपेत्। एतान्यर्चनानि पाद्यार्घ्य स्नान-वस्त्रादि-पुष्पाञ्जलि-विशेषार्घान्तानि परिपूर्णानि भवन्तु।।

- प्रधान देवता के पूजन में शिव में रुद्रसूक्त, दुर्गा एवं लक्ष्मी में श्रीसूक्त तथा विष्णु इत्यादि देवताओं के पूजन में पुरुष सूक्त के मंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे प्रधानदेवता-प्रतिष्ठा-पूजनञ्च समाप्तम्)



- **इस प्रकार प्रधान देवता का पूजन करके जो भी मंत्र जप, स्तोत्र पाठ, चण्डी पाठ इत्यादि अनुष्ठान संकल्पित हो उसका जपादि विहित संख्या में ब्राह्मण करें, तत्पश्चात् हवन करना चाहिए।**

इन्द्रध्वज-पूजनम्

- सप्तरंगा अथवा रक्तवर्णीय सवा हांथ विस्तार वाले ध्वज को सुन्दर किनारे से सुशोभित करके उसके मध्य में कुंकुम से ॐ या 卐 (स्वस्तिक) बनाकर पूजन करें।
- बाएँ हाथ में अक्षत लेकर दाहिने हाथ से इन्द्रध्वज में छिड़कते हुए पूजन करे।

आवाहन-

ॐ त्रातारमिन्द्र मवितार मिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं सूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरूहूतमिन्द्र गुं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ इन्द्रध्वाजाय नमः। (इस मंत्र से जल, गन्ध, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफल, आचमन, पान, सुपारी, दक्षिणा, चढ़ाकर ध्वज की पूजा करके प्रार्थना करें।)

प्रार्थना– अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़े

ॐ इममारक्तवर्णन्तु तथा हस्तसुविस्तृतम्।
इन्द्रध्वजं चालभामि महेन्द्राय सुप्रीतये।।

अमुमिन्द्रध्वजं चित्रं सर्व-विघ्न-विनाशकम् ।
अस्मिन् मण्डप पार्श्वे तु स्थापयामि सुरार्चने।।

ॐ इन्द्रध्वजाय नमः, प्रार्थना-पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि। अनया पूजया इन्द्रध्वज देवता प्रीयतां न मम।।

- इन्द्रध्वज का पूजन करके यज्ञ मण्डप या पूजन कक्ष से बाहर पूर्व या ईशान दिशा में सवा हांथ गड्ढा खोदकर उसमें जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प, सुपाड़ी, द्रव्य इत्यादि छोड़कर १५ हांथ लम्बे नये सीधे बांस में झण्डा लगाकर गाड़ देना चाहिए।
- झण्डा गाड़ने के बाद प्रतिदिन यथोपचार उसका पूजन करे, एक वर्ष बीत जाने पर उसी तिथि में पुनः हवन ब्राह्मण भोजन कराकर झण्डे का बांस उखाड़ना चाहिए।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे इन्द्रध्वज-पूजनं सम्पूर्णम्।)

□□



अथ हवन-विधिः

यजमान पवित्र, आचमन, तिलक, पवित्रीधारण, शिखाबन्धन करके स्वस्तिवाचन, मंगलश्लोक पाठ पूर्वक होम का संकल्प करे।

संकल्पः – (कुशाक्षत, जल, द्रव्य लेकर संकल्प करे।)

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ... (देशकालौ संकीर्त्य) ... गोत्रः ... नामाहं मया क्रियमाणस्य अमुक-कर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थं निर्मितेऽस्मिन्कुण्डे कुण्डस्थ-देवानामावाहन-पूजनं पंचभूसंस्कारपूर्वकं अग्निस्थापनं-पूजनं होमविधिमनुसृत्य कृतस्य अमुकमंत्रजपस्य (अमुकपाठस्य) परिपूर्णतायै दशांशसंख्याभिः (यथाहुतिभिर्वा) यथोपलब्ध समित्तिल-तण्डुलयवाज्यभिः होम-सामग्रीभिश्च हवनं करिष्ये।

अथ कुण्ड-पूजनम्

- यदि कुण्ड का निर्माण किया गया हो तभी कुण्ड पूजन करें। स्थण्डिल इत्यादि में कुण्ड पूजन की आवश्यकता नहीं होती।
- कुण्ड में जल का सिञ्चन करें

ॐ आपोहिष्ठ्ष्ठामयो भुवस्तान ऊर्ज्जे दधातन। महेरणाय चक्षसे। ॐ योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिवमातरः। ॐ तस्म्माऽअरङ्ग यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जन यथा च नः।।

आवाहनम्– (कुण्ड का स्पर्श करते हुए आवाहन करें।)

आवाहयामि तत्कुण्डं विश्वकर्म–विनिर्मितम् ।
शरीरं यच्च ते दिव्यमग्न्यधिष्ठानमद्भुतम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डाय नमः, कुण्डमावाहयामि स्थापयामि।

कुण्डमध्ये विश्वकर्माणमावाहयेत् –

ॐ व्विश्श्वकर्म्मन्हविषा व्वर्द्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यवम्। तस्म्मै व्विशः समनमन्त-पूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्यो यथासत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

मेखलादेवतानामावाहनम् –

उपरिमेखलायाम् श्वेतवर्णालंकृतायां विष्णु आवाहनम्-

ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्य पाᳪ सुरे स्वाहा।।

विष्णो यज्ञपते देव दुष्टदैत्यनिषूदन।
विभो यज्ञस्य रक्षार्थं कुण्डे सन्निहितो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

मध्यमेखलायां रक्तवर्णालङ्कृतायां ब्रह्माऽवाहनम् –

ॐ ब्रह्म-जज्ज्ञानम्प्रथमम्पुरस्त्ताद्विसी-मतः सुरुचो व्वेनऽ-आवः। सबुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य व्विष्ठ्ठाः सतश्च योनिम सतश्च व्विवः।।

हंसपृष्ठसमारूढ आदिदेव जगत्पते।
रक्षार्थं मम यज्ञस्य मेखलायां स्थिरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।

अधो मेखलायां कृष्णवर्णालङ्कृतायां रुद्रावाहनम्-

ॐ नमस्त्ते रुद्द्र मन्न्यव ऽउतोत इषवे नमः। बाहुब्भ्यामुतते नमः।।

गङ्गाधर महादेव वृषारूढ महेश्वर।
आगच्छ मम यज्ञेऽस्मिन्रक्षार्थं राक्षसां गणात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

योन्यावाहनम्-

ॐ क्षत्रस्य योनिरसि क्षत्रस्य नाभिरसि। मात्त्वा हि ꣳ सीन्माहि ꣳ सीः।।

आगच्छ देवि कल्याणि जगदुत्पत्तिहेतुके।
मनोभवयुते रम्ये योनि त्वं सुस्थिरा भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जगदुत्पत्तिकायै मनोभवयुतायै योन्यै नमः, योनिमावाहयामि स्थापयामि।।

कुण्डस्य कण्ठे रुद्रावाहनम्-

ॐ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिव ꣳ रुद्द्राऽउपश्श्रिताः। तेषा ꣳ सहस्त्र-योजनेवधन्वानि तन्मसि।। नीलग्ग्रीवाःशितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः। तेषा ꣳ सहस्त्र-योजनेवधन्वानि तन्मसि।।

कुण्डस्य कण्ठदेशोऽयं नीलजीमूतसन्निभः।
अस्मिन्नावाहये रुद्रं शितिकण्ठं कपालिनम् ।।

कुण्ड मङ्गलरूपेण सर्वकुण्डे प्रतिष्ठितः।
परितोमेखलास्त्वत्तो रचिता विश्वकर्मणा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कण्ठे रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।

कुण्डमध्ये नाभ्यावाहनम् -

ॐ नाभिर्म्मे चित्तं व्विज्ञानपायुर्म्मे पचितिर्ब्भसत् । आनन्द-नन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्ग्यम्पसः। जङ्घाभ्याम्पद्भ्यां धर्म्मोसि व्विशि राजा प्प्रतिष्ठितः।।

पद्माकाराऽथवा कुण्ड-सदृशाकृति-बिभ्रती।
आधारः सर्वकुण्डानां नाभिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः नाभ्यै नमः, नाभिमावाहयामि स्थापयामि।।

कुण्डाभ्यन्तरे नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषावाहनम्–

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्स्वावेशो ऽअनमीवो भवान:। यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

आवाहयामि देवेशं वास्तुदेवं महाबलम्।
देवदेवं गणाध्यक्षं पाताल–तलवासिनम्।।

ॐ भूर्भुव: स्व: नैर्ऋत्यकोणे वास्तुपुरुषाय नम:, वास्तुपुरुषमावाहयामि स्थापयामि।। (इस प्रकार आवाहन करके प्रतिष्ठा करें।)

प्रतिष्ठा–

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ᳚ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोंऽ३ प्रतिष्ठ।।

ॐ भूर्भुव: विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ता: सर्वे कुण्डस्थदेवा: सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

ॐ भूर्भुव: स्व: विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्य: कुण्डस्थदेवेभ्यो नम:। अथवा पुरुषसूक्त मन्त्रों से कुण्ड के आवाहित सभी देवताओं का एक तंत्र से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

प्रार्थना–

ब्रह्म वक्त्रं भुजौ क्षत्रमूरू वैश्य: प्रकीर्तित:।
पादौ यस्य तु शूद्रो हि विश्वकर्मात्मने नम:।।१।।

अज्ञानाज्ज्ञानतो वापि दोषा: स्यु: खननोद्भवा:।
नाशय त्वमखिलाँस्ताँस्तु विश्वकर्मन्नमोऽस्तु ते।।२।।

शङ्ख–चक्र–गदा–पद्म, वनमाला विभूषित:।
यज्ञकाले प्रसीद त्वं, मेखलायां श्रिय:पति:।।३।।

सचतुर्वदनो ब्रह्मा, पद्मासनगत: शुभ:।
अविघ्नायार्चितोऽसि त्वं प्रसीद परमेश्वर:।।४।।

नीलकण्ठोऽम्बिकानाथस्त्वं हि रुद्रश्च शङ्करः।
अधस्थो मेखलायां हि वरदो गरपः शिवः।।५।।

सेवन्ते महतीं योनिं देवर्षि-सिद्धमानवाः।
चतुरशीति-लक्षाणि पन्नगाद्याः सरीसृपाः।।६।।

पशवः पक्षिणः सर्वे संसरन्ति यतो भुवि।
योनिरित्येव विख्याता जगदुत्पत्तिहेतुका।।७।।

मनोभवयुता देवी रतिसौख्य-प्रदायनी।
मोहयित्री सुराणाञ्च जगद्धात्रि नमोऽस्तु ते।।८।।

योने त्वं विश्वरूपाऽसि प्रकृतिर्विश्व-धारिणी।
कामस्था कामरूपा च विश्वयोन्यै नमो नमः।।९।।

नाभे त्वं कुण्डमध्ये तु सर्वदेवैः प्रतिष्ठिता।
अतस्त्वां पूजयामीह शुभदा सिद्धिदा भव।।१०।।

यस्य देहे स्थिता क्षोणी ब्रह्माण्डं विश्वमङ्गलम् ।
व्याापिनं भीमरूपञ्च सुरूपं विश्वरूपिणम् ।।११।

पितामहसुतं मुख्यं वन्दे वास्तोष्पतिं प्रभुम्।
वास्तुपुरुष देवेश सर्वविघ्नहरो भव।।१२।।
शान्तिं कुरु सुखं देहि सर्वान्कामान् प्रयच्छ मे।।१३।।

➲ उक्त प्रार्थना बड़ी है संक्षेप में निम्नलिखित मात्र एक श्लोक से भी प्रार्थना कर सकते हैं।

अथवा

ये च कुण्डे स्थिता देवाः कुण्डाङ्गे याश्च देवताः।
ऋद्धिं यच्छन्तु ते सर्वे यज्ञसिद्धिं ददन्तु नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुण्डस्थदेवताभ्यो नमः, प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

बलिदानम्

(कुण्ड के बाहर समीप में किसी पत्ते में दधि, भात रखकर बलि देवें।)

हाथ में जल लेकर- **ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्तेभ्यः कुण्डस्थदेवेभ्यो नमः, अमुं दध्योदनबलिं समर्पयामि।** - बलि पदार्थ के सामने जल गिरा देवें।

हांथ में जल लेकर- **अनेन विश्वकर्मादिवास्तुपुरुषान्ताः सर्वे कुण्डस्थदेवाः प्रीयन्तां न मम।** (ऐसा कहकर जल गिरावें।)

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे कुण्ड-पूजनम् सम्पूर्णम्।)

पञ्चभूसंस्काराः

❑ सभी पूजनादि यज्ञानुष्ठान कर्म के बाद हवन करना चाहिए। हवनार्थ अग्निस्थापन से पूर्व पंचभू संस्कार अवश्य करें।

त्रिभिः त्रिभिः कुशैः परिसमूह्य, तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य, गोमयोदकेनोपलिप्य, स्रुवेणोल्लिख्य, अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य, जलेनाऽभ्युक्ष्य।।

१. **(कुशैः परिसमूह्य)** तीन-तीन कुश समूह को तीन बार लेकर हवनीय वेदी स्थण्डिल (कुण्ड) को एक-एक से क्रमशः पोंछकर (झाड़कर) ईशान कोण में फेंक देवें।

२. **(गोमयेनोपालिप्य)** गाय के गोबर में जल मिलाकर लीपें।

३. **(त्रिरुल्लिख्य)** स्रुव से प्रादेशमात्र की तीन रेखाएं पश्चिम से पूर्व की ओर लम्बी दक्षिण से आरम्भ कर उत्तर तक खींचे।

४. **(मृदमुद्धृत्य)** दायें हाथ के अनामिका और अंगुष्ठ से उन रेखाओं से तीन बार मिट्टी निकालकर ईशान कोण में फेंक देवें।

५. **(जलेन अभ्युक्ष्य)** दाहिने हाथ के चुल्लू में पानी लेकर न्युब्ज हाथ करके जल सिंचन करें।

❑❑

अग्निस्थापनम्

- कांस्य या ताम्रादि पात्र में सौभाग्यवती स्त्री या श्रौत्रिय ब्राह्मण द्वारा प्रज्वलित अग्नि अन्य पात्र से ढककर अग्नि कोण में लाकर रखें उसमें से एक जलता हुआ अग्नि खण्ड- ॐ हुं फट् -कहकर क्रव्यादांश के रूप में नैऋत्य कोण की ओर फेंक देवें तत्पश्चात् अग्नि को यजमान को दे देवे।
- यजमान अपने दोनों हाथों से अग्निकुण्ड या स्थण्डिल में तीन बार प्रदक्षिण क्रम से अग्नि को घुमाकर स्वात्माभिमुख अग्नि स्थापित करें। अग्नि रक्षा हेतु हवनीय काष्ठ लगा देवें। जिस पात्र से अग्नि लाई गई है उसमें यजमान अक्षत तथा द्रव्य डालकर अग्नि लाने वाले को दे देवे।

अग्नि-स्थापन-मन्त्रः

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे देवाँ२। आसादयादिह।। ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा वद्धो वृषभो रोरवीति महो मर्त्या गुं आविवेश।

ॐ रक्त माल्याम्बर धरं रक्त पद्मासन स्थितम्।
स्वाहा स्वधा वषट्कारै रङ्कितं मेष वाहनम्।।
शत मंगलकं रौद्रं वह्निमावाहयाम्यहम्।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते।।
आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् सन्निधो भव।

सप्तजिह्वा आवाहन-

ॐ कनकायै नमः, ॐ रक्तायै नमः, ॐ कृष्णायै नमः, ॐ उद्गारिण्यै नमः, ॐ सुप्रभायै नमः, ॐ बहुरूपायै नमः, ॐ अतिरिक्तायै नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर शाण्डिल्य गोत्र शाण्डिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरः, भूमिमातः, वरुणपितः, पश्चिमचरण, पूर्व शिर-स्कन्ध, ऊर्ध्व पाद, पातालदृष्टि, गोचर मेषध्वज, प्राङ्मुख अग्ने स्वागतो भव, भूर्भुवः स्वः वरदाग्नये नमः अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

प्रतिष्ठा -

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ८ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

➲ अग्नि स्थापन के बाद यथोपचार अग्नि का पूजन करें अथवा निम्न मंत्र से गन्ध, अक्षत तथा पुष्प अग्नि के सामने चढ़ावें –

ॐ अग्नये नमः, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

➲ अथवा पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, अक्षत चढ़ाकर धूप, दीप, दिखाकर मिष्ठान्न एवं फल को घृताक्त करके अग्नि के मध्य में समर्पित करें। तीन बार घी छोड़े तदनन्तर अग्नि के सामने ताम्बूल पूगीफल तथा दक्षिणा समर्पित करें।

प्रार्थना

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
हिरण्यवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्।।

ॐ रक्ताभूषं द्विशीर्षं त्रिपदमनलं सप्तहस्तं च शृङ्गम्।
वेदाङ्कं मेषवाहं हविःसुरप्रदं रक्त-पद्मासनस्थम्।।
पिङ्गाक्षं स्वर्णवर्णं मणिमुकुट जटाभूषणाढ्यं सुदीप्तम्।
विप्राः प्रत्यक् शिरस्तं स्मरत् यजत भो हव्यवाहं सुसिद्ध्यै।।

ॐ अग्नये नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

हाथ में जल लेकर सामने गिरावें– **अनेन पूजनेन श्री अग्निदेवता प्रीयतां न मम।।**

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे अग्नि–स्थापनं पूजनञ्च सम्पूर्णम्।)

➲ कुछ विद्वान हवन के लिए यहाँ पुनः ब्राह्मणपूजन तथा वरण करते हैं, मेरे मत से यदि हवन के लिए अतिरिक्त ब्राह्मण आए हों तो उन्हीं का वरण होना चाहिए, पूर्व से सम्पूर्ण अनुष्ठान के लिए वरणित ब्राह्मणों का पुनः वरण तर्क संगत नहीं है। ब्राह्मणपूजन करना चाहिए।

अथ कुशकण्डिका

❑ अग्नि स्थापन के पश्चात् कुशकण्डिका इस प्रकार करें –

अग्नेर्दक्षिणतो ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासन-द्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनम्। भो ब्रह्म यावत्कर्म समाप्यते तावत् त्वं संस्थितो भव (इति यजमानः)। 'भवामि' (इति ब्रह्मा वदेत्) ततो ब्रह्मणाऽनुज्ञया प्रणीताप्रणयनम्। प्रणीता

पात्रं पुरतः वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने स्थापयेत्।

परिस्तरणम्-

ततो बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय आग्नेयादीशानान्तम् उत्तराग्रैः ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तं पूर्वाग्रैः, नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्, उदगग्रैः अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं प्रागग्रैः, इतरथावृत्तिः।

अग्नि के दक्षिण दिशा में ब्रह्मा का कुशासन लगावे (अथवा किसी वेदी पर अक्षत से अष्टदल कमल बनाकर ब्रह्मा हेतु आसन की परिकल्पना करें) अग्नि के उत्तर भाग में प्रणीता तथा प्रोक्षणी रखने हेतु दो कुश के आसन बनावे। ब्रह्मा के आसन में ब्रह्मा को बैठावे (स्थापित करे) **भो ब्रह्म यावत् कर्म समाप्यते तावत् त्वं संस्थितो भव** (अर्थात् हे ब्रह्मा जी जब तक यह हवन कर्म पूर्ण न हो तब तक आप यहां संस्थित होवें – ऐसा यजमान के कहने पर ब्रह्मा '**भवामि**' कहते हुए (हवन कार्य तक ब्रह्मा रूप में स्थित होता हूँ।) ऐसा वचन कहे। तत्पश्चात् ब्रह्मा की आज्ञा लेकर (ब्रह्मा की ओर देखकर) यजमान या यजमान का प्रतिनिधि ब्राह्मण प्रणीता प्रणयन करे – प्रणीता पात्र को सामने रखकर (यजमान के सामने) जल से भरे और तीन कुशों से ढक देवे तथा अग्नि के उत्तर रखे गये दो आसनों में से प्रथम आसन में रखकर ब्रह्मा की ओर देखे और पुनः उसे उठाकर दूसरे आसन में रख देवे तदनन्तर परिस्तरण करे बर्हि को चार भागों में करके (एक मुट्ठी कुशों को चार भागों में करके) अग्नि कुण्ड या स्थण्डिल के अग्निकोण से ईशान कोणपर्यन्त उत्तर की ओर अग्रभाग करके रखे इसी प्रकार दूसरे भाग को ब्रह्मा से लेकर अग्निकोण तक (पूर्वाग्र करके), तीसरे भाग को नैऋत्य कोण से वायव्य कोण तक (अर्थात् कुण्ड के पश्चिम भाग में) उत्तराग्र करके तथा चतुर्थ भाग को वायव्य से ईशान कोण तक कुण्ड के उत्तर भाग में पूर्वाग्र करके परिस्तरण करना (बिछाना) चाहिए।

पात्रासादनम् -

पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयं पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भ कुशपत्रद्वयं प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः।

स्रुवः। आज्यम्। तण्डुलाः। पूर्णपात्रम्। ताम्बूलं, पूगीफलम् उपकल्पनीयानि द्रव्याणि निधाय।

कुण्ड या स्थण्डिल से उत्तर दिशा में पश्चिम से पूर्व की ओर (किसी के मत से दक्षिण से उत्तर की ओर) क्रमशः पात्रासादन करना चाहिए यथा – सर्वप्रथम पवित्र निर्माणार्थ एक त्रिकुश रखे तत्पश्चात् कुश के मध्य भाग से दो कुश पत्र निकाल कर रखे, इसके बाद क्रमशः पूर्व की ओर प्रोक्षणीपात्र, आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुश (पांच त्रिकुशों का समूह) उपयमन कुश (सात त्रिकुशों का समूह), तीन पलाश की समिधाएं, स्रुव, स्रुच, आज्य, चरु, पूर्णपात्र, चावल, पूर्णाहुति हेतु गरी का गोला या सूखा नारियल अथवा सुपाड़ी तथा अन्य हवनोपयोगी वस्तुओं को रखना चाहिए। इसके बाद पवित्र निर्माण करे।

पवित्रकरणम् –

द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, सर्वान् युगपदनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां धृत्वा त्रिभिश्छिद्य द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः, प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य, त्रिः पूर्ण, पवित्राभ्यामुत्पवनम्। प्रोक्षण्याः सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणेनोद्दिङ्गनम्।

पवित्र निर्माण करने के लिए पात्रासादन के समय प्रारम्भ में रखे गये दो कुश पत्रों को हाथ में लेवे तत्पश्चात् तीन कुशपत्रों को लेकर दो पत्रों के ऊपर तीन कुशपत्र रखकर दो पत्र वाले कुश को तीन कुश पत्र के मूल भाग से प्रदक्षिण क्रम से लपेटकर अनामिका अंगुष्ठ से तीन कुश पत्र को तोड़ देवे और शेष दो कुशपत्रों को ग्रहण कर ले जबकि तीन कुशपत्रों को जो तोड़ दिये गये हैं उन्हें ईशानकोण में फेंक देवे। तदनन्तर ग्रहण किए गये दो कुश पत्रों को (पवित्र को) गांठ लगाकर दाहिने हाथ में लिए रहे और प्रणीता के जल से पवित्र द्वारा प्रोक्षणी पात्र का सिञ्चन करे तथा उसी पवित्र से प्रणीता जल को ऊपर उछाले इसके बाद प्रोक्षणी पात्र को बाएं हाथ में लेवे और दाहिने हाथ से पवित्र द्वारा प्रोक्षण करे।

प्रोक्षणम् -

प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः। चरुस्थाल्याः। सम्मार्जनकुशानां। उपयमनकुशानां। समिधां। स्त्रुवस्य। आज्यस्य। तण्डुलानां। पूर्णपात्रस्य। उपकल्पनीयानां पदार्थानाञ्च प्रोक्षणम्। असञ्चरे प्रोक्षणीर्निधाय।

पहले प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करे तत्पश्चात् प्रोक्षणी के जल से आज्यस्थाली, चरुस्थाली, सम्मार्जन कुश, उपयमन कुश, समिधा, स्त्रुव, आज्य, चरु, चावल, पूर्णपात्र एवं अन्य रखी गयी वस्तुओं का क्रमशः प्रोक्षण करे और प्रोक्षणी को असञ्चर देश में (कुण्ड के उत्तर प्रणीता तथा कुण्ड के मध्य में) रख देवे।

आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां चरुप्रक्षेपः। ब्रह्मणो दक्षिणत आज्याधिश्रयणम्। चरोरधिश्रयणं स्वयमाज्यस्तोत्तरतः। ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धश्रिते चरौ अधोमुखस्य स्त्रुवस्य प्रतपनम्। सम्मार्जनकुशैः स्त्रुवस्योर्ध्वमुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतोमूलैर्बाह्यतः स्त्रुवं सम्मृज्य। प्रणीतोदकेनाभ्युक्षणम्। सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः प्रतपनं, दक्षिणदेशे निधानम्। आज्योद्वासनम्। चरुं पूर्वेणानीयाऽग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्यनिरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय। उत्तिष्ठन् समिधोऽभ्यादाय, घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः अग्नौ क्षिपेत्। प्रोक्षण्युदकेन सपवित्रहस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्षणम्। इतरथावृत्तिः।

तदनन्तर आज्यस्थाली में आज्य (घी) निकाले, चरुस्थाली में चरु (हवन सामग्री) निकाले, ब्रह्मा की ओर से (दक्षिण से) अग्नि में घी को

रखकर पिघलावें चरु को भी गरम करे। इसके बाद घी पात्र को सामने रखकर अग्नि से कोई तिनका जलाकर घी एवं चरु का पर्यग्निकरण करे (चारों ओर जलते हुए तिनके को प्रदक्षिण क्रम से घुमाकर अग्नि में तिनके को डाल देवे। हाथ से जल का स्पर्श करे (हाथ धो लेवे) तथा अधोमुख करके स्रुव को तपावे और सम्मार्जन कुश के ऊर्ध्व भाग से स्रुव के ऊर्ध्व मुख का, अग्र से अग्रभाग का (अन्दर छिद्रभाग का) कुश जड़ से स्रुव के बाह्य भाग का सम्मार्जन करना चाहिए सम्मार्जन के बाद प्रणीता के जल से अभ्युक्षण करे, सम्मार्जन कुशों को अग्नि में प्रक्षेपित कर देवे, स्रुव को पुनः पूर्व क्रम से अग्नि में तपावे और यजमान अपने दाहिनी ओर रख लेवे आज्य को यजमान के सामने रखे तथा चरु को पूर्व की ओर से लेकर अग्नि की उत्तर दिशा में रख देवे। तत्पश्चात् आज्य को किसी कुशादि से घुमाकर अच्छी प्रकार से देख लेवे यदि कोई अपद्रव्य उसमें दिखाई पड़े तो उसे निकाल कर बाहर फेंक देवे। फिर प्रोक्षणी पात्र के जल को भी घुमाते हुए उत्पवनित करे। बाएं हाथ में उपयमन कुशों को लेकर हृदय के समीप रखे और खड़े होकर तीन पलाश की समिधाओं को क्रमशः एक एक करके घी में डुबोकर ब्रह्मा जी का मन में ध्यान करते हुए मौन होकर अग्नि में डाल देवे। तत्पश्चात् प्रोक्षणी पात्र के जल से पवित्रयुक्त हाथ से ईशान कोण से अग्निकोण पर्यन्त प्रदक्षिण क्रम से पर्युक्षण करे (जल गिरावे)।

पवित्रयोः प्रणीतासुनिधानम्। पातित दक्षिणं जानुः ब्रह्मणा कुशैरन्वारब्धः। समिद्धतमेऽग्नौ स्रुवेणाऽऽज्यहोमः।

तत्पश्चात् पवित्र को प्रणीता में रख देवे। दाहिने घुटने को मोड़कर, ब्रह्मा से कुशाओं द्वारा सम्बन्ध कर प्रदीप्त अग्नि में स्रुवा से घी की आहुति करे।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे कुशकण्डिका सम्पूर्णा)

अथ होमः

हवन के समय घृताहुति में स्वाहा कहकर अग्नि में घृताहुति छोड़े **न मम** कहकर प्रोक्षणी पात्र में होम से अवशिष्ट स्रुव का घृत डालना चाहिए।

यजमान का कुशादि द्वारा ब्रह्मा से सम्पर्क करके –

अग्नेरुत्तरभागे – ॐ **प्रजापतये स्वाहा**, इदं प्रजापतये न मम।

अग्नेर्दक्षिण भागे – ॐ **इन्द्राय स्वाहा**, इदं इन्द्राय न मम।

समिद्धतमे – ॐ **अग्नये स्वाहा**, इदं अग्नये न मम। ॐ **सोमाय स्वाहा**, इदं सोमाय न मम।। ॐ **भूः स्वाहा**, इदं अग्नये न मम। ॐ **भुवः स्वाहा**, इदं वायवे न मम। ॐ **स्वः स्वाहा**, इदं सूर्याय न मम।

पञ्चवारुण-होमः

१. **ॐ त्वन्नोऽग्ग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडोऽ-अवयासिसीष्ठ्ठाः। यजिष्ठ्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषा गुं सि प्प्रमुमुग्ध्यस्म्मत् स्वाहा।।** इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

२. **ॐ स त्त्वन्नो ऽअग्ग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठ्ठोऽअस्या उषसो व्युष्ट्टौ। अवयक्ष्व नो व्वरुण गुं रराणो व्वीहि मृडीक गुं सुहवो न ऽएधि स्वाहा।।** इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

३. **ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि। अयानो यज्ञं व्वहास्ययानो धेहि भेषज गुं स्वाहा।।** इदमग्नये अयसे न मम।

४. **ॐ ये ते शतं व्वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्न्नो ऽअद्य सवितोत व्विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा।।** इदं वरुणाय सवित्रे व्विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

५. **ॐ उदुत्तमं व्वरुण पाशमस्म्मदवाधमं व्विमध्यम गुं श्रथाय। अथा व्वयमादित्य व्व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा।** इदं वरुणादित्यायाऽदितये न मम।

यजमान के ऊपर जल छिड़के –

यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत्।

तद्वद् दैवोपघातानां शान्तिर्भवतु वारिणा।।

- तत्पश्चात् ब्रह्मा से कुश का सम्पर्क हटाकर चरु का भी हवन करें। परम्परानुसार यजमान घी की आहुति देते हैं और यजमान पत्नी तथा अन्य होतागण चरु, हवन तिलादि से निर्मित सामग्री का हवन करते हैं।
- शास्त्रीय विधि के अनुसार स्त्री को हवन का निषेध है वह मात्र पति के दाहिने बैठी रहती है यजमान घृताहुति देता है तथा अन्य ब्राह्मण होतागण चरु का हवन करते हैं।

गणपति-गौरी-होमः

ॐ गणानान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधीपति गुं हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् गणपतये स्वाहा।।१।।

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पील-वासिनीम् गौर्यै स्वाहा।।२।।

नवग्रह-होमः

- निम्न मंत्रों से क्रमशः सूर्यादि की अर्कादि समिधाओं को भी घी में डुबोकर साथ में हवन करें। ग्रहों को ८-८ बार, अधिदेवताओं को ४-४ बार, प्रत्यधिदेवताओं को २-२ बार आहुति देने का विधान है।

१. सूर्य (मदार)-

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्, सूर्याय स्वाहा।।

२. चन्द्रमा (पलाश)-

ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न गुं सुबद्ध्वम्महते क्षत्त्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य

पुत्त्रममुष्यै पुत्त्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना गुं राजा, चन्द्रमसे स्वाहा।।

३. मङ्गल (खदिर)-

ॐ अग्निर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्व्या ऽअयम्। अपा गुं रेता गुं सि जिन्वति, भौमाय स्वाहा।।

४. बुध (अपामार्ग)-

उद्बुध्यस्वाग्ग्ने प्प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स गुं सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअद्ध्युत्तरस्मिन् विश्श्वेदेवा यजमानश्च सीदत्, बुधाय स्वाहा।।

५. बृहस्पति (पीपल)-

ॐ बृहस्प्पते ऽअति यदर्य्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजात तदस्म्मासु द्रविणं धेहि चित्त्रम्, बृहस्पतये स्वाहा।।

६. शुक्र (गूलर)-

ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्ब्रह्मणा व्व्यपिबत्क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान गुं शुक्क्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु, शुक्राय स्वाहा।।

७. शनि (शमी)-

ॐ शन्नो देवीरभिष्टये ऽआपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः, शनैश्चराय स्वाहा।।

८. राहु (दूब)-

ॐ कया नश्चित्त्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया व्वृता, राहवे स्वाहा।।

९. केतु (कुश) –

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्य्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः, केतवे स्वाहा।।

अधिदेवता-होमः

१. ईश्वराय –

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ईश्वराय स्वाहा।।

२. उमायै –

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण उमायै स्वाहा।।

३. स्कन्दाय –

यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महिजातन्ते अर्व्वन्। स्कन्दाय स्वाहा।।

४. विष्णवे –

ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा। विष्णवे स्वाहा।।

५. ब्रह्मणे –

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः। सबुध्न्या उपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः। ब्रह्मणे स्वाहा।।

६. इन्द्राय –

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमम्पिव वृत्रहा शूर

विद्वान् जहि शत्रू रपमृधो नुदस्वाथाभयङ्कृणुहि विश्वतो नः। इन्द्राय स्वाहा।।

७. यमाय -

ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्म्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे। यमाय स्वाहा।।

८. कालाय -

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्याऽउन्नयामि समापो ऽअद्भिरग्मतसमोषधीभिरोषधीः। कालाय स्वाहा।।

९. चित्रगुप्ताय-

ॐ चित्रावसो स्वस्तिते पारमशीय चित्रगुप्ताय स्वाहा।।

प्रत्यधिदेवता-होमः

१. अग्नये - *ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे देवाँऽआसादयादिह अग्नये स्वाहा।।*

२. अद्भ्यः- *ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन महेरणाय चक्षसे यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः उशतीरिव मातरः। तस्माऽअरङ्गमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः* अदभ्यः स्वाहा।।

३. पृथिव्यै- *ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म स प्रथाः।* पृथिव्यै स्वाहा।।

४. विष्णवे- *ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्, समूढमस्य पा ᳪ सुरे।* विष्णवे स्वाहा।।

५. इन्द्राय - *ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ᳪ हवे हवे सुहव ᳪ शूरमिन्द्रम्, ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ᳪ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।* इन्द्राय स्वाहा।।

६. इन्द्राण्यै - *ॐ अदित्यैरास्नासीन्द्राण्याऽ-उष्णीयपूषासि धर्मायदीष्व* इन्द्राण्यै स्वाहा।।

७. प्रजापतये- *ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽस्तु वय ꣳ स्याम पतयो रयीणाम्।* प्रजापतये स्वाहा।।

८. सर्पेभ्यः- *ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।* सर्पेभ्यः स्वाहा।।

९. ब्रह्मणे- *ॐ ब्रह्म यज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेनऽआवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।* ब्रह्मणे स्वाहा।।

पञ्चलोकपालदेवता-होमः

१. गणपतये- *ॐ गणानान्त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वां प्रियपति ꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ꣳ हवामहे व्वसो मम। आहमजानिगर्भधमात्त्वमजासि गर्भधम्।* गणपतये स्वाहा।।

२. दुर्गायै- *ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससस्त्यश्वक्रः सुभद्रिकाँ काम्पीलवासिनीम्।* दुर्गायै स्वाहा।।

३. वायवे- *ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः* वायवे स्वाहा।।

४. आकाशाय- *ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसाव्वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा दिशः प्रतिशऽआदिशो विदिशऽउद्दिशो दिग्भ्यः।* आकाशाय स्वाहा।।

५. अश्विभ्यां - *ॐ यावांकशा मधुमत्यश्विनासूनृतावती तया यज्ञम्मिमिक्षतम्।* अश्विभ्यां स्वाहा।।

दशदिग्पाल-होमः

१. इन्द्राय- ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहव ꣳ शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः। इन्द्राय स्वाहा।।

२. अग्नये- ॐ त्वन्नोऽअग्ने तव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेष ꣳ रक्षमाणस्तवब्व्रते। अग्नये स्वाहा।।

३. यमाय- ॐ यमाय त्वांगिरस्वते पितृमते स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म्मः पित्रे। यमाय स्वाहा।।

४. निर्ऋतये- ॐ असुन्वन्तम-यजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य अन्यमस्मदिच्छ सातऽइत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु। निर्ऋतये स्वाहा।।

५. वरुणाय- ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः अहेळमानो वरुणेह बोध्युरुश ꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः। वरुणाय स्वाहा।।

६. वायवे- ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ꣳ सहस्त्रिणीभिरुपयाहि यज्ञम्। वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पात स्वस्तिभिः सदा नः। वायवे स्वाहा।।

७. कुबेराय- ॐ वय ꣳ सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः प्रजावन्तः सचेमहि। कुबेराय स्वाहा।।

८. ईशानाय- ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेद-सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये। ईशानाय स्वाहा।।

९. ब्रह्मणे- ॐ अस्मे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः यः श ꣳ सते स्तुवते धायि पज्रऽइन्द्र ज्येष्ठाऽअस्माँऽअवन्तु देवाः। ब्रह्मणे स्वाहा।।

१०. अनन्ताय- *ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म्मसप्रथाः। अनन्ताय स्वाहा।।*

इष्टादि-देवता-होमः

ॐ इष्ट देवताभ्यः स्वाहा। ॐ कुल देवताभ्यः स्वाहा। ॐ ग्राम देवताभ्यः स्वाहा। ॐ स्थान देवताभ्यः स्वाहा। ॐ बं बटुकाय स्वाहा। ॐ हं हनुमते स्वाहा। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां स्वाहा। ॐ उमा महेश्वराभ्यां स्वाहा। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां स्वाहा। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां स्वाहा। ॐ सीतारामाभ्यां स्वाहा। ॐ राधा-कृष्णाभ्यां स्वाहा। ॐ गुरुभ्यः स्वाहा। ॐ परं गुरुभ्यः स्वाहा। ॐ परमेष्ठि गुरुभ्यः स्वाहा। ॐ गंगायै स्वाहा। ॐ यमुनायै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ त्रिवेण्यै स्वाहा। द्वादश- माधवेभ्यः स्वाहा। ॐ प्रयागस्थ देवेभ्यः स्वाहा। ॐ काशीस्थ देवेभ्यः स्वाहा। ॐ पुण्यपुरीभ्यः स्वाहा। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। ॐ यज्ञपतये स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ शिवाय स्वाहा। ॐ परमात्मने स्वाहा। ॐ नारायणाय स्वाहा।

षोडशमातृका-होमः

१. ॐ गणपतये स्वाहा।
२. ॐ गौर्यै स्वाहा।
३. ॐ पद्मायै स्वाहा।
४. ॐ शच्यै स्वाहा।
५. ॐ मेधायै स्वाहा।
६. ॐ सावित्र्यै स्वाहा।
७. ॐ विजयायै स्वाहा।
८. ॐ जयायै स्वाहा।
९. ॐ देवसेनायै स्वाहा।
१०. ॐ स्वधायै स्वाहा।
११. ॐ स्वाहायै स्वाहा।
१२. ॐ मातृभ्यस्स्वाहा।
१३. ॐ लोकमातृभ्यस्स्वाहा
१४. ॐ धृत्यै स्वाहा।
१५. ॐ पुष्ट्यै स्वाहा।
१६. ॐ तुष्ट्यै स्वाहा।
१७. ॐ आत्मकुलदेवतायै स्वाहा।

सप्तघृतमातृका-होमः

१. ॐ श्रियै स्वाहा।
२. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।
३. ॐ धृत्यै स्वाहा।
४. ॐ मेधायै स्वाहा।
५. ॐ स्वाहायै स्वाहा
६. ॐ प्रज्ञायै स्वाहा।
७. ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।

वास्तुमण्डलदेवता-होमः

१. ॐ शिखिने स्वाहा।
२. ॐ पर्जन्याय स्वाहा।
३. ॐ जयन्ताय स्वाहा।
४. ॐ कुलिशाय स्वाहा।
५. ॐ सूर्याय स्वाहा।
६. ॐ सत्याय स्वाहा।
७. ॐ भृशाय स्वाहा।
८. ॐ आकाशाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा।
१०. ॐ पूष्णे स्वाहा।
११. ॐ वितथाय स्वाहा।
१२. ॐ गृहक्षताय स्वाहा।
१३. ॐ यमाय स्वाहा।
१४. ॐ गन्धर्वाय स्वाहा।
१५. ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा।
१६. ॐ मृगाय स्वाहा।
१७. ॐ पितृभ्यः स्वाहा।
१८. ॐ दौवारिकाय स्वाहा।
१९. ॐ सुग्रीवाय स्वाहा।
२०. ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा।
२१. ॐ वरुणाय स्वाहा।
२२. ॐ असुराय स्वाहा।
२३. ॐ शोषाय स्वाहा।
२४. ॐ पापाय स्वाहा।
२५. ॐ रोगाय स्वाहा।
२६. ॐ अहये स्वाहा।
२७. ॐ मुख्याय स्वाहा।
२८. ॐ भल्लटाय स्वाहा।
२९. ॐ सोमाय स्वाहा।
३०. ॐ सर्पाय स्वाहा।
३१. ॐ अदित्यै स्वाहा।
३२. ॐ दित्यै स्वाहा।
३३. ॐ अद्भ्यो स्वाहा।
३४. ॐ सावित्राय स्वाहा।
३५. ॐ जयाय स्वाहा।
३६. ॐ रुद्राय स्वाहा।
३७. ॐ अर्यमणे स्वाहा।
३८. ॐ सवित्रे स्वाहा।
३९. ॐ विवस्वते स्वाहा।
४०. ॐ बिबुधाधिपाय स्वाहा।
४१. ॐ मित्राय स्वाहा।
४२. ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा।
४३. ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा।
४४. ॐ आपवत्साय स्वाहा।
४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
४६. ॐ चरक्यै स्वाहा।

४७. ॐ विदार्यै स्वाहा। ४८. ॐ पूतनायै स्वाहा।
४९. ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ५०. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
५१. ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ५२. ॐ जृम्भकाय स्वाहा।
५३. ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा। ५४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५५. ॐ अग्नये स्वाहा। ५६. ॐ यमाय स्वाहा।
५७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ५८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
५९. ॐ वायवे स्वाहा। ६०. ॐ कुबेराय स्वाहा।
६१. ॐ ईशानाय स्वाहा। ६२. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।
६३. ॐ अनन्ताय स्वाहा। ६४. ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।

चतु:षष्ठियोगिनी-होमः

१. ॐ गजाननायै स्वाहा। २. ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा।
३. ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा। ४. ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा।
५. ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा। ६. ॐ हयग्रीवायै स्वाहा।
७. ॐ वाराह्यै स्वाहा। ८. ॐ शरभाननायै स्वाहा।
९. ॐ उलूकिकायै स्वाहा। १०. ॐ शिवाख्यायै स्वाहा।
११. ॐ मयूर्यै स्वाहा। १२. ॐ विकटाननायै स्वाहा।
१३. ॐ अष्टवक्रायै स्वाहा। १४. ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा।
१५. ॐ कुब्जायै स्वाहा। १६. ॐ विकटलोचनायै स्वाहा।
१७. ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा। १८. ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा।
१९. ॐ श्वदंष्ट्रायै स्वाहा। २०. ॐ वानराननायै स्वाहा।
२१. ॐ ऋक्षाक्ष्यै स्वाहा। २२. ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा।
२३. ॐ वृहत्तुण्डायै स्वाहा। २४. ॐ सुराप्रियायै स्वाहा।
२५. ॐ कपालहस्तायै स्वाहा। २६. ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा।
२७. ॐ शुक्यै स्वाहा। २८. ॐ श्येन्यै स्वाहा।
२९. ॐ कपोतिकायै स्वाहा। ३०. ॐ पाशहस्तायै स्वाहा।
३१. ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा। ३२. ॐ प्रचण्डायै स्वाहा।
३३. ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा। ३४. ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा।
३५. ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा। ३६. ॐ काल्यै स्वाहा।

३७. ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा। ३८. ॐ वसाधयायै स्वाहा।
३९. ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा। ४०. ॐ शवहस्तायै स्वाहा।
४१. ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा। ४२. ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा।
४३. ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। ४४. ॐ सर्पास्यायै स्वाहा।
४५. ॐ प्रेतवाहनायै स्वाहा। ४६. ॐ दन्तशूककरायै स्वाहा।
४७. ॐ क्रोञ्च्यै स्वाहा। ४८. ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा।
४९. ॐ वृषाननायै स्वाहा। ५०. ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा।
५१. ॐ धूमनिःश्वासायै स्वाहा। ५२. ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वा.।
५३. ॐ तापिन्यै स्वाहा। ५४. ॐ शोषणीदृष्ट्यै स्वाहा।
५५. ॐ कोटर्यै स्वाहा। ५६. ॐ स्थूलनासिकायै स्वाहा।
५७. ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा। ५८. ॐ बलाकास्यायै स्वाहा।
५९. ॐ मार्जार्यै स्वाहा। ६०. ॐ कटपूतनायै स्वाहा।
६१. ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा। ६२. ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा।
६३. ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ६४. ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।
६५. ॐ महाकाल्यै स्वाहा। ६६. ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा।
६७. ॐ महासरस्वत्यै स्वाहा।

अथ क्षेत्रपालदेवता-होमः

१. ॐ अजराय स्वाहा। २. ॐ व्यापकाय स्वाहा।
३. ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्रमूर्त्तये स्वाहा।
५. ॐ उक्षाय स्वाहा। ६. ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा।
७. ॐ वरुणाय स्वाहा। ८. ॐ बटुकाय स्वाहा।
९. ॐ विमुक्ताय स्वाहा। १०. ॐ लिप्तकाय स्वाहा।
११. ॐ लीलाकाय स्वाहा। १२. ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा।
१३. ॐ ऐरावताय स्वाहा। १४. ॐ ओषधिघ्नाय स्वाहा।
१५. ॐ बन्धनाय स्वाहा। १६. ॐ दिव्यकाय स्वाहा।
१७. ॐ कम्बलाय स्वाहा। १८. ॐ भीषणाय स्वाहा।

१९. ॐ गवयाय स्वाहा। २०. ॐ घण्टाय स्वाहा।
२१. ॐ व्यालाय स्वाहा। २२. ॐ अणवे स्वाहा।
२३. ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। २४. ॐ पटाटोपाय स्वाहा।
२५. ॐ जटालाय स्वाहा। २६. ॐ क्रतवे स्वाहा।
२७. ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। २८. ॐ विटङ्काय स्वाहा।
२९. ॐ मणिमानाय स्वाहा। ३०. ॐ गणबन्धवे स्वाहा।
३१. ॐ डामराय स्वाहा। ३२. ॐ ढुण्ढिकर्णाय स्वाहा।
३३. ॐ स्थविराय स्वाहा। ३४. ॐ दन्तुराय स्वाहा।
३५. ॐ धनदाय स्वाहा। ३६. ॐ नागकर्णाय स्वाहा।
३७. ॐ महाबलाय स्वाहा। ३८. ॐ फेत्काराय स्वाहा।
३९. ॐ चीकराय स्वाहा। ४०. ॐ सिंहाय स्वाहा।
४१. ॐ मृगाय स्वाहा। ४२. ॐ यक्षाय स्वाहा।
४३. ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ४४. ॐ तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा।
४५. ॐ अनलाय स्वाहा। ४६. ॐ शुक्लतुण्डाय स्वाहा।
४७. ॐ सुधालापाय स्वाहा। ४८. ॐ बर्बरकाय स्वाहा।
४९. ॐ पवनाय स्वाहा। ५०. ॐ पावनाय स्वाहा।
५१. ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा।

* ॐ असंख्यातरुद्रेभ्यः स्वाहा।

सर्वतोभद्रमण्डलदेवता-होमः

१. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। २. ॐ सोमाय स्वाहा।
३. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
५. ॐ अग्नये स्वाहा। ६. ॐ यमाय स्वाहा।
७. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ८. ॐ वरुणाय स्वाहा।
९. ॐ वायवे स्वाहा। १०. ॐ अष्टवसुभ्यस्स्वाहा।
११. ॐ एकादशरुद्रेभ्यस्स्वाहा। १२. ॐ द्वादशादित्येभ्यस्स्वाहा।

१३. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। १४. ॐ सपैतृकविश्वेभ्यस्स्वाहा।
१५. ॐ सप्तयक्षेभ्यस्स्वाहा। १६. ॐ भूतनागेभ्यस्स्वाहा।
१७. ॐ गन्धर्वाप्सराभ्यस्स्वाहा। १८. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
१९. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। २०. ॐ शूलमहाकालाभ्यां स्वा.।
२१. ॐ दक्षादिसप्तगणेभ्यस्स्वा.। २२. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
२३. ॐ विष्णवे स्वाहा। २४. ॐ स्वधासहितपितृभ्यस्स्वा.।
२५. ॐ मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा। २६. ॐ गणपतये स्वाहा।
२७. ॐ अद्भ्यस्स्वाहा। २८. ॐ मरुद्भ्यस्स्वाहा।
२९. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ३०. ॐ गङ्गादिनदीभ्यस्स्वाहा।
३१. ॐ सप्तसागरेभ्यस्स्वाहा। ३२. ॐ मेरवे स्वाहा।
३३. ॐ गदायै स्वाहा। ३४. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।
३५. ॐ वज्राय स्वाहा। ३६. ॐ शक्तये स्वाहा।
३७. ॐ दण्डाय स्वाहा। ३८. ॐ खड्गाय स्वाहा।
३९. ॐ पाशाय स्वाहा। ४०. ॐ अंकुशाय स्वाहा।
४१. ॐ गौतमाय स्वाहा। ४२. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा।
४३. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ४४. ॐ कश्यपाय स्वाहा।
४५. ॐ जमदग्नये स्वाहा। ४६. ॐ वसिष्ठाय स्वाहा।
४७. ॐ अत्रये स्वाहा। ४८. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा।
४९. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ५०. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
५१. ॐ ब्राह्मयै स्वाहा। ५२. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
५३. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ५४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
५५. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ५६. ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

❑ यदि लिङ्गतोभद्र का आवाहन किया गया हो तो उसका भी होम करें –

चतुर्लिङ्गतोभद्रमण्डलदेवता-होमः

१. ॐ वीरभद्राय स्वाहा। २. ॐ शम्भवे स्वाहा।
३. ॐ अजैकपदे स्वाहा। ४. ॐ अहिर्बुध्न्याय स्वाहा।
५. ॐ पिनाकिने स्वाहा। ६. ॐ शूलपाणये स्वाहा।
७. ॐ भुवनाधीश्वराय स्वाहा। ८. ॐ कपालिने स्वाहा।
९. ॐ दिक्पतये स्वाहा। १०. ॐ रुद्राय स्वाहा।
११. ॐ शिवाय स्वाहा। १२. ॐ महेश्वराय स्वाहा।
१३. ॐ असितांगभैरवाय स्वाहा। १४. ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा।
१५. ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा। १६. ॐ क्रोध-भैरवाय स्वाहा।
१७. ॐ उन्मत्त-भैरवाय स्वाहा। १८. ॐ काल-भैरवाय स्वाहा।
१९. ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा। २०. ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।
२१. ॐ भवाय स्वाहा। २२. ॐ शर्वाय स्वाहा।
२३. ॐ रुद्राय स्वाहा। २४. ॐ पशुपतये स्वाहा।
२५. ॐ महते स्वाहा। २६. ॐ भीमाय स्वाहा।
२७. ॐ ईशानाय स्वाहा। २८. ॐ अनन्ताय स्वाहा।
२९. ॐ तक्षकाय स्वाहा। ३०. ॐ वासुकये स्वाहा।
३१. ॐ कुलिशाय स्वाहा। ३२. ॐ कर्कोटकाय स्वाहा।
३३. ॐ शङ्खपालाय स्वाहा। ३४. ॐ कम्बलाय स्वाहा।
३५. ॐ अश्वतराय स्वाहा। ३६. ॐ शूलिने स्वाहा।
३७. ॐ चन्द्रमौलिने स्वाहा। ३८. ॐ चन्द्रमसे स्वाहा।
३९. ॐ वृषभध्वजाय स्वाहा। ४०. ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा।
४१. ॐ शक्तिधराय स्वाहा। ४२. ॐ महेश्वराय स्वाहा।
४३. ॐ शूलधारिणे स्वाहा। ४४. ॐ स्थाणवे स्वाहा।
४५. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ४६. ॐ सोमाय स्वाहा।
४७. ॐ ईशानाय स्वाहा। ४८. ॐ इन्द्राय स्वाहा।
४९. ॐ अग्नये स्वाहा। ५०. ॐ यमाय स्वाहा।
५१. ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ५२. ॐ वरुणाय स्वाहा।
५३. ॐ वायवे स्वाहा। ५४. ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा।

५५. ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। ५६. ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा।
५७. ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। ५८. ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा।
५९. ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। ६०. ॐ भूतनागेभ्यः स्वाहा।
६१. ॐ गंधर्वाप्सराभ्यः स्वाहा। ६२. ॐ स्कन्दाय स्वाहा।
६३. ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। ६४. ॐ शूलमहाकालाभ्यां स्वाहा।
६५. ॐ दक्षादिसप्तकाय स्वाहा। ६६. ॐ दुर्गायै स्वाहा।
६७. ॐ विष्णवे स्वाहा। ६८. ॐ स्वधायै स्वाहा।
६९. ॐ मृत्युरोगाभ्यां स्वाहा। ७०. ॐ गणपतये स्वाहा।
७१. ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ७२. ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा।
७३. ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ७४. ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा।
७५. ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ७६. ॐ मेरवे स्वाहा।
७७. ॐ सद्योजाताय स्वाहा। ७८. ॐ वामदेवाय स्वाहा।
७९. ॐ अघोराय स्वाहा। ८०. ॐ तत्पुरुषाय स्वाहा।
८१. ॐ ईशानाय स्वाहा। ८२. ॐ परिधये स्वाहा।
८३. ॐ चतुःपुरीभ्यः स्वाहा। ८४. ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा।
८५. ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ८६. ॐ सामवेदाय स्वाहा।
८७. ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा। ८८. ॐ भवाय स्वाहा।
८९. ॐ शर्वाय स्वाहा। ९०. ॐ पशुपतये स्वाहा।
९१. ॐ ईशानाय स्वाहा। ९२. ॐ उग्राय स्वाहा।
९३. ॐ रुद्राय स्वाहा। ९४. ॐ भीमाय स्वाहा।
९५. ॐ महते स्वाहा। ९६. ॐ भवान्यै स्वाहा।
९७. ॐ शर्वाण्यै स्वाहा। ९८. ॐ पशुपत्यै स्वाहा।
९९. ॐ ईशान्यै स्वाहा। १००. ॐ उग्रायै स्वाहा।
१०१. ॐ रुद्राण्यै स्वाहा। १०२. ॐ भीमायै स्वाहा।
१०३. ॐ महत्यै स्वाहा। १०४. ॐ पृथ्वीतत्त्वाय स्वाहा।
१०५. ॐ जलतत्त्वाय स्वाहा। १०६. ॐ तेजस्तत्त्वाय स्वाहा।
१०७. ॐ वायुतत्त्वाय स्वाहा। १०८. ॐ आकाशतत्त्वाय स्वाहा।
१०९. ॐ गदायै स्वाहा। ११०. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।

१११. ॐ वज्राय स्वाहा। ११२. ॐ शक्तये स्वाहा।
११३. ॐ दण्डाय स्वाहा। ११४. ॐ खड्गाय स्वाहा।
११५. ॐ पाशाय स्वाहा। ११६. ॐ अंकुशाय स्वाहा।
११७. ॐ गौतमाय स्वाहा। ११८. ॐ भरद्वाजाय स्वाहा।
११९. ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। १२०. ॐ कश्यपाय स्वाहा।
१२१. ॐ जमदग्नये स्वाहा। १२२. ॐ वशिष्ठाय स्वाहा।
१२३. ॐ अत्रये स्वाहा। १२४. ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा।
१२५. ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। १२६. ॐ कौमार्यै स्वाहा।
१२७. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। १२८. ॐ वाराह्यै स्वाहा।
१२९. ॐ चामुण्डायै स्वाहा। १३०. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा।
१३१. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। १३२. ॐ वैनायिक्यै स्वाहा।

- तत्पश्चात् जिस मन्त्रादि का जप हुआ हो उसके दशांश संख्या के तुल्य हवन करें।

- आवाहित देवानां हवनानन्तरं यदि चण्डीपाठस्य अनुष्ठानं कृतं स्यात्तदा कवचार्गलाकीलक-पाठं कृत्वा अष्टोत्तर-नवार्ण-मंत्रैः हवनं कुर्यात्। ततः सम्पुट मंत्रैः होमं कृत्त्वा दुर्गासप्तशत्याः प्रथमोऽध्यायतः त्रयोदशोऽध्याय पर्यन्तं हवनं कुर्यात्। तदन्ते पुनः अष्टोत्तरशत सम्पुटमन्त्रैः नवार्ण-मंत्रैश्च हवनं कुर्यात्।

- अन्ते पुनः पञ्चवारुणादिकेन हवनं कुर्यात् ।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम ꣳ श्रयाय। अथा वयमादित्यव्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।।१।।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।२।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्वमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्य या नो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा। इदमग्नये न मम।।३।।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टे अस्याऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो वरुण रराणोव्रीहि मृडीक ε सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।४।।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेढो अवयासि सीष्टाः। यजिष्टोवह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ँ सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।५।।

ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।।६।।

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम।।७।।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।।८।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजापतये न मम।।९।।



अथ बलि-प्रदानम्

संकल्पः

(बलि प्रदानार्थ कुशाक्षत जल लेकर संकल्प करें)

पूर्वोच्चरित ग्रहगुणगणविशेषण विशिष्टायां .... गोत्रः.....नाम (शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास) अहं कारितस्य अमुक अनुष्ठानहोमकर्मणि शुभतायै दशदिग्पालेभ्यः नवग्रहेभ्यः क्षेत्रपालेभ्यश्च बलिप्रदानं करिष्ये।

(संकल्प द्रव्य सामने गिरा देवे तथा क्रमशः बलि प्रदान करें।)

दशदिक्पालेभ्यः बलिप्रदानम्

हवन कुण्ड या स्थण्डिल के चारों ओर क्रमशः पूर्वादि दशों दिशाओं में पत्ते या दोने में काली उड़द भात एवं दही भरकर उसके ऊपर घी का दीपक रखें और हांथ में अक्षत पुष्प जल लेकर कहे -

१. पूर्वे इन्द्राय बलिम्[१]- (बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो इन्द्र! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

२. अग्निकोणे अग्नये बलिम्- (बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अग्ने! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

३. दक्षिणे यमाय बलिम् - (बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो यम! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

४. नैर्ऋत्यकोणे निर्ऋतये बलिम्- (बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो निर्ऋते! दिशं रक्ष

---

१. एकतन्त्रेण दिक्पालबलिदानम् - ॐ इन्द्रादि-दशदिक्पालेभ्यः साङ्गेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः एतान् सदीपान् दधिमाषभक्त बलीन् समर्पयामि। प्रार्थना - भो भो इन्द्रादि-दशदिक्पालाः दिशं रक्षत बलिं भक्षत मम सपरिवारस्य सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्तारः, क्षेम कर्त्तारः, शांतिकर्त्तारः पुष्टि कर्त्तारः तुष्टि कर्त्तारः वरदा भवत। एभिर्बलिदानैः इन्द्रादिदशदिक्पालाः प्रीयन्ताम्।

बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

५. पश्चिमे वरुणाय बलिम् - (बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो वरुण! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

६. वायव्यकोणे वायवे बलिम्-(बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो वायो! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

७. उत्तरे कुबेराय बलिम् - (बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ कुबेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो कुबेर! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

८. ईशानकोणे ईशानाय बलिम्-(बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ ईशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो ईशान! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

९. ईशानपूर्वयोर्मध्ये ब्रह्मणे बलिम्-(बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ ब्रह्मणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो ब्रह्मन्! दिशं रक्ष

बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

१०. नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये अनन्ताय बलिम्-(बलिद्रव्यं संस्थाप्य हस्ते जलाक्षतमादाय)

ॐ अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधिमाष भक्तबलिं समर्पयामि। भो अनन्त! दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता तुष्टिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता वरदो भव।

ततो हस्ते जलं गृहीत्वा- **अनेन बलिदानेन इन्द्रादि-दश-दिक्पालाः प्रीयन्ताम्।** (जलं क्षिपेत्)

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे दशदिक्पाल बलिप्रदानम् सम्पूर्णम्।)

एकतन्त्रेण नव-ग्रहादिभ्यो बलिप्रदानम्

उक्त विधि से नौ पत्रों में बलि सजाकर सामने ईशानकोण की ओर रखकर तथा एक बलि पात्र वास्तुवेदी के पास रखकर क्रमशः निम्नलिखित वाक्य पढ़ें -

सूर्यादिग्रहेभ्यः अधिप्रत्यधिदेवता-पञ्च लोकपाल-वास्तोष्पतिसहितेभ्यः साङ्गायुधशक्ति- कुलेभ्यः इमं सदीप-दधि-माष-भक्त-बलिं समर्पयामि।

(अक्षत पुष्पजल सामने गिरा देवे। तथा हाथ जोड़कर प्रार्थना करे।)

भो भो सूर्यादिग्रहाः साङ्गायुधशक्तिकुला अधिप्रत्यधि-देवता-पंचलोकपाल वास्तोष्पति सहिताः इमं बलिं गृह्णीत मम सपरिवारस्य आयुः शांति-पुष्टि-तुष्टि-कर्तारश्च वरदा भवत।

हाथ में जल लेकर- **अनेन बलि-प्रदानेन अधिदेवता-प्रत्यधिदेवता-पञ्चलोकपाल-वास्तोष्पतिसहिताः सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्।** (जल सामने गिरा देवे।)

क्षेत्रपालेभ्यः बलिप्रदानम्

❑ बांस की डलिया या सूप में पत्ता बिछाकर, हांडी में काली उड़द दही भात जलपात्र (जल सहित) उसके ऊपर चतुर्मुख दीपक (तेल का) जलाकर हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर बलि प्रदान करें।

ॐ नहि स्पशमविदन्न न्यमस्माद् व्वैश्वानरात् पुर ऽएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता ऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्त्याय देवाः।

मंत्र पढ़कर बलिपात्र में छोड़ देवे - **ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय नमः** - कहते हुए जल, काला वस्त्र, रोली, सिन्दूर, फूल, माला, धूप, दीप, मिष्ठान्न, फल एवं दक्षिणा चढ़ाकर पूजन करके प्रार्थना करे -

क्षेत्रपाल महाबाहो महाबल पराक्रम।
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं नय नमोऽस्तुते।।

हाथ में अक्षत जल लेकर - **ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत-प्रेतपिशाच-डाकिनी-शाकिनी-पिशाचिनी-मारीगणबेतालादि परिवार-सहिताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं सचतुर्मुखदीप-दधि-माष-भक्त-बलिं समर्पयामि।**

अक्षत जल सामने गिरा देवे और हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

भो क्षेत्रपाल क्षेत्रं रक्ष बलिं भक्ष यज्ञं परिरक्ष मम सपरिवारस्य आयुः कर्ता क्षेमकर्त्ता शांतिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्त्ता वरदो भव। (हाथ में जल लेकर) **अनेन बलिप्रदानेन श्रीक्षेत्रपालः प्रीयताम्** - कहकर जल सामने गिरा दें।

❑ उस बलि पात्र को किसी सेवक द्वारा यजमान के शिर के चारों ओर एक बार घुमाकर किसी चौराहे में रखवा देवे। बलि ले जाते समय मंत्र पढ़े-

ॐ भूताय त्वा नारातये स्वरभि-विख्येषं दृ ६ हन्तां दुर्याः पृथिव्या मुर्वन्तरिक्षमन्वेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्य दित्या उपस्थेऽग्ने हव्य ँ रक्ष।।

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा। क्रन्दते स्वाहाऽवक्रन्दाय स्वाहा। प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा। गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा। निविष्टाय स्वाहोपविष्टाय स्वाहा। सन्दिताय स्वाहा। वल्गते स्वाहा। सीनाय स्वाहा। शयानाय स्वाहा। श्वपते स्वाहा। जाग्रते स्वाहा। कूजते स्वाहा। प्रबुद्धाय स्वाहा। विजृम्भमाणाय स्वाहा। विचृताय स्वाहा। स ꣳ हानाय स्वाहोपस्थिताय स्वाहाऽयनाय स्वाहा। प्रायणाय स्वाहा।।

- ❑ बलि ले जाते समय यजमान पीली सरसो छोड़े। जो सेवक बलि ले जाय वह पुनः घर में उस समय न प्रवेश करे, यदि उसका अन्दर आना आवश्यक हो तो दरवाजे से बाहर हांथ पैर धोकर ही अन्दर प्रवेश करे।
- ❑ यजमान पुनः पवित्र होकर आचमन करे।
- ❑ कुछ आचार्य घर या यज्ञ मण्डप से बाहर दक्षिण दिशा में कुछ दूर जाकर निर्जन स्थल में क्षेत्रपाल बलिदान कराते हैं।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे दिग्पालादि देवता–बलिदानं समाप्तम्)

स्विष्टकृत हवन-

पूर्णाहुति से पूर्व बची हुयी शेष समस्त हवन सामग्री का हवन करें।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम।।

पूर्णाहुति-संकल्पः -

(दाहिने हाथ में कुशाक्षत, जल, द्रव्य लेकर संकल्प करे)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौसंकीर्त्य) ....गोत्रः.......नामाहं मम मनोऽभिलषित धर्मार्थकामादि यथेप्सितायुरारोग्यैश्वर्य पुत्र पशु सुहृत् सम्बन्धि बन्ध्वादि प्राप्तयेऽस्मिन् कर्मणि आवाहित देवतानां प्रीतये च दत्तैताभिः आहुतिभिः परिपूर्णता सिद्धये वसोर्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होमं च करिष्ये।।

पूर्णाहुति संकल्प करके गरी के गोले में घी भरकर या पान में शाकल्य एवं सुपाड़ी रखकर "ॐ पूर्णाहुत्यै नमः" सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत **पुष्पाणि समर्पयामि**। इस मन्त्र से गन्धाक्षत पुष्प चढ़ाकर पूजन करें।

तत्पश्चात् स्रुच में घी डालकर उसके ऊपर पूर्णाहुति पदार्थ रखकर खड़े होकर पूर्णाहुति करें।

पूर्णाहुतिहोमः-

ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि गुं सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।

ॐ पूर्णा दर्व्वि परापत् सुपूर्ण्णा पुनरापत्। व्वस्नेव व्विक्क्रीडावहा ऽइषमूर्ज्ज गुं शतक्क्रतोः स्वाहा। इदमग्नये वैश्वानराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्क्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यः पुरुषाय श्रियै च न मम – इति प्रोक्षणीपात्रे त्यागः।

वसोर्धारा-होमः- आज्यस्थाली में बचे हुए घी को अग्नि में स्रुच से धार बनाकर पूर्वाग्र घृत धारा खड़े होकर छोड़ना चाहिए।

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्त्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्त्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।। इदं वाजादिभ्योऽग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम।

अग्निप्रार्थना –

ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम्।
तेजमायुष्यमारोग्यं देहि मे हव्यवाहन।।
भो भो अग्ने महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधन।
कर्मान्त्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सर्वदा।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे हवन विधिः सम्पूर्णा)

भस्मधारणम् –

(स्रुव द्वारा कुण्ड के ईशान–कोण से भस्म निकाल कर उसका त्र्यम्बकंयजामहे सुगन्धिंपुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। इस मन्त्र से अभिमन्त्रण करके आचार्य यजमान के ललाट, ग्रीवा, बाहु तथा हृदय में भस्म लगावें।)

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः – ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषं – ग्रीवायाम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं – बाह्वोः। तन्नोऽस्तु त्र्यायुषं – हृदि।

संस्रवप्राशनम् – प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षिप्त घृत को यजमान दाहिने हांथ की अनामिका से लेकर उसका प्राशन कर, हांथ धोवें।

ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः।
तं संस्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ।।

तत्पश्चात् आचमन करके प्रणीतापात्र में निहित पवित्र को ग्रन्थि मुक्त करके उसी से यजमान के शिर में प्रणीता के जल का मार्जन करें और मार्जन के बाद उस कुश–पवित्र को अग्नि में डाले देवे।

पूर्णपात्रदानम् – (दक्षिणा सहित पूर्णपात्र का दान करें)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः........गोत्रः.......नामाहं अस्य कर्मणः सिध्यर्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणं प्रजापतिदैवतं ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे।

ब्रह्मग्रन्थि विमोक – यदि कुश निर्मित ब्रह्मा हों तो उनकी गांठ खोल दें।

तर्पणः – पात्र में जल लेकर कुश से या आम्रपल्लवादि से जल द्वारा प्रधानदेव के मंत्रों से '**तर्पयामि**' यह कहता हुआ हवन की दशांश संख्या में तर्पण करें।

मार्जनम् – पुनः पात्र में जल, गाय का कच्चा दूध अथवा गंध चंदन से युक्त करके जल से कुश द्वारा '**मार्जयामि**' कहता हुआ अपने ऊपर जल छिड़के। तर्पण का दशांश मार्जन करना चाहिए।

- परिस्तरण किए गए कुश को अग्नि में प्रक्षेपित करें।

उत्तर पूजनम् – आवाहित देवताओं का तथा प्रधान देवता का यथोपचार उत्तर पूजन करें। पूजन के समय पुरुष सूक्तादि मन्त्र पढ़ें।

आर्तिक्यम्[1] (नीराजन)

एक थाली को अष्टदल या स्वस्तिक से सुसज्जित करके उसमें घी का त्रि, पञ्च या सप्तवर्ति दीपक से तथा कपूर से आवाहित देवताओं की तथा प्रधान देवता की श्रद्धाभक्ति पूर्वक आरती करें।

ॐ इद गुं हविः प्प्रजननं मे ऽअस्तु दशवीर गुं सर्व्वगण गुं स्वस्तये। आत्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि लोकसन्न्यभयसनि। अग्निः प्प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो ऽअस्म्मासु धत्त। आ रात्त्रि पार्त्थिव गुं रजः पितुरप्प्रायि धामभिः। दिवः सदा गुं सि बृहती व्वि तिष्ठ्ठस ऽआत्वेषं व्वर्त्तते तमः।।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

नीराजनं समर्पयामि आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः।

➢ वृहद् आरती के लिए २५२ पृष्ठ पर दी गई आरती को पढ़ें।

प्रदक्षिणा – (आरती लेकर अपने स्थान पर प्रदक्षिणा क्रम से घूमते हुए एक बार प्रदक्षिणा करे)

ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निषङ्गिणः।
तेषा गुं सहस्त्र योजने वधन्वानितन्मसि।।

---

१. आरती में चढ़ाये गये द्रव्य को आचार्य को देना चाहिए। नापित (नाई) पूजन या आरती में प्रयुक्त दक्षिणा का अधिकारी नहीं होता उसे केवल न्योछावर ग्राह्य है। यथा –
आर्तिक्ये तु यद् द्रव्यं, आचार्यं तन्निवेदयेत्।
मोहाद् नापिते दत्त्वा, पूजापुण्याच्च्युतो भवेत्।।
(रामेन्दु संहितायाम्)

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिण पदे पदे।।

प्रधान देवता के सामने आरती रखकर- **जलेन शीतलीकरणम्** - कहकर आरती के चारों ओर जल घुमाकर गिरावें तत्पश्चात् दाहिने हाथ में पुष्प लेकर- **पुष्पै: देवाभिवंदनम्** -कहकर आरती के ऊपर से तीन बार हाथ भगवान की ओर करें पुष्प भगवान के चरणों में चढ़ा देवें। **आत्माभिवंदनम्** कहते हुए आरती अपने हृदय की ओर दोनों हाथों से करते हुए शिर में लगाकर आरती ग्रहण करें। आरती लेने से पूर्व आरती पात्र में द्रव्य छोड़ना चाहिए। उपस्थित सभी भक्तगण आरती ग्रहण करें। तत्पश्चात् हाथ धोकर पुष्पाञ्जलि करें।

पुष्पाञ्जलि: – (पूजन में उपस्थित सभी लोग हाथ में पुष्प लेकर खड़े होकर मंत्र पढ़ने के बाद पुष्पांजलि समर्पित करें।)

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्प्रथमान्न्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।

ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया ऽएकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्याऽवसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।

ॐ व्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखो व्विश्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्प्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।।

१. ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
२. ॐ गणाम्बिकायै विद्महे, कर्मसिद्ध्यै च धीमहि, तन्नो गौरी प्रचोदयात्।
३. ॐ शुभ्रवर्णाय विद्महे, पाशहस्ताय धीमहि, तन्नो वरुणः प्रचोदयात्।
४. ॐ गौर्यादिभ्यश्च विद्महे कुलदेव्यै च धीमहि तन्नो मातृः प्रचोदयात्।
५. ॐ श्रियादिभ्यश्च विद्महे सरस्वत्यै च धीमहि तन्नो घृतमातृः प्रचोदयात्।
६. ॐ शिख्यादिभ्यश्च विद्महे वास्तुपुरुषाय धीमहि तन्नो वास्तुः प्रचोदयात्।
७. ॐ सर्वदेव्यै च विद्महे गजाननायै धीमहि, तन्नो योगिनि प्रचोदयात्।
८. ॐ अजरादिभ्यश्च विद्महे भैरवाय हि धीमहि तन्नो क्षेत्रपः प्रचोदयात्।
९. ॐ कात्यायन्यै विद्महे, कन्याकुमार्यै च धीमहि, तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।
१०. ॐ आदित्याय विद्महे, सहस्रकराय धीमहि, तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।
११. ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
१२. ॐ महालक्ष्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।
१३. ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

सेवन्तिका-बकुल-चम्पक-पाटलाब्जैः,
पुन्नाग-जाति-करवीर-रसालपुष्पैः।
बिल्व-प्रवाल-तुलसीदल-मञ्जीरीभिः,
त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद।।

नाना-सुगन्धि-पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अमुक देवताभ्यो नमः, मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना -

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च गुरुः त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

साष्टाङ्ग-प्रणाम – (साष्टाङ्ग प्रणाम करे।)

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन कृतो मया।।
गतं पापं गतं दुखं गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात्।।
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्माद् कारुण्य-भावेन रक्ष मां परमेश्वर।।

गणपति इत्यादि देवताओं की जय-जयकार करें।

अथ दान-संकल्पः

दक्षिणादान-संकल्पः

(सभी आचार्य सहित वरणित ब्राह्मणों को दक्षिणा देने हेतु हांथ में कुश, अक्षत, जल लेकर संकल्प करें।)

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौ संकीर्त्य) ....गोत्रोत्पन्नोऽहं ....नामाहं श्रुतिस्मृति-पुराणोक्त-फल-प्राप्तये संकल्पित समस्त कामना सिद्ध्यर्थं कृतस्य[1] (कारितस्य वा) अमुक कर्मणः (जपस्य पाठस्य[2] वा) पूजन-जप-पाठ-हवनकर्मणि सिद्ध्यर्थं तत् सम्पूर्ण-फल-प्राप्त्यर्थञ्च मनसोद्दिष्टां दक्षिणां साचार्याय ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे।।

---

१. स्वयं जपादि करने पर '**कृतस्य**' ब्राह्मणों से कराने पर '**कारितस्य**' का उच्चारण करें।

२. पूजन, जप, पाठ कथा श्रवण – जो किये हों मात्र उसी का उच्चारण करें।

भूयसीदान-संकल्पः

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौ संकीर्त्य) ..... गोत्रोत्पन्नः ...... नामाऽहं कृतस्यामुक कर्मणि यत्किञ्चिद् न्यूनातिरिक्त दोषं जातं तद्दोष निवृत्तये मनोत्साहं भूयसीमिमां दक्षिणां यथा काले ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृजे।।

गोदान (गोनिष्क्रिय दक्षिणा) संकल्पः-

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौ संकीर्त्य) .... गोत्रः.......नामाहं मयाचरितस्य अमुक कर्मणि साङ्गतासिद्ध्यर्थं सर्वविध शुभतायै परिपूर्णतायै च गोनिष्क्रयिणीमिमां दक्षिणां आचार्याय गोत्राय........शर्मणे तुभ्यं सम्प्रददे।।

❑ इसके बाद यदि अन्नदानादि कोई दान यजमान करना चाहे तो उसका भी संकल्प कर लेना चाहिए।

ब्राह्मणभोजनसंकल्पः –

यजमानः पुनः साक्षतोदकं गृहीत्वा संकल्पं कुर्यात्।

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौ संकीर्त्य) ...... गोत्रः ..... नामाऽहं कृतस्य अमुक कर्मणः साङ्गता सिद्धये तत्सम्पूर्णफलावाप्तये च यथासामर्थ्यं यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् अद्य (यथाकाले वा) अहं भोजयिष्ये भोजनान्ते दक्षिणाञ्च दास्ये। अन्येषां बन्धुबान्धवान् सुहृदान् सेवकाञ्च भोजयिष्ये।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे दानादि संकल्पः सम्पूर्णः)

यजमानाभिषेक :

❑ यजमान की पत्नी को यजमान के बाएं ओर बैठाकर आम्रपत्र या कुश से सपत्नीक सपुत्र सबन्धु बांधव यजमान के ऊपर प्रधान कलश तथा रुद्र

कलश के जल का सिञ्चन करें। यजमानाभिषेक के समय कुछ विद्वान शिवरामाष्टकम् का पाठ करते हैं जो कि पृ.सं. १९५ में दिया गया है।

ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्ज्जेदधातन । महेरणाय चक्षसे।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्म्माऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ[1]।

आपो जन यथा च नः।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्व गुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु। आरोग्यमस्तु । समृद्धिरस्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।

तिलकीकरणम्–

अभिषेक के पश्चात् यजमान के माथे में रोली एवं अक्षत का तिलक लगावे।

दीर्घायुस्त्वाय बलाय वर्च्चसे सुप्रजायस्त्वाय सहसा अथो जीव शरदः शतम्।।

रक्षाबन्धनम् –

यजमान एवं यजमान पत्नी के हाथ में कलावा (रक्षासूत्र) बाँधें।

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य गुं शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शत शारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षेमाचलमाचल।।

---

१. (**'यस्य क्षयाय जिन्वथ'** वाक्य पढ़कर अभिसिञ्चन का जल भूमि पर छिड़कना चाहिए, यजमान के ऊपर नहीं।)

मंत्राक्षत प्रदानम् –

यजमान एवं यजमानपत्नी को अक्षतपुष्प सहित प्रसाद देवे।

ॐ पुनस्त्वाऽदित्त्या रुद्द्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेन त्वन्तन्न्वं व्वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।

मन्त्रार्थाः सफलास्सन्तु पूर्णास्सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।

क्षमा प्रार्थना –

हाथ जोड़कर किये हुए कर्म में जो त्रुटि हुयी हो उसकी क्षमा याचना ईश्वर से करे।

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
गुह्याति गुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।

विसर्जनम् –

आवाहित देवताओं का विसर्जन अक्षत छोड़कर करें एवं कलश तथा देवों के स्थान को थोड़ा परिवर्तित कर देवे।

ॐ यज्ञ यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ स्वां योनिं गच्छ स्वाहा।
एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्व्ववीरस्तं जुषस्व स्वाहा।।

ॐ यान्तु देव गणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामार्थ सिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

विष्णु स्मरणम्

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादितिश्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
विष्णुस्मरणात् परिपूर्णतास्तु।।

इस प्रकार तीन बार विष्णु का स्मरण करके यजमान अपने आसन के नीचे जल गिराकर वहां की मिट्टी या जल अपने माथे में तिलक[१] के समान लगा लेवे अन्यथा पूजन का फल इन्द्र छीन लेता है। तत्पश्चात् प्रसाद ग्रहण करता हुआ, आचार्यों, ब्राह्मणों एवं श्रेष्ठ लोगों तथा मातापिता का चरण छूकर प्रणाम करें।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधस्य प्रथमो-भागः पूजन-विधिः सम्पूर्णा)

❑❑❑



१. अप्रोक्षित् जपस्थानाद् शक्रो हरति तज्जपम्।
तन्मृदा लक्ष्म कुर्वीत ललाटे तिलकाकृतिः।।

कर्मकाण्डप्रबोधः
द्वितीयो भागः



अथ पुरुषसूक्तम्

(वेदों में पुरुष सूक्त का महत्वपूर्ण स्थान है, परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के लिए पुरुष सूक्त मंत्रों से देवताओं का पूजन, विष्णु भगवान का अभिषेक, पाठ तथा हवन किया जाता है, अतः सुधीजन इसे कण्ठाग्र करें)

ध्यानम्

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यान-गम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैक-नाथम्।।

हरिः ओऽम् सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
सभूमि ६ सर्व्वतस्पृत्वा ऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।१।।
पुरुषऽएवेद ६ सर्व्वं यद्भूतं यच्च भाव्व्यम्।
उतामृतत्व स्येशानो यदन्नेनाति-रोहति।।२।।
एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोस्य व्विश्श्वा-भूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।३।।
त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा-भवत्पुनः।
ततो व्विष्वङ् व्यक्क्रा मत्साशनानशनेऽअभि।।४।।
ततो व्विराडजायत व्विराजोऽअधि-पूरुषः।
सजातो ऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथोपुरः।।५।।
तस्माद्यज्ञात् सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।।६।।
तत्माद्यज्ञात् सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दा ६ सि जज्ञिरे तम्माद्यजुस्तस्मादजायत।।७।।

तस्मादश्श्वा ऽअजायन्त ये के चोभयादतः।
गावोह जज्ञिरे तस्म्मात् तस्म्माज्जाता ऽअजावयः।।८।।

तं यज्ञं बर्हिषि प्प्रौक्षन् पुरुषञ्जातमग्ग्रतः।
तेन देवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।९।।

यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा ऽउच्च्येते।।१०।।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्न्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ᳪ शूद्रोऽअजायत।।११।।

चन्द्रमा-मनसो जातश्च्चक्षोः सूर्य्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।१२।।

नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष ᳪ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।
पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ऽअकल्प्पयन्।।१३।।

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत।
व्वसन्तो ऽस्यासीदाज्ज्यङ् ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः।।१४।।

सप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्न्वाना ऽअबध्नन्न्पुरुषं पशुम्।।१५।।

यज्ञेन यज्ञमय-जन्तदेवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्न्यासन्।
तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्तिदेवाः।।१६।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे शुक्ल यजुर्वेदीयं पुरुषसूक्तम् समाप्तम्)



अथ श्रीसूक्तम्

(ऋग्वेद में प्रस्तुत श्रीसूक्त २९ मंत्रों का प्राप्त होता है जो कि यहाँ उद्धत किया गया है, किन्तु प्राय: श्रीसूक्त प्रारम्भ से १६ मंत्रों का ही प्रयोग किया जाता है। श्रीसूक्त मंत्रों से किसी भी स्त्री देवताओं का पूजन विहित है, इसके पाठ से स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति होती है घी से हवन करने का और भी महत्त्व है।)

ध्यानम्

या सा पद्मासनस्था विपुल-कटितटी पद्मपत्रायताक्षी।
गम्भीरावर्त-नाभिस्तनभरनमिता शुभ्रवस्त्रोत्तरीया।।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणि-गण-खचितैस्नापिता-हेमकुम्भैः।
नित्यं सा पद्महस्ता वसतु मम गृहे सर्वमाङ्गल्य-युक्ता।।

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण-रजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१।।

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम्।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्।।४।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं,
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्ये,
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।५।।

आदित्य-वर्णे तपसोऽधिजातो,
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।

तस्य फलानि तपसा नुदन्तु,
मायान्तरा याश्च बाह्या ऽअलक्ष्मीः।।६।।

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।७।।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठाम् अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिम् असमृद्धिञ्च सर्वान्निर्णुद मे गृहात्।।८।।

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।९।।

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव-कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म-मालिनीम्।।११।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्म-मालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।१३।।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेम-मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवाह।।१४।।

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्च-दशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

पद्मानने पद्म-विपद्म-पत्रे पद्मप्रिये पद्म-दलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पाद-पद्मं मयि सन्निधस्तव।।१७।।

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्।।१८।।

अश्वदायि गोदायि धनदायि महाधने।
धनं मे जुषतां देवि सर्व कामांश्च देहि मे।।१९।।

पुत्रपौत्रधनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी-रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे।।२०।।

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विना।।२१।।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः।।२२।।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्त-जापिनाम्।।२३।।

सरसिज-निलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक-गन्धमाल्य-शोभे।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन-भूतिकरि प्रसीद मह्यम्।।२४।।

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत-वल्लभाम्।।२५।।

महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।२६।।

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीदेवी देवता मताः।।२७।।

ऋण-रोगादि-दारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः।
भयशोक-मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।२८।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहु पुत्रलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः।।२१।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे ऋग्वेदोक्तं श्री सूक्तम् समाप्तम्।)

अथ रुद्रसूक्तम्

(भगवान शिव की प्रसन्नता के लिए वैदिक रुद्र सूक्त के मंत्रों का पाठ करते हुए दूध, जलादि से स्नान कराना, शिव, हनुमान, भैरवादि का इन मंत्रों से पाठ पूर्वक षोडशोपचार पूजन करना, स्तुति रूप में इसका पाठ करना तथा इन मंत्रों से हवन करना अत्यंत पाप नाशक, शत्रु नाशक तथा रोग नाशक होता है, शिव जी की आराधना का रुद्रसूक्त ही प्रमुख अंग है।)

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंशम्।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशु-मृग-वराभीति-हस्त-प्रसन्नम्।।
पद्माशीनं समन्तात्स्तुतममर-गणैर्व्याघ्र-कृत्तिं वसानम्।
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

हरिःॐ भूर्भुवः स्वः, नमस्ते रुद्द्र मन्व्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः।
बाहुब्भ्यामुत ते नमः।।१।।

या ते रुद्द्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी।
तया नस्त न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।।२।।

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे।
शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ६ सीः पुरुषं जगत्।।३।।

शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाऽच्छा व्वदामसि।
यथा नः सर्व्व मिज्जगदयक्ष्म ६ सुमना ऽअसत्।।४।।

अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमो दैव्व्यो भिषक्।
अहींश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च्च यातुधान्न्योऽधराचीः परासुव।।५।।

असौ यस्ताम्म्रोऽअरुण ऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः।

ये चैन ᳪ रुद्द्रा ऽअभितो दिक्षु श्रिताः
सहस्रशोऽवैषा ᳪ हेड ऽईमहे।।६।।

असौ योऽवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः।
उतैनं गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः
स दृष्ट्टो मृडयाति नः।।७।।

नमोऽस्तु नीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये अऽस्य सत्त्वानो ऽहन्तेब्भ्योऽकरं नमः।।८।।

प्रमुञ्च धन्न्वनस्त्वमुभयो-रार्क्न्योंज्ज्यीम्।
याश्श्च ते हस्त ऽइषवः परा ता भगवो व्वप।।९।।

व्विज्ज्यं धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२।।
ऽउत। अनेशन्नस्य या ऽइषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।।

या ते हेतिर्म्मीढुष्टमहस्ते बभूव ते धनुः।
तया ऽस्म्मान्विश्श्वतस्त्वम-यक्ष्मया परिभुज।।११।।

परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मान्न्वृणक्तु व्विश्श्वतः।
अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्निधेहि तम्।।१२।।

अवतत्त्य धनुष्ट्वᳪ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य्य शल्ल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।।

नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्ष्णवे।
उभाब्भ्यामुत ते नमो बाहुब्भ्यां तव धन्न्वने ।।१४।।

मा नो महान्तमुत मा नो ऽअर्ब्भकं म्मा न
ऽउक्षन्तमुत मा न ऽउक्षितम्।
मा नो व्वधीः पितरं मोत मातरम्मा नः
प्प्रियास्तन्न्वो रुद्द्र रीरिषः।।१५।।

मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो
गोषु मा नो ऽअश्श्वेषु रीरिषः।
मा नो व्वीरान्नुद्र भामिनो
व्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे।।१६।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे शुक्लयजुर्वेदीयं रुद्रसूक्तम्)

शिवरामाष्टकम्

(कुछ विद्वान यजमान अभिषेक में शिवरामाष्टक का पाठ करते हैं अतः यहाँ दिया जा रहा है)

शिव हरे शिव राम सखे प्रभो त्रिविध-ताप-निवारण हे प्रभो।
अज जनेश्वर यादव पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।१।।

कमल-लोचन राम दयानिधे हर गुरो गजरक्षक गोपते।
शिवतनो भव शङ्कर पाहि मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।२।।

सुजन-रञ्जन मङ्गल-मन्दिरं भजति ते पुरुषः परमं पदम् ।
भवति तस्य सुखं परमद्भुतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।३।।

जय युधिष्ठिर-वल्लभ भूपते जय जयार्जित-पुण्य-पयोनिधे।
जय कृपामय कृष्ण नमोऽस्तु ते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।४।।

भव-विमोचन माधव मापते सुकवि-मानस-हंस शिवारते।
जनक-जारत राघव रक्ष मां शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।५।।

अवनि-मण्डल-मङ्गल मापते जलद-सुन्दर राम-रमापते।
निगम-कीर्ति-गुणार्णव गोपते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।६।।

पतित-पावन नाममयी लता तव यशो विमलं परिगीयते।
तदपि माधव मां किमुपेक्षसे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।७।।

अमरतापरदेव रमापते विजयतस्तव नामधनोपमा।
मयि कथं करुणार्णव जायते शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।८।।

हनुमतः प्रिय चापकर प्रभो सुरसरिद्धृत-शेखर हे गुरो।
मम विभो किमु विस्मरणं कृतं शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।९।।

अहरहर्जन-रञ्जन-सुन्दरं पठति यः शिवरामकृतं स्तवम् ।
विशति राम-रमा-चरणाम्बुजे शिव हरे विजयं कुरु मे वरम् ।।१०।।

अभिषेके पठेन्नित्यं शिवरामाष्टकमुत्तमम् ।
विजयो जायते तस्य सर्वपापात् प्रमुच्यते ।।११।।

मङ्गलाद्यष्ट-योगिनी-वैदिक-मन्त्राः

(सम्प्रति मंगलादि योगिनियों के वैदिक मंत्र सुलभ नहीं थे अतः अत्यन्त परिश्रम पूर्वक अन्वेषित करके योगिनी मंत्र दिए जा रहे हैं। योगिनी दशा, अन्तर्दशाओं में अरिष्ट कारक होने पर तत् मंत्रों का जप करने से लाभ होता है। मंगला की जप संख्या–८०००, पिङ्गला– १००००, धान्या – ११०००, भ्रामरी– २१०००, भद्रिका–२००००, उल्का–२४०००, सिद्धा– २७००० तथा संकटा की जप संख्या– ३३००० है।)

१. मङ्गला- ॐ अभिप्प्रवन्त सर्मनेव योषाः कल्ल्याण्ण्यः स्म्मयमानासो ऽअग्ग्निम्। घृतस्य धाराः समिधा नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः॥

२. पिङ्गला- आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह॥

३. धान्या- ॐ धान्न्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्त्वो दानाय त्त्वा व्यानाय त्वा । दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृब्भ्णात्वच्छिद्द्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥

४. भ्रामरी- ॐ विश्व ६ हि रिप्प्रं प्रवहन्ति देवी रुदिदाभ्यः शुचिरा पूतऽएमि । दीक्षा तपसो स्तनूरसि तां त्त्वा शिवा ᳪ शर्म्मां परिदये भद्रं वर्ण पुष्य्यन्॥

५. भद्रिका- ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन्। स सस्त्यश्वकः सु भद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

६. उल्का- ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्प्रयन्त्स्वः॥

७. सिद्धा- ॐ समक्ख्ये देव्या धिया सन्दक्षिण योरु चक्षसा। मा म आयुः प्रमोषीर्म्मो ऽअहं तव व्वीरं व्विदेय तव देवि सन्द्दशि॥

८. संकटा- ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः॥

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे मङ्गलाद्यष्टयोगिनी-वैदिक मन्त्राः समाप्ताः)

नवग्रह-वैदिकमन्त्राः

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट होने पर निम्नलिखित वैदिक मंत्रों का जप करने से शुभता प्राप्त होती है जप संख्या इस प्रकार है। सूर्य- ७०००, चन्द्रमा- ११०००, मंगल-१००००, बुध- ९०००, बृहस्पति-१९०००, शुक्र-१६०००, शनि-२३०००, राहु-१८००० तथा केतु-१७०००। कलियुग में उक्त संख्या का चतुर्गुणा करके जप कराने से पूर्ण लाभ होता है।

सूर्यमन्त्रः- ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

चन्द्रमन्त्रः- ॐ इमन्देवा ऽअसपत्न ꣳ सुबद्ध्वम्महते क्षत्त्राय महते ज्ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्ज्यायेन्द्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्त्रममुष्यै पुत्त्रमस्यै व्विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्म्माकं ब्ब्राह्मणाना ꣳ राजा।।

भौममन्त्रः- ॐ अग्गिनर्म्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्व्याऽअयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति।।

बुधमन्त्रः- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ग्ने प्प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्त्ते स ꣳ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्त्सधस्थे अद्ध्युत्तरस्मिन् व्विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्।।

बृहस्पतिमन्त्रः- ॐ बृहस्प्पते ऽअति यदर्य्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्प्रजात तदस्म्मासु द्रविणं धेहि चित्त्रम्।।

शुक्रमन्त्रः- ॐ अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्ब्रह्मणा व्व्यपिबत् क्षत्त्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं व्विपान ꣳ शुक्क्रमन्धस्येऽन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

शनिमन्त्रः- ॐ शन्नो देवीरभिष्ट्टयऽ आपो भवन्तु पीतये। शं य्योरभिस्त्रवन्तु नः॥

राहुमन्त्रः- ॐ कया नश्चित्त्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठ्ठया व्वृता॥

केतुमन्त्रः- ॐ केतुं कृण्ण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

ग्रहों के तंत्रसारोक्त तांत्रिक मंत्र एवं बीज मंत्र

सूर्य- ॐ घृणिः सूर्याय नमः। (ॐ ह्रीं ह्रौं सूर्याय नमः)।

चन्द्रमा- ॐ सोम् सोमाय नमः। (ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः)।

मंगल- ॐ अं अंगारकाय नमः। (ॐ हूँ श्रीं भौमाय नमः)।

बुध- ॐ बुं बुधाय नमः। (ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः)।

बृहस्पति- ॐ बृं बृहस्पतये नमः। (ॐ ह्रीं क्लीं हूँ बृहस्पतये नमः)।

शुक्र- ॐ शुं शुक्राय नमः। (ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः)।

शनि- ॐ शं शनैश्चराय नमः। (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः)।

राहु- ॐ रां राहवे नमः। (ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः)।

केतु- ॐ कें केतवे नमः। (ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः)।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे नवग्रहवैदिकतांत्रिकमन्त्राः सम्पूर्णाः)

□□

मूलनक्षत्र वैदिक-मन्त्राः

(आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा तथा मूल - ये ४ नक्षत्र गण्डमूल संज्ञक हैं जबकि अश्विनी, रेवती मलिन मूल कहे जाते हैं। ज्येष्ठा की अंतिम ४ घटी तथा मूल नक्षत्र की पूर्व की ४ घटी अभुक्त मूल कही गई है अतः इनकी शान्ति करनी चाहिए, इनकी शान्ति के लिए अश्विनी तथा रेवती के मंत्रों का ११००० जप तथा श्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्रों के मंत्र का २७००० संख्या में जप कराना चाहिए जबकि अभुक्त मूल होने पर ज्येष्ठा अथवा मूल नक्षत्र का (जिस नक्षत्र में जन्म हुआ हो उसके मंत्र का) एक लाख जप कराना चाहिए।)

१. अश्विनी-नक्षत्रमन्त्रः-

ॐ यावाङ्कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्।।

२. आश्लेषा-नक्षत्रमन्त्रः-

ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु।
येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः।।

३. मघा-नक्षत्रमन्त्रः-

ॐ उदीरतामवर ऽउत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुंय ऽईयुरवृका ऽऋतज्ञास्तेनो ऽवन्तु पितरो हवेषु।।

४. ज्येष्ठा-नक्षत्रमन्त्रः-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣸ हवे हवे सुहव ꣸ शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्क्रम्पुरुहूतमिन्द्र ꣸ स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।

५. मूल-नक्षत्रमन्त्रः-

ॐ माता च ते पिता च तेऽग्ग्रं व्वृक्षस्य रोहतः।
प्रतिलामीति ते पिता गभेमुष्टिमत ꣳ सयत्।।

६. रेवती-नक्षत्रमन्त्रः-

ॐ पूषन्तवव्व्रते व्वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्त ऽइहस्म्मसि।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे मूलनक्षत्रमन्त्राः सम्पूर्णाः)

पञ्चक-नक्षत्र वैदिक-मन्त्राः

(पंचक नक्षत्र में दाह संस्कार किए जाने की स्थिति में अथवा पंचक नक्षत्र में वर्जित कार्य किए जाने पर पंचक शान्ति की आवश्यकता होती है। पंचक नक्षत्रों में से जिस नक्षत्र में वर्जित कार्य किया गया हो उस नक्षत्र के मंत्र का २७००० जप करावे उसके अतिरिक्त अन्य चारों नक्षत्रों के मंत्रों का भी ५००० संख्या में जप कराना चाहिए।)

धनिष्ठामन्त्रः-

ॐ व्वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो धर्मोवऽसि व्विश्वधा ऽअसि। परमेण धाम्नाद ꣳ हस्वमाह्वाम्र्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्।।

शतभिषमन्त्रः-

ॐ व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्य ऽऋत सदन्न्यसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऽऋतसदनमासीद।।

पूर्वाभाद्रपदामन्त्रः-

ॐ त्वन्नो ऽअग्ग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअवयासि

सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांᳬसि प्रमु

मुग्ध्यस्मत्॥

उत्तराभाद्रपदामन्त्रः-

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्या यां हेतिम्परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमांᳬसम्परिपातु विश्वतः॥

रेवतीमन्त्रः-

ॐ पूषन्तव व्रते वयन्नरिष्येम कदाचन। स्तोतारस्तऽइहस्मसि॥

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे पञ्चक-नक्षत्र वैदिक-मन्त्राः समाप्ताः)

देवपूजन-वैदिकमन्त्राः

(सभी देवताओं के पूजन में प्रयोज्य)

आवाहनम्- ॐ अष्टौ व्यख्यत् ककुभः पृथिव्यास्त्री धन्व योजना सप्त सिन्धून्। हिरण्याक्षः सविता देव आगाद्दधद्रत्ना दाशुषे वार्याणि।।

प्रतिष्ठा- ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज्ञ ᳬ समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स ऽइह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

आसनम्- ॐ वर्षोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमन्तमभितिष्ठामि यो माकश्चाभिधासति।।

पाद्यम् - ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायाँश्श्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि॥

अर्घ्यः- ॐ त्रिपादूर्ध्व ऽउदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो व्विष्ष्वङ् व्यक्क्रामत्साशनानशने ऽअभि॥

आचमनम् - ॐ इमम्मे व्वरुणश्श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्यु राचके।

सर्वाङ्गस्नानम्-ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्ज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्क्रे व्वायव्व्यानारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये॥

पयःस्नानम्- ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

दधिस्नानम्- ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ᳪ षि तारिषत्॥

घृतस्नानम्- ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।

मधुस्नानम्- ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ᳪ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।

शर्करास्नानम् - ॐ अपा ᳪ रसमुद्वयस ᳪ सूर्ये सन्त ᳪ समाहितम्। अपा ᳪ रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो ऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

पञ्चामृतस्नानम् - ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

गन्धोदकस्नानम्- ॐ गन्धर्व्वस्त्वाव्विश्वावसुः। परिदधातु व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्याग्निरिड-ऽईडितः।।

सुगन्धिस्नानम्- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

शुद्धोदकस्नानम्- ॐ शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

वस्त्रोपवस्त्रम्- ॐ सुजातो ज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्स्वः। व्वासो ऽअग्ने व्विश्वरूप ꣳ संव्ययस्व विभावसो।।

यज्ञोपवीतम्- ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आ वोऽर्वाची सुमतिर्ववृत्याद ꣳ होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्येभ्यस्त्वा॥

गन्धः- ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

अक्षताः- ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्प्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी॥

पुष्पाणि (माला)- ॐ ओषधीः प्प्रतिमोदध्वं पुष्प्पवतीः प्प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्त्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्णवः।।

दूर्वा- ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

सिन्दूरम्- ॐ सिन्धोरिव प्प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्व्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः॥

सुगन्धितद्रव्यम्- ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्॥

परिमलद्रव्यम्- ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमा ꣳ सं प्परिपातु व्विश्वतः॥

धूपम्- ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः। देवानामसि व्वह्नितम ꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्॥

दीपम्- ॐ अग्निज्ज्योतिज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्योज्ज्योतिज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा॥

नैवेद्यम्- अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे॥

करोद्वर्तनम्- ॐ अ ꣳ शुना ते अ ꣳ शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः॥

ऋतुफलानि- ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ६ हसः।।

ताम्बूलम् - उतस्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्ण्णं न वेरनु वाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव ध्रजतो अङ्कं सं परि दधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा।।

दक्षिणा- ॐ यद्दत्तं यत् परादानं यत् पूर्त्तं याश्च दक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्व कर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत् ।।

प्रदक्षिणा-ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ᳪ सहस्त्रयोजनेऽव धन्नवानि तन्मसि।।

पुष्पाञ्जलिः- ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।

प्रार्थना- ॐ देवं देवं वोऽवसे देवं देवमभिष्टये ।
देवं देव ६ हुवेम वाजसातये गृणन्तो देव्या धिया।।

(इति कर्मकाण्ड प्रबोधे देवपूजनवैदिकमन्त्राः सम्पूर्णाः)



कण्ठाग्र-करणीय-वैदिक-मन्त्राः

१. गणेशमंत्रः- ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमो नमः।।

२. ब्रह्ममन्त्रः- ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः सबुध्न्याऽउपमाऽअस्य व्विष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्च व्विवः।।

३. विष्णुमन्त्रः- ॐ इदम्विष्णुर्व्विचक्क्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पा ँ सुरे स्वाहा।।

४. शिवमन्त्रः- ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

५. महाकालीमन्त्रः- ॐ कन्न्या ऽइव व्वहतु मेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि।

यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धाराऽअभितत्पवन्ते ।।

६. महालक्ष्मीमन्त्रः- ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मी सपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णान्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ।।

७. महासरस्वतीमन्त्रः- ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः।।

८. दुर्गामन्त्रः-

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोममारातीयतो निदहाति वेदः।
स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरतात्यग्निः।।

९. सूर्यमन्त्रः-

ॐ सूर्यरश्मिर्हरिकेशः पुरस्तात् सविता ज्योतिरुदयाँ२ अजस्त्रम्। तस्य पूषा प्रसवे याति विद्वान् संपश्यन्विश्वा भुवनानि गोपाः।।

१०. भैरवमन्त्रः-

ॐ येभूतानामधिपतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः।
तेषा ᳪ सहस्त्र योजनेऽवधन्वानितन्मसि।।

११. हनुमत् मन्त्रः- ॐ अस्मे रुद्द्रा मेहना पर्व्वतासो व्वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः स ᳪ सते स्तुवते धायि पज्ज्रऽइन्द्रज्ज्येष्ठा ऽअस्माँ२ ऽअवन्तु देवाः।।

१२. नृसिंह मन्त्रः- ॐ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्य्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुष त्रिषु व्विक्क्रमणेष्ष्वधिक्षियन्ति भुवनानि व्विश्श्वा।।

१३. वास्तुमन्त्रः-

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो ऽअनमीवो भवानः।
यत्त्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे सं चतुष्पदे ।।

१४. क्षेत्रपालमन्त्रः-

नहिस्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्श्वानरात्पुर ऽएतारमग्नेः।
एमेन मवृधन्नमृता ऽअमर्त्त्यं वैश्श्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

१५. योगिनीमन्त्रः-

योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे सखाय इन्द्रमूर्त्तये।।

१६. स्कन्दमन्त्रः- यदक्क्रन्दःप्प्रथमञ्जायमान ऽउद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू ऽउपस्तुत्यम्महिजातन्ते ऽअर्व्वन्।।

१७. नन्दीश्वरमन्त्रः- ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रन्दनो निमिष एष वीरः शत गुं सेना अजयत् शाकमिन्द्रः।।

१८. नाग (सर्प) मन्त्रः-

नमोऽस्तु सर्प्पेब्भ्यो ये के च पृथिवीमनु।
ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेब्भ्यःसर्प्पेब्भ्यो नमः।।

१९. बगलामुखीमन्त्रः-

अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि।
अभिप्प्रेहि निर्द्दह हृत्सुशोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्।।

२०. निर्गुण-परब्रह्म मन्त्रः-

ॐ नतस्य प्प्रतिमा ऽअस्ति यस्य नाम महद्यशः।
हिरण्यगर्ब्भऽइत्येषमामाहि ઙ सीदित्येषा यस्म्मान्न जातऽइत्येषः।।

२१. मृत्युञ्जय मन्त्रः-

ॐ त्र्यम्बकं य्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्व्वारुकमिव बन्धनान्म्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात्।।

२२. विश्वकर्म्मामन्त्रः-

ॐ व्विश्श्व-कर्म्मन्हविषा व्वद्र्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्।
तस्म्मै व्विशःसमनमन्त-पूर्व्वीरयमुग्ग्रो व्विहव्व्यो यथासत्।।

२३. देवपत्नीमन्त्रः-

ॐ तम्पत्क्नीभिरनुगच्छेम देवाःपुत्रैर्ब्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः।
नाकङ्गृब्भ्णानाः सुकृतस्य लोक-तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

२४. पितृ मन्त्रः-

ॐ पितुन्नु स्तोषम्महो धर्म्माणन्तविषीम्।
यस्य त्रितोव्योजसा व्वृत्रं व्विपर्व्वमर्द्दयत्।।

२५. मित्र मन्त्रः- ॐ मित्रस्य माचक्षुषेक्षद्ध्वमग्ग्रयः सगराः सगरास्त्थसगरेणनाम्ना रौद्रेणानीकेनपातमाग्ग्रयः पिप्पृतमाग्ग्रयोगो पायतमानमो वोऽस्तुमामाहि ᳬ सिष्टट।।

२६. तीर्थ मन्त्रः- ॐ उरु ᳬ हि राजा व्वरुणश्चकार सूर्य्याय पन्थामन्वेतवा ऽउ। अपदे पादाप्रतिधातवे ऽकरुता पवक्ता हृदया व्विधश्चित्। नमो व्वरुणायाभिष्ठितो व्वरुणस्य पाशः।।

२७. कुलदेवतामन्त्राः-

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयतिकश्चन्।
ससस्त्यश्वकःसुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

२८. सर्वदेवनमस्कारमन्त्रः- ॐ अग्निर्द्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्द्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता।।

२९. पृथ्वीमन्त्रः-

ॐ स्योना प्पृथिविनो भवानृक्षरानिवेसनी।
यच्छानः शर्म्म सप्प्रथाः।।

३०. जल-मन्त्रः-

ॐ अप्स्वग्ग्ने सधिष्ठवसौषधीरनुरुद्ध्यसे। गर्ब्भे सञ्जायसे पुनः।।

३१. तेज-मन्त्रः-

ॐ अग्निन्दूतम्पुरोदधे हव्व्य वाहमुपब्ब्रुवे। देवाँ२ऽआसादयादिह।।

३२. वायु-मन्त्रः-

ॐ व्वातो वा मनो वा गन्धर्व्वाः सप्तु वि ᳬ शतिः।
ते ऽअग्ग्रे ऽश्श्वमयुञ्जँस्ते ऽअस्मिमञ्जवमादधुः।।

३३. आकाश मन्त्रः-
ॐ यावाङ्कशामधुमत्यश्विना सूनृतावती।
तया यज्ञम्मिमिक्षतम्।।

३४. समुद्र-मन्त्रः- ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुःशम्भूर्म्मयो भूरभिमा व्वाहि स्वाहा मारुतोऽसि मरुतोङ्गणःशम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वाहि स्वाहा वस्यूरसि दुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयो भूरभिमा व्वाहि स्वाहा।।

३५. पर्वत-मन्त्रः- ॐ प्प्रपर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिच ऽइयानाः। ता ऽआववृत्रन्न धरागुदक्ता ऽअहिम्बुध्न्यमनुरीयमाणाः। व्विष्णोर्व्विक्रमणमसि व्विष्णोर्व्विक्रान्तमसि व्विष्णोः क्रान्तमसि।।

३६. सप्तर्षि-मन्त्रः-
ॐ सप्तऽऋषयः प्प्रतिहिताः शरीरे सप्तरक्षन्ति सदमप्प्रमादम्।
सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतो ऽअस्वप्नजौ सत्रसदौजदेवौ।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे कण्ठाग्रकरणीयवैदिक-मन्त्राः सम्पूर्णाः)

देवानां प्रार्थनीय श्लोकमन्त्राः

श्रीगणपति प्रार्थना-

यं ब्रह्म-वेदान्त-विदुः वदन्ति परं प्रधानं पुरुषं तथान्ये ।
विश्वोद्गतं कारणमीश्वरं वा तस्मै नमो विघ्न-विनाशनाय।।

श्रीशिव प्रार्थना-

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ,
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।

वन्दे सूर्य शशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्द-प्रियम् ,
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम् ।।

श्रीविष्णु प्रार्थना-

सशङ्खचक्रं सकिरीट-कुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहारवक्षःस्थल-कौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्।।

श्रीराम प्रार्थना-

नीलाम्बुजस्यामलकोमलाङ्गं, सीतासमारोपित-वामभागम्।
पाणौ महासायक-चारु-चापं, नमामि रामं रघुवंश-नाथम्।।

श्रीकृष्ण प्रार्थना-

वंशीविभूषित-करान्नव-नीरदाभात्,
पीताम्बरादरुण-बिम्बफलाधरोष्ठात्।
पूर्णेन्दुसुन्दरमुखादरविन्द-नेत्रात्,
कृष्णात्परं किमपि तत्त्वमहं न जाने।।

श्रीदुर्गा प्रार्थना-

दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैःस्मृतामतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख-भयहारिणि-का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

गौरी प्रार्थना-

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,
ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिकलता।
स्फुरत्काञ्ची शाटी पृथुकटितटे हाटकमयी,
भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।

श्रीसूर्य प्रार्थना-

ध्येयः सदा सवितृ-मण्डलमध्यवर्ती,
नारायणः सरसिजासन-सन्निविष्टः।
केयूरवान् मकर-कुण्डलवान् किरीटी,
हारीहिरण्मय-वपुर्धृत-शङ्खचक्रः।।

श्रीहनुमान प्रार्थना-

मनोजवं मारुत-तुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथ-मुख्यं, श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

श्रीसरस्वती प्रार्थना-

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्र-वस्त्रावृता।
या वीणा वर-दण्ड-मण्डित-करा या श्वेत-पद्मासना।।
या ब्रह्माच्युत-शङ्कर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता ।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा ।।

श्रीकालभैरव प्रार्थना-

ॐ करकलितकपालः कुण्डलीदण्डपाणिः,
तरुणतिमिरनीलः व्यालयज्ञोपवीती।
क्रतुसमयसपर्य्या-विघ्नविच्छेद-हेतुः,
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ।।

सर्वदेव प्रार्थना-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या च गुरुः त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

प्रयागराज प्रार्थना -

सितासिते यत्रतरङ्गचामरे नद्यौ विभाते मुनिभानुकन्यके।
नीलातपत्रं वट एव साक्षात् स तीर्थराजो जयति प्रयागः।।

ग्रहों के प्रार्थनीय मंत्र-

सूर्य- ॐ ग्रहाणामादिरादित्यो लोक-रक्षण-कारकः।
विषमस्थान-सम्भूतां पीडां हरतु ते रविः।।

चन्द्रमा- ॐ रोहिणीशः सुधामूर्तिः सुधागात्रः सुधाशनः।
विषमस्थान-सम्भूतां पीडां हरतु ते विधुः।।

मंगल- ॐ भूमिपुत्रो महातेजा जगतां भयकृत् सदा।
वृष्टिकृद् वृष्टिहर्ता च पीडां हरतु ते कुजः।।

बुध- ॐ उत्पात-रूपो जगतां चन्द्रपुत्रो महाद्युतिः।
सूर्य-प्रियकरो विद्वान् पीडां हरतु ते बुधः।।

बृहस्पति- ॐ देवमन्त्री विशालाक्षः सदा लोकहिते रतः।
अनेक-शिष्य-सम्पूर्णः पीडां हरतु ते गुरुः।।

शुक्र- ॐ दैत्यमन्त्री गुरुस्तेषां प्राणदश्च महामतिः।
प्रभुस्तारा-ग्रहाणाञ्च पीडां हरतु ते भृगुः।।

शनि- ॐ सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीडां हरतु ते शनिः।।

राहु- ॐ महाशिरा महावक्त्रो दीर्घदंष्ट्रो महाबलः।
अतनुश्चोर्ध्व-केशश्च पीडां हरतु ते क्रमः।।

केतु- ॐ अनेक-रूप-वर्णैश्च शतशोऽथ सहस्रशः।
उत्पातरूपो जगतां पीडां हरतु ते शिखी।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे देवप्रार्थनीयश्लोकाः सम्पूर्णाः)





महामृत्युञ्जयमन्त्रजपविधिः

पवित्राचमनं आसनसुद्धिं विधाय शिखाबन्धनं कृत्वा भाले त्रिपुण्डं धृत्वा हस्ते जलाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा संकल्पं कुर्यात् -

संकल्पः - हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ...... (देशकालौ संकीर्त्य) ..... गोत्रोत्पन्नस्य .... नामकस्य यजमानस्य ..... शरीरे उत्पन्न-उत्पत्स्यमाणानां-अखिलारिष्ट निवृत्तये श्रीमहामृत्युञ्जय-प्रसादाद् दीर्घायुष्य-सततारोग्यतावाप्तये श्रीमहामृत्युञ्जय-देवताप्रीत्यर्थं यजमानेन संकल्पित महामृत्युञ्जय-मंत्रजपसंख्या-पूर्त्तयेऽद्य यथासंख्याकं जपं ...... गोत्रः ....शर्माऽहं करिष्यामि।।

विनियोगः -

ॐ हौं ॐ जूं सः ॐभूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ - अस्य श्रीमहामृत्युञ्जय-मंत्रस्य वामदेव-कहोल-वसिष्ठाऋषयः पंक्तिर्गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि सदाशिव-महामृत्युञ्जय रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः, श्रीं बीजं श्रीमहामृत्युञ्जय-देवता-प्रीतये मम (यजमानस्य) अभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।।

ऋष्यादिन्यासः-

वामदेव-कहोल-वशिष्ठाऋषयः-मूर्ध्नि।।
पंक्तिर्गायत्री अनुष्टुप् छन्दांसि - वक्त्रे।।
सदाशिव-महामृत्युञ्जय-रुद्रदेवतायै नमः - हृदि।।
ह्रीं शक्तये नमः-लिङ्गे।। श्रीं बीजाय नमः-पादयोः।।

करन्यासः -

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं, ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय–तर्जनीभ्यां नमः।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा–मध्यमाभ्यां नमः।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं हौं–अनामिकाभ्यां नमः।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय–कनिष्ठिकाभ्यां नमः।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल मां रक्षरक्ष अघोराय–करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

हृदयादिन्यासः -

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं, ॐ नमोभगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा–हृदयाय नमः।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमोभगवते रुद्राय अमृतमूर्त्तये मां जीवय–शिरसे स्वाहा।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं ॐ नमोभगवते रुद्राय चन्द्रशिरसि जटिने स्वाहा–शिखायै वषट्।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हां हीं हौं–कवचाय हुम्।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमोभगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्राय–नेत्रत्रयाय वौषट्।।

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वाल मां रक्षरक्ष अघोराय–अस्त्राय फट्।।

पदन्यासः-

ॐ त्र्यम्बकं–शिरसि।। ॐ यजामहे–भ्रुवोः।। ॐ सुगन्धिम्–नेत्रयोः।।

ॐ पुष्टिवर्द्धनम्- मुखे। ॐ उर्व्वारुकम्- गण्डयोः।। ॐ इव-हृदये।। ॐ बन्धनात्-जठरे।। ॐ मृत्योः-लिङ्गे।। ॐ मुक्षीय-उर्वोः।। ॐ मा-जान्वोः।। ॐ अमृतात्-पादयोः।।

व्यापकोन्यासः - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् इति मन्त्रेण व्यापकं न्यासं कृत्वा ध्यानं कुर्यात्।।

ध्यानम् -

ॐ हस्ताम्भोज युगस्थ कुम्भ-युगलादुद्धृत्यतोयं शिरः।
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वाङ्के सकुम्भौ करौ।।
अक्षस्रग्मृग-हस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थ चन्द्रस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं मृत्युञ्जयं त्र्यम्बकम्।।१।।
चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्
हस्ताब्जेन दधत्सु दिव्यममलं हास्यास्य पङ्केरुहम्।
सूर्येन्द्वग्नि-विलोचनं करतलैः पाशाक्ष-सूत्राङ्कुशा-
म्भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।२।।

मानसोपचारपूजनम् -

ॐ लं पृथ्व्यात्मकम्- गन्धं समर्पयामि।।
ॐ हं आकाशात्मकम्- पुष्पं समर्पयामि।।
ॐ यं वाय्वात्मकम्- धूपं समर्पयामि।।
ॐ रं तैजसात्मकम्- दीपं समर्पयामि।।
ॐ वं अमृतात्मकम्- नैवेद्यं समर्पयामि।।
ॐ सं सर्वात्मकम् - मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।।

इति मानसोपचारैः सम्पूज्य जपमालिकां सम्प्रार्थयेत्-

ॐ मां माले महामाये सर्वसक्तिस्वरूपिणी,
चतुवर्गस्तत्वयि न्यस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।
अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे,
जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्धये।।

ॐ अक्षमालिधिपतये सुसिद्धिं देहि, देहि सर्वमन्त्रार्थ साधिनि, साधय साधय, सर्वसिद्धिं परिकल्पय परिकल्पय मे स्वाहा, ॐ ह्रीं अक्षमालिकायै नमः।।

इति मालिकां सम्प्रार्थ्य मंत्रं जपेत् –

महामृत्युञ्जयमन्त्रः –

ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्। ऊर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ।।

संकल्पितसंख्यापरिमितं जपं कृत्वा देवस्य दक्षिणे करे जपं समर्पयेत्।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान् महेश्वर।।

अनेन कृतेन महामृत्युञ्जयमंत्र–जपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जय रुद्रो देवता प्रीयतां न मम।। श्रीमहामृत्युञ्जयार्पणमस्तु। इति जलं क्षिपेत्।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे महामृत्युञ्जयमंत्रजपविधिः सम्पूर्णाः)



जन्मोत्सव (बर्थ डे) पूजन विधि (वर्धापन)

जन्मोत्सव जन्म तिथि में मनाना अधिक समीचीन होता है किन्तु वर्तमान समय में लोग प्रायः आंग्ल दिनाङ्क के अनुसार जन्मोत्सव पाश्चात्य विधि से मनाते हैं। जन्म होता है सनातन धर्मावलम्बी हिन्दू के घर में और जन्मोत्सव मनाते हैं ईसाइयों की विधि से यही हमारी विडम्बना है। सभी से आग्रह है कि अपने धर्मानुसार ही जन्मोत्सव मनाएँ। हम यहाँ पर संक्षेप में जन्मोत्सव की विधि प्रस्तुत कर रहे हैं, जिसकी बहुत दिनों से अपेक्षा की जा रही थी।

जिस माह की जिस तिथि में बालक का जन्म हो उसी माह की उसी तिथि को प्रातः ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर माता पिता तथा श्रेष्ठ लोगों को प्रणाम करके प्रातः स्मरण करने के बाद घर एवं घर के आस पास सफाई करे तत्पश्चात् नित्यक्रिया सम्पादित करके स्नान करते समय तिल चावल का चूर्ण गंगाजल में मिलाकर स्नान के जल पात्र में मिलाकर स्नान करें। तत्पश्चात् सन्ध्योपासन, सूर्यार्घ्यदानादि करके नवीन पवित्र वस्त्र धारण करके यथारुचि आभूषणादि धारण करें, घर में किसी पवित्र स्थान में सुन्दर आसन में पूर्वाभिमुख बैठकर

पत्नी को अपने दाहिने तथा बालक को (जिसका जन्मोत्सव मना रहे हैं उस बालक को) दाहिने बैठाकर सामने घी का दीपक जलावें। पवित्रीकरण, आचमन करके तीन प्राणायाम करें। मस्तक में भस्म, त्रिपुण्ड या यथारुचि सम्प्रदायानुसार चन्दन लगाकर स्वस्तिवाचन मंगलश्लोक पाठ करने के बाद दाहिने हाथ में अक्षत पुष्प जल द्रव्य तथा कुशादि लेकर संकल्प करें -

संकल्प -

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौ संकीर्त्य) ..... गोत्रः ..... नामाहं (शर्माहं/वर्माहं/गुप्ताहं वा) मम (अमुक गोत्रस्य अमुक नामधेयास्य शिशोः वा) दीर्घायुः श्रीतेजोवृद्धिद्वारा श्रीजगदीश्वर प्रीत्यर्थम् अद्यदिने स्वकीयस्य (स्व शिशोः) वर्धापनाख्यं कर्म करिष्ये। अस्मिन् वर्धापनाख्ये कर्मणि निर्विघ्नतायै गणपत्यादि देवानां कुलदेवानां सप्तचिरजीवीनां षष्ठीदेव्याश्चावाहनं पूजनं च करिष्ये।

इस प्रकार संकल्प करके प्रस्तुत पुस्तकानुसार गणेशगौरीकलश षोडशमातृका, सप्तघृतमातृकाओं का आवाहन पूजन करके निम्नलिखित देवताओं का आवाहन पूजन करें।

एक काठ की चौकी में श्वेत या पीत वस्त्र बिछाकर उसमें २१ कोष्ठक बनाकर अक्षत पुञ्ज रखे।

पूर्व

उत्तर / दक्षिण

७	६	५	४	३	२	१
१४	१३	१२	११	१०	९	८
२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५

पश्चिम

उक्त क्रम से अक्षत पुष्प छोड़ते हुए आवाहन करें –

१. ॐ गणपतये नमः श्रीगणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

२. ॐ कुलदेव्यै नमः, कुलदेवीमावाहयामि स्थापयामि।

३. ॐ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमावाहयामि स्थापयामि।

४. ॐ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

५. ॐ महेश्वराय नमः, महेश्वरमावाहयामि स्थापयामि।

६. ॐ इष्टदेवतायै नमः, इष्टदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

७. ॐ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

८. ॐ जन्मर्क्षाय नमः, जन्मर्क्षमावाहयामि स्थापयामि।

९. ॐ षष्ठीदेव्यै नमः, षष्ठीदेवीमावाहयामि स्थापयामि।

१०. ॐ मार्कण्डेयाय नमः, मार्कण्डेयमावाहयामि स्थापयामि।

११. ॐ अश्वत्थाम्ने नमः, अश्वत्थाममावाहयामि स्थापयामि।

१२. ॐ बलये नमः, बलिमावाहयामि स्थापयामि।

१३. ॐ व्यासाय नमः, व्यासमावाहयामि स्थापयामि।

१४. ॐ विभीषणाय नमः, विभीषणमावाहयामि स्थापयामि।

१५. ॐ कृपाचार्य्याय नमः, कृपाचार्यमावाहयामि स्थापयामि।

१६. ॐ परशुरामाय नमः, परशुराममावाहयामि स्थापयामि।

१७. ॐ बलभद्राय नमः, बलभद्रमावाहयामि स्थापयामि।

१८. ॐ हनुमते नमः, हनुमतमावाहयामि स्थापयामि।

१९. ॐ स्थानदेवतायै नमः, स्थानदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

२०. ॐ वास्तुदेवतायै नमः, वास्तुदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

२१. ॐ क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपालमावाहयामि स्थापयामि।

इस प्रकार आवाहन करके प्रतिष्ठा करें -

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों३ प्रतिष्ठ।।

इस मन्त्र से प्रतिष्ठा करके पुरुषसूक्त मंत्रों से अथवा पूजनमंत्रों से **ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपत्यादि आवाहितेभ्यो देवेभ्यो नमः** कहते हुए षोडशोपचार पूजन करें। नैवेद्य में दही भात चढ़ाना आवश्यक है।

प्रार्थना -

ॐ जय देवि जगन्मातर्जगदानन्द-कारिणी।
प्रसीद मम कल्याणि महाषष्ठि नमोऽस्तु ते।।

मार्कण्डेयाय मुनये नमस्ते महदायुषे।
चिरञ्जीवी यथा त्वं भो भविष्यामि तथा मुने।।

रूपवान् वित्तवानायुः श्रिया युक्तं च मां (शिशुं) कुरु।।
चिरञ्जीवी यथा त्वं भो मुनीनां प्रवरो द्विज!
कुरुष्व मुनिशार्दूल! तथा मां चिरजीविनम् ।
(बालं मे चिरजीविनम्)।।

त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि च।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्द्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे।।

ॐ अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।

सप्तैतांश्च स्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं साग्रमप-मृत्युविवर्जितः।।

प्रीयन्तां देवताः सर्वाः पूजां गृह्णन्तु तां मम।
प्रयच्छन्त्वायुरारोग्यं यशः सौख्यञ्च सर्वदा।।

मन्त्रन्यूनं क्रियान्यूनं द्रव्यन्यूनं महामुने।
यदर्चितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

इस प्रकार प्रार्थना करके दाहिने हाथ में जल लेकर पूजा समर्पित करे- **अनेन कृतेन यथोपचारैः पूजनेन गणपत्यादि क्षेत्रपालान्ताः देवताः प्रीयन्ताम् न मम**-कहकर जल सामने गिरा देवें।

तत्पश्चात् जातक जितने वर्ष का हो उतने घी के दीपक जलाकर देवताओं के सामने रखे २५ वें वर्ष की पूजा में २४ छोटे दिए तथा एक बड़ा दीपक (अथवा एक बड़ा दीपक) जलावें इसी प्रकार ५० वें वर्ष में ४८ छोटे दीपक तथा दो बड़े दीपक (अथवा दो बड़े दीपक) जलावें ७५ वें वर्ष में ७२ छोटे दीपक तथा तीन बड़े दीपक (अथवा तीन बड़े दीपक) जलाना चाहिए, यदि किसी का २६ वाँ जन्मदिन है तो २५ दीपक छोटे तथा एक बड़ा दीपक (अथवा एक बड़ा तथा एक छोटा दीपक) इसी तरह ५१ वें जन्म तिथि में २ बड़े दीपक ४९ छोटे दीपक (अथवा २ बड़े दीपक तथा एक छोटा दीपक) जलावें इसीक्रम के अनुसार दीपक की व्यवस्था करे (यहाँ यह ध्यातव्य है कि जन्म तिथि में दीपक जलाने से आयु आरोग्यता, श्री, ज्ञान, तेज तथा यश की वृद्धि होती है कतिपय धर्म में दीपक बुझाने की परम्परा है जो कि अशुभ एवं उक्त आयु आरोग्यतादि को नष्ट करने वाली है, अतः दीपक बुझाने की परम्परा से सर्वथा दूर रहें। केक काटना भी अशुभ है। अतः यह सब न करें इससे बालक के संस्कार नष्ट होते हैं। केक के स्थान में मिष्ठान्न तथा फल का वितरण करें) सभी दीपक जलाकर उनका गन्धाक्षत पुष्प से पूजन करके प्रार्थना करें-

ॐ तेजमायुष्यमारोग्यं श्रीर्ज्ञानं बलमुत्तमम्।
दीपज्योतिर्नमस्तेऽस्तु पाहि मां सर्वदा शुभा।।

अन्त में आवाहित देवताओं के लिए होम करें तथा पायस (खीर) की बलि देवें। पूर्णाहुति, उत्तर पूजनादि करके दक्षिणादि संकल्प करके ब्राह्मण आचार्य को वस्त्रदक्षिणादि से संतुष्ट करें। तत्पश्चात् जिसका जन्मोत्सव हो उसे तिल गुड़ मिलाकर दूध पिलावें -

ॐ सगुडं तिलसम्मिश्रम् अञ्जल्यर्धमितं पयः।
मार्कण्डेयाद्वरं लब्ध्वा पिबाम्यायुर्विवृद्धये।।

बालक को तिलक लगाकर रक्षा बाँधे और मंत्राक्षत (प्रसाद) देकर आशीर्वाद प्रदान करें।

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदशत गुं शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रबाम शरदः शतमदीनाः श्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

अन्य सभी उपस्थित लोग भी बालक को तिलक लगाकर आशीर्वाद प्रदान करें। बालक सब का पैर छूकर प्रणाम करे, दक्षिणादानादि करके अवाहित देवताओं का विसर्जन करके विष्णु स्मरण करें। यथाशक्ति ब्राह्मणभोजन दानादि करें।

* कुछ लोग जन्मदिन में वर्षफल श्रवण करते हैं।

विशेष - प्रतिवर्ष जन्म तिथि में फलदार, छायादार, अथवा फूलदार वृक्ष का आरोपण अवश्य करें। (स्थानाभाव होने पर गमले में भी वृक्ष लगाया जा सकता है।) उस वृक्ष का संरक्षण सिञ्चनादि भी जातक द्वारा ही किया जाना चाहिए, स्मरणार्थ वृक्ष के पास अपने जन्मातिथि वर्षादि लिख सकते हैं। वृक्षारोपण करने से जीवन में पुष्टि तथा वंशवृद्धि होती है तथा जातक की अकालमृत्यु से रक्षा होती है।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे वर्धापनं जन्मोत्सवविधिः सम्पूर्णा)

अथ वाहन-पूजन-विधिः

आधुनिक भौतिक युग में प्रायः सभी लोग आवागमन के लिए कोई न कोई वाहन क्रय करते हैं। वाहन जहाँ एक ओर सुख सुविधा के साधन हैं वहीं अकालमृत्यु और दुर्घटना के कारण भी हैं, कोई भी व्यक्ति नहीं चाहता कि मेरे वाहन से मेरी अथवा किसी अन्य की मृत्यु या किसी प्रकार की दुर्घटना हो, अतः स्वाभाविक है ऐसी परिस्थिति में दैवीय शक्तियों की मान्यता बढ़ जाती है। ईश्वर ही सर्वशक्तिमान है और उसी की कृपा से इस चराचर विश्व का चमत्कार दृष्टिगोचर होता है। अतः परमात्मा की कृपा से हम निर्विघ्न रूप से वाहन का संचालन कर सकते हैं। जीवन में किसी प्रकार की घटनाएं हमारे वाहन से न हों, यह नवक्रीत वाहन हमें सुख सौविध्य प्रदान करे संकट नहीं। इस उद्देश्य से

वाहन का पूजन करना चाहिए। वाहन किसी अज्ञात शक्ति से चलता है यद्यपि उसे इंजन या मशीनरी के नाम से जानते हैं तथापि इंजन को भी शक्ति कोई और ही प्रदान करता है। जो सर्व शक्ति सम्पन्न है, विश्व की भी अद्भुत शक्ति है जिसे हम शक्ति, प्रकृति, दुर्गा, काली इत्यादि नामों से जानते हैं। यहाँ वाहन में वाहन अधिष्ठातृ देवी के रूप में इन्हीं की पूजा की जाती है। वाहन ऐश्वर्य समृद्धि का प्रतीक लक्ष्मी स्वरूप है, उसके पहिए, टायर इत्यादि काली शक्ति के प्रतीक हैं तथा वाहन संचालित करते समय चालक की बुद्धि नियंत्रित रहे अतः चालक के बैठने का स्थान सरस्वती स्वरूप है अतः वाहन में इंजन या मध्य में लक्ष्मी का, पहिए में काली का तथा चालक की सीट में सरस्वती का पूजन करना चाहिए।

पूजन विधि- पश्चिममुख वाहन खड़ा करके वाहनाभिमुख (अर्थात् पूर्वाभिमुख) वाहन स्वामी खड़ा होकर अपने को पवित्र करे, तीन बार आचमन करके माथे में कुंकुम का टीका लगाने के पश्चात् हाथ में अक्षत पुष्प लेकर स्वस्ति वाचन एवं मंगलश्लोक का पाठ करे।

संकल्प- (दाहिने हाथ में कुश-अक्षत, जल, पुष्प, द्रव्यादि लेकर संकल्प करे)

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः (देशकालौ संकीर्त्य) .... गोत्रः .... नामाहं (शर्मा/वर्मा/गुप्ता/दास) श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फल प्राप्तये अस्य नवक्रीत अमुक वाहनस्य दीर्घकाल पर्यन्तं निर्विघ्न रूपेण अबाधगत्या संचालनार्थं वाहनेनानेन सुख सौविध्य यशः लभादि प्राप्तये श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीनां वाहनाधिष्ठातृ देवतानां वाहनेऽस्मिन् यथाविहिताङ्गेषु आवाहनं पूर्वकं प्रतिष्ठा पूजनञ्च करिष्ये।

(संकल्प द्रव्य वाहन के सामने किसी पात्र में रख दें)।

- तत्पश्चात् हाथ जोड़कर गणपति स्मरण करके अपने इष्ट देवता कुल देवता का स्मरण करें।

ब्राह्मण पूजन– ब्राह्मण के माथे में तिलक लगाकर वरण करें।

वरण संकल्पः– हाथ में कुशाक्षत जल तथा वरण द्रव्य (वस्त्र, पात्र, दक्षिणा) रखकर संकल्प करें।

अद्य .... गोत्रः नामाहं अस्मिन् वाहनपूजन कर्मणि अमुक गोत्रं अमुक शर्माणं एभिः वरणद्रव्यैः त्वामहं वृणे। (वरण द्रव्य ब्राह्मण को दे देवे)

- तदनन्तर अक्षत पुष्प लेकर– **ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन्। ससत्स्वकः सुभद्रिकाम्काम्पील वासिनीम् । श्रीमहाकाल्यै नमः महाकालीमावाहयामि स्थापयामि।** (कहकर अक्षत पुष्प सभी पहियों में छोड़ देवें।)
- पुनः अक्षत पुष्प लेकर – **ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्म्। इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्व लोकम्म इषाण। श्री महालक्ष्म्यै नमः महालक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।** (मंत्र पढ़कर इंजन के पास अक्षत पुष्प छोड़ देवें।)
- पुनः अक्षत पुष्प लेकर–

ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती।
यज्ञं वष्टु धियावसुः।। श्री महासरस्वत्यै नमः
महासरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि पूजयामि।

(कहकर चालक के सीट में अक्षत पुष्प छोड़ देवें।)

प्रतिष्ठा–

(तत्पश्चात् तीनों स्थान में अक्षत पुष्प छोड़कर प्रतिष्ठा करें) **ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों ँ प्रतिष्ठ। (अथवा अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्) ॐ वाहनाधिष्ठातृ देवताभ्यो नमः वाहनेऽस्मिन्**

प्रतिष्ठापयामि पूजयामि। (इस प्रकार प्रतिष्ठा करके)

(**ॐ वाहनाधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः** इस मंत्र से अथवा श्रीसूक्त, पुरुषसूक्त मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करे)

तीनों स्थान पर पाद्य, अर्घ्य, आचमन के लिए तीन-तीन बार जल गिरावें। प्रदक्षिण क्रम से घूमते हुए सम्पूर्ण वाहन में कुश दूर्वा अथवा पुष्प से जलाभिषिञ्चन करे। वस्त्र, रक्षा चढ़ाकर चंदन, कुंकुम, सिन्दूर लगावे अक्षत, पुष्प, माला चढ़ाकर धूप, दीप दिखावे, नैवेद्य में मिष्ठान्न फल समर्पित करे पानसुपाड़ी चढ़ाकर दक्षिणा चढ़ावे तत्पश्चात् नारिकेल बलि काली के लिए प्रदान करे-

जयंती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते।।

इस मंत्र से नारियल तोड़कर आगे टायर के नीचे रख देवे। तत्पश्चात् गाड़ी स्टार्ट करे-

मंगलं भगवान विष्णुः मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्ष मंगलायतनो हरिः।।

इस मंत्र से गाड़ी स्टार्ट करके गाड़ी थोड़ा आगे बढ़ावे पहिए के नीचे नारिकेल बलि दबा देवे अर्थात् नारिकेल दबाकर गाड़ी आगे बढ़ाकर खड़ी कर देवें। पुनः आरती करके परिक्रमा पुष्पांजलि, प्रार्थना करें।

➲ इस प्रकार पूजन करके ब्राह्मण को दक्षिणा देकर आशीर्वाद ग्रहण करें।

दक्षिणा संकल्प-

(दाहिने हांथ में कुशाक्षत पुष्पादि लेकर)

हरिः ॐ पूर्वोच्चारित ग्रहगुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ ..... गोत्र ....नामाहं कृतस्य नवक्रीतस्य अमुक वाहनस्य पूजनस्य सम्पूर्ण फलप्राप्तये मनसोद्दिष्टां दक्षिणां .... गोत्रोत्पन्नाय अमुक शर्मणे तुभ्यं सम्प्रददे।

➲ संकल्प करके दक्षिणा प्रदान करें।

➲ पुनः हाथ में कुशाक्षत जल पुष्प द्रव्य लेकर भूयसी दान करे।

भूयसी दान संकल्प-

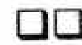
देशकालौ संकीर्त्य गोत्रः ....शर्माहं कृतस्य वाहनपूजनेऽस्मिन् न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थं मनस्कल्पितां भूयसीं दक्षिणामिमां विभज्य ब्राह्मणेभ्यो

➢ वाहन चालक (Driver) को भी यथोत्साह द्रव्य देवें।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः

– इस विधि से पूजन करने से वाहन निर्बाध रूप से दीर्घ काल तक चलता है और सुख, यश एवं लाभ प्रदान करता है।

।। इति कर्मकाण्डप्रबोधे वाहन पूजनविधिः सम्पूर्णा ।।



अथ रत्न-पूजन-प्रतिष्ठा-धारणविधिः

रत्न-धारण-विधिः

ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के अरिष्ट शान्ति के लिए अथवा निर्बल ग्रह को बल प्रदान करने के लिए रत्न धारण करने की व्यवस्था की गई है। रत्न धारण करने से पूर्व रत्नों के पूजन करने का विधान है क्योंकि रत्न खान से निकलने पर उन्हें धारण योग्य बनाने के लिए संघर्षण, संघटन इत्यादि प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है जिससे उनका प्राकृतिक गुण मन्द हो जाता है अतः विधि पूर्वक पूजन करने से वे जागृत एवं पूर्ण शक्तिमान हो जाते हैं। प्रधान रूप से नवग्रहों के नव रत्न ही होते हैं यथा सूर्य का माणिक्य, चन्द्रमा का मोती, मंगल का मूंगा, बुध का पन्ना, बृहस्पति का पुखराज, शुक्र का हीरा, शनि का नीलम, राहु का गोमेद तथा केतु का लहसुनिया- ये प्रधान रत्न होने से अधिक प्रभावशाली किन्तु मंहगे होते हैं जो इन्हें क्रय करने में समर्थ नहीं हैं वे इनके उपरत्नों को धारण कर सकते हैं जिनका मूल्य कम होता है जबकि भार में अधिक लेकर धारण करने से तद्वत् ही फल देते हैं। उक्त सभी प्रकार के रत्नों या उपरत्नों के पूजन की विधि समान ही है।

रत्नों को किसी जौहरी से परीक्षण कराकर अच्छे चमकीले जो दाग, धब्बे से रहित हों उन्हें लेकर शुभ मुहूर्त्त में अंगूठी या लाकेट बनवाकर यथा विहित

अंगुली में अथवा गले में धारण करना चाहिए। बच्चों को लाकेट में रत्न धारण कराना चाहिए जबकि १६ वर्ष की उम्र से लेकर वृद्धत्व तक अंगूठी में रत्न धारण कराना चाहिए। सामान्यतः माणिक्य और मूँगा सोने की अंगूठी में अनामिका अंगुली में। मोती, हीरा तथा पन्ना, चांदी की अंगूठी में कनिष्ठिका अंगुली में। पुखराज सोने की अंगूठी में, तर्जनी अंगुली में। नीलम्, गोमेद तथा लहसुनिया शीश, लोहा या चांदी की अंगूठी में मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। ग्रहों के वार में अथवा उनके होराकाल में रत्न धारण करना चाहिए। यदि उक्त रीति से भिन्न अंगुली इत्यादि में धारण करना हो तो किसी योग्य ज्योतिर्विद् की सलाह से ही धारण करना चाहिए अन्यथा विपरीत होने पर उनके धारण का फल भी विपरीत हो जाता है। वैसे भी बिना कुण्डली दिखाए स्वतः कोई रत्न स्व निर्णय से धारण करना उपयुक्त नहीं होता। सामान्यतया दाहिने हाथ की अंगुलियों में ही रत्न धारण करने का विधान है। कुण्डली में कुछ स्थितियां ऐसी भी होती हैं जब बांए हाथ में भी रत्न धारण किये जाते हैं अतः इसका अच्छी तरह विचार करके धारण करें।

रत्न या रत्नजटित अंगूठी पूजन विधि-

सर्वप्रथम जिस रत्न की अंगूठी/लाकेट का पूजन करना हो उस ग्रह के दिन में उसका पूजन करके उसी के दिन में धारण करना चाहिए। इसके लिए एक दिन पूर्व दुग्धादि पदार्थ में रत्न/अंगूठी को डुबो दें, सभी रत्न के लिए पृथक् पृथक् पदार्थ विहित हैं यथा माणिक्य एवं मूंगा को तिल के तैल में मोती तथा पन्ना को गाय के दूध में, पुखराज को गाय के दूध या घी में, हीरा को गाय के घी या दही में तथा नीलम् को सरसो के तेल में, गोमेद को गोमूत्र में तथा लहसुनिया को भी सरसो के तेल में डुबाना चाहिए। उक्त द्रव्यों के अभाव में सभी को गंगाजल या तीर्थ जल में डुबाना चाहिए। माणिक्य सूर्य का रत्न है अतः इसकी पूजा रविवार को करे और पूजन करके शीघ्र धारण भी कर लें, इसी प्रकार मोती को सोमवार या पूर्णिमा को, मूँगा-मंगलवार को, पन्ना-बुधवार को, पुखराज-बृहस्पतिवार को, हीरा- शुक्रवार को, नीलम् शनिवार को, गोमेद एवं लहसुनिया भी शनिवार को ही पूजन करके धारण करना चाहिए। उक्त दुग्धादि पदार्थ में रत्न को एक दिन पूर्व ही डुबो देना चाहिए समयाभाव में उसी दिन १ घण्टे अथाव ९ मिनट पूर्व ही डुबोकर गंगाजल या शुद्धजल से धोकर

रत्न/अंगूठी को किसी पात्र में रखकर अपने सामने रख लें। तत्पश्चात् तत् तत् वर्ण के पुष्पादि से (यथा माणिक्य, मूंगा हो तो लाल फूल से मोती, हीरा हो तो श्वेत से, पन्ना हो तो हरे या पीले से, पुखराज हो तो पीले से, नीलम्, गोमेद, लहसुनिया हो तो नीले या काले पुष्प से) उस रत्न/अंगूठी का पूजन करना चाहिए।

- रत्न/अंगूठी को तैलादि पदार्थ से निकालकर जल से धुलकर उसमें घृत का लेप कर अग्नि में ताप दिखावे तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्रों से जलाभिसिञ्चन करे उस ग्रह के वैदिक या तांत्रिक मंत्र से आवाहन करे यथा माणिक्य हो तो उसमें अक्षत एवं लाल पुष्प हांथ में लेकर सूर्य का मंत्र पढ़ें–

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् (अथवा ॐ घृणिः सूर्याय नमः।) माणिक्य रत्नेऽस्मिन् सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।

(अन्य रत्न में उसके ग्रह का मंत्र ग्रहों के मंत्र पृष्ठ संख्या ... के अनुसार देखें) ऐसा पढ़कर अक्षत पुष्प रत्न/अंगूठी में छोड़ दें। पुनः रक्तादि पुष्प लेकर उस रत्न/अंगूठी का पुष्प सं स्पर्श करते हुए प्रतिष्ठा मंत्र पढ़ें (सभी रत्नों की प्रतिष्ठा में यह मंत्र पढ़ा जाता है।)

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ६ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों ६ प्रतिष्ठ। (अथवा अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्) अस्मिन् माणिक्य रत्ने सूर्यस्य (अमुकस्य) शक्तिं प्रतिष्ठापयामि। (इसी प्रकार अन्य सभी रत्नों की प्रतिष्ठा इनके मंत्र से करना चाहिए)।

तत्पश्चात् पुरुष सूक्त के मंत्रों को पढ़ते हुए उस रत्न में पाद्य, अर्घ्य आचमन तथा स्नानार्थ जल चढ़ावे उसी रंग का वस्त्र अथवा रक्षासूत्र, जनेऊ चढ़ावे, गंध, अक्षत, पुष्प, माला चढ़ाकर धूप, दीप दिखावे, नैवेद्य के लिए

मीठा एवं फल सामने समर्पित करे पान–सुपाड़ी चढ़ावे अन्त में दक्षिणा चढ़ाकर प्रदक्षिणा करके पुष्पांजलि समर्पित करे तथा तत् तत् ग्रह के प्रार्थना मंत्र[1] से प्रार्थना करे। तत्पश्चात् जिस ग्रह का रत्न हो उस ग्रह के मंत्र[2] का १०८ बार जप करके उस रत्न को अभिमंत्रित करे। अन्त में आरती पुष्पाञ्जलि करके ब्राह्मण को दक्षिणा प्रदान कर रत्न को धारण कर लेना चाहिए।

दक्षिणा संकल्प-

(दाहिने हांथ में कुशाक्षत जल दक्षिणा लेकर संकल्प करे)

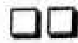
अद्य ..... गोत्रः .....नामाहं श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तये अमुक रत्न पूजनस्य सम्पूर्ण फलप्राप्तये शुभतायै च मनसोद्दिष्टां दक्षिणां तुभ्यं सम्प्रददे। (संकल्प करके दक्षिणा प्रदान करे।) रत्न धारण करने के बाद सभी श्रेष्ठ लोगों को माता पितादि को भी श्रद्धापूर्वक प्रणाम कर विष्णु स्मरण करे।

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।।

- इस प्रकार विधि पूर्वक रत्न/अंगूठी/लाकेट धारण करने से वह रत्न पूर्ण प्रभावशाली होकर धारक को लाभान्वित करता रहता है।

संवत्सर परिवर्तन होने पर पुनः रत्न की पूजा करके धारण करना चाहिए अर्थात् प्रतिवर्ष रत्न/अंगूठी का पूजन उक्त विधि से करके धारण करने से उसकी शक्ति जागृत रहती है। अन्यथा धीरे–धीरे उसका प्रभाव नष्ट हो जाता है।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे रत्नपूजनविधिः सम्पूर्णा)





अथ संक्षिप्त-मण्डप-पूजनम्

।।श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।।

संकल्पः - (दाहिने हाथ में कुशाक्षत, जल, द्रव्य लेकर संकल्प करें)

हरिः ॐ विष्णुः ... (देशकालौ संकीर्त्य) ... गोत्रः ... नामाहं श्रुतिस्मृति-पुराणोक्त-फलप्राप्तये अमुक यज्ञाङ्गतया देवताधिष्ठान-मण्डपस्थ-स्तम्भस्थानां-देवानां-दिग्पालानाञ्च आवाहनं पूजनञ्च करिष्ये।

षोडशस्तम्भपूजनम्

❑ मण्डप के अन्दर वाले चार स्तम्भों का पूजन करे।

(सर्वप्रथम ईशानकोण वाले स्तम्भ का पूजन करें।

१. ऐशान्ये-रक्तवर्ण-स्तम्भे ब्रह्माणम् -

ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो व्वेनऽआवः।
सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यव्विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च व्विवः।।

ॐभूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐसावित्र्यै नमः ॐब्राह्म्यै नमः। ॐगंगायै नमः **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्-** स्तम्भ का आलिंगन करे।)

२. आग्नेये-कृष्णवर्ण-स्तम्भे विष्णुम्-

ॐ इदं विष्णुर्व्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्।
समूढमस्यपा गुं सुरे स्वाहा।।

ॐभूर्भुवःस्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐलक्ष्म्यै नमः। ॐनन्दायै नमः ॐवैष्णव्यै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्-** स्तम्भ का आलिंगन करे।)

३. नैर्ऋत्ये-श्वेतवर्ण-स्तम्भे शङ्करम् -

ॐ नमस्ते रुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः।
बाहुभ्यामुत ते नमः।।

ॐभूर्भुवःस्वः शिवाय नमः, शिवमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐमाहेश्वर्यै नमः। ॐगौर्यै नमः। ॐशोभनायै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्-** स्तम्भ का आलिंगन करे।)

४. वायव्ये-कोणे-पीतवर्ण-स्तम्भे इन्द्रम्-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र गुं हवे हवे सुहव गुं शूरमिन्द्रम्।
ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र गुं स्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐभूर्भुवःस्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। स्तम्भे एव - ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। स्तम्भशिरसि- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।। **स्तम्भमालभेत्।** (स्तम्भ का आलिंगन करे।)

❑ मण्डप के बाहरी १२ स्तम्भों का क्रमशः पूजन करे –

१. ईशानकोणे-रक्तवर्ण-स्तम्भे सूर्यम्-

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

ॐभूर्भुवःस्वः सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। स्तम्भे एव- ॐसावित्र्यै नमः. ॐ मंगलायै नमः। ॐभृत्यै नमः। स्तम्भशिरसि- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।। **स्तम्भमालभेत्।** (स्तम्भ का आलिंगन करे।)

२. ईशानपूर्वयोर्मध्ये-श्वेतवर्ण-स्तम्भे गणेशम् -

ॐ गणानान्त्वा गणपति गुं हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे व्वसो मम।। आहम जानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।

ॐभूर्भुवःस्वः गणेशाय नमः, गणेशमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्थम्भे एव-** ॐ विघ्नहारिण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। **स्तम्भमालभेत्।** (स्तम्भ का आलिंगन करे।)

३. पूर्वाग्नियोर्मध्ये-कृष्णवर्ण-स्तम्भे यमम्-

ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे। देवस्त्वा सवितामद्धानक्तुपृथिव्याः स गुं स्पृशस्पाहि। अर्च्चिरसिशोचिरसि-तपोऽसि ।।

ॐभूर्भुवःस्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि **स्तम्भे एव-** ॐ पूर्वसन्ध्यायै नमः, ॐ क्रूरायै नमः। ॐ नियन्त्र्यै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।। **स्तम्भमालभेत्।** (स्तम्भ का आलिंगन करे।)

४. अग्निकोणे-कृष्णवर्ण-स्तम्भे नागम् -

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु।
ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐभूर्भुवःस्वः नागाय नमः, नागमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐ अधरायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ महापद्मायै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।। **स्तम्भमालभेत्।** (स्तम्भ का आलिंगन करे।)

५. आग्नेयदक्षिणयोर्मध्ये-श्वेतवर्ण-स्तम्भे स्कन्दम् -

ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्समुद्रादुत वा पुरीषात्।
श्येनस्य पक्षाहरिणस्य बाहूऽउपस्तुत्यं महिजातन्ते ऽअर्व्वन्।।

ॐभूर्भुवःस्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्-** स्तम्भ का आलिंगन करे।)

६. दक्षिणनैऋत्ययोर्मध्ये-धूम्रवर्ण-स्तम्भे वायुम् -

ॐ व्वायो ये ते सहस्त्रिणोरथा सस्तेभिरागहि।
नियुत्त्वान्त्सोमपीतये।।

ॐभूर्भुवःस्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐ तीव्रायै नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ वायव्यै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्-** स्तम्भ का आलिंगन करे।)

७. नैऋत्ये-पीतवर्ण-स्तम्भे सोमम् -

ॐ आप्यायस्व समेतु ते व्विश्वतः सोम व्वृष्ण्यम्।
भवाव्वाजस्य संगथे।।

ॐभूर्भुवःस्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव-** ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ अमृतकलायै नमः, ॐ विजयायै नमः। **स्तम्भशिरसि-** ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्-** स्तम्भ का आलिंगन करे।)

८. नैऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये-श्वेतवर्ण-स्तम्भे वरुणम्-

ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।

ॐभूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव** - ॐ वारुण्यै नमः। ॐ बार्हस्पत्यै नमः। ॐ पाशधारिण्यै नमः। **स्तम्भशिरसि**- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्**- स्तम्भ का आलिंगन करे।)

९. पश्चिमवायव्ययोर्मध्ये-श्वेतवर्ण-स्तम्भे अष्टवसून्-

ॐ व्वसोः पवित्त्रमसिशतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्स्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्प्वा कामधुक्षः।।

ॐभूर्भुवःस्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसूनावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव**- वितायै नमः। ॐ गरिमायै नमः। ॐ सम्भूत्यै नमः। **स्तम्भशिरसि**- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्**- स्तम्भ का आलिंगन करे।)

१०. वायव्यकोणे-पीतवर्ण-स्तम्भे धनदम्-

ॐ व्वय गुं सोमव्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः।
प्रजावन्तः सचेमहि।

ॐभूर्भुवःस्वः धनदाय नमः, धनदमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव**- ॐ आदित्यै नमः। ॐ सिनीबाल्यै नमः। ॐ लघिमायै नमः। **स्तम्भशिरसि**- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (**स्तम्भमालभेत्**- स्तम्भ का आलिंगन करे।)

११. वायव्योत्तरयोर्मध्ये-पीतवर्ण-स्तम्भे बृहस्पतिम् -

ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्य्यो ऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजात तदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐभूर्भुवःस्वः बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव** - ॐ पौर्णमास्यै नमः। ॐ वेदमात्रे नमः। ॐ सन्नत्यैनमः। **स्तम्भशिरसि**- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (स्तम्भमालभेत्- स्तम्भ का आलिंगन करे।)

१२. उत्तर-इशानयोर्मध्ये-रक्तवर्ण-स्तम्भे विश्वकर्माणम्-

ॐ विश्वकर्म्मन्हविषा व्वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै व्विशः समनमन्तपूर्वीरयमुग्रो व्विहव्यो यथासत्।।

ॐभूर्भुवःस्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणमावाहयामि स्थापयामि प्रतिष्ठापयामि। **स्तम्भे एव** - ॐ वास्तुदेवतायै नमः। ॐ वैश्वकर्मण्यै नमः। ॐ शारदायै नमः। **स्तम्भशिरसि**- ॐनागमात्रे नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (स्तम्भमालभेत्- स्तम्भ का आलिंगन करे।)

हाथ में जल लेकर - **अनेन यथोपचार पूजनेन मण्डपस्थ षोडश-स्तम्भदेवाः प्रीयन्तां न मम।**

- इस प्रकार स्तम्भों का पूजन करके '**ॐ शाखाबन्धनाधिष्ठातृदेवेभ्यो नमः**' इस मंत्र से मंडप के सभी शाखाओं और बन्धन में गन्धाक्षतपुष्प चढ़ाकर पूजन करे तत्पश्चात् पश्चिम द्वार से बाहर आकर पूर्वादि क्रम से तोरण द्वार का पूजन करें।

तोरणद्वार-पूजनम्

१. पूर्व द्वारे-सुदृढ-तोरण-पूजनम् -

अश्वत्थ निर्मित रक्तवस्त्रावेष्टित सिन्दूर रञ्जित महेन्द्र पर्वत तथा शंखचिन्हांकित

पूर्व तोरण द्वार में ही अक्षत छोड़कर तोरण कृतयुग का तथा कलश में ऋग्वेद का आवाहन पूजन करे।

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम्।।

१. ॐ ऋग्वेदाधिष्ठिताय सुदृढतोरणाय नमः २. ॐ कृतयुगाय नमः, ३. ॐ राहवे नमः, ४. ॐ वृहस्पतये नमः।

- पूर्व तोरणद्वार के दायीं ओर एक कलश में ऋग्वेद का आवाहन करे – ॐ **ऋग्वेदाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।**
- तोरण द्वार के बायीं ओर एक कलश में ध्रुव का आवाहन करे–

ॐ ध्रुवाय नमः, आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

२. दक्षिण द्वारे-विकटतोरणपूजनम्-

गूलर निर्मित कृष्ण वस्त्रावेष्टित धूम्रवर्ण से विन्ध्य पर्वत सहित चक्रचिन्हांकित दक्षिणतोरण द्वार में त्रेता–युग का तथा कलश में यजुर्वेद का आवाहन पूजन करे –

इषेत्वोर्ज्जे त्वा व्वायवस्त्थ देवो वः सविताप्प्रार्प्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्म्मण ऽआप्यायद्ध्वमघ्न्या ऽइन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा ऽअयक्ष्मावस्तेनऽईशतमा घश ८ सोध्रुवा ऽअस्मिन्गोपतौ स्यात् बह्वीर्य्यजमानस्य पशून्पाहि।

१. ॐ यजुर्वेदाधिष्ठिताय विकटतोरणाय नमः २. ॐ त्रेतायुगाय नमः ३. ॐ सूर्याय नमः, ४. ॐ अङ्गारकाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

- गूलरनिर्मित दक्षिणद्वार की दायीं ओर एक कलश में यजुर्वेद का आवाहन पूजन करे – **ॐ यजुर्वेदाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।**
- द्वार के बायीं ओर एक कलश स्थापित कर उसमें धरा का आवाहन पूजन करें।

५. ॐ धरायै नमः आवाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

३. पश्चिम द्वारे-सुभीम-तोरणपूजनम्-

(पाकर निर्मित श्वेत वस्त्रावेष्टित स्वर्णवर्णीय गन्धमादनपर्वत सहित गदाचिन्हांकित पश्चिमतोरणद्वार में सुभीमादि का तथा कलश में सामवेद का आवाहन पूजन करे)

ॐ अग्न आयाहि व्वीतये गृणानो हव्व्यदातये।
निहोता सत्सिबर्हिषि।।

१. ॐ सामवेदाधिष्ठिताय सुभीमतोरणाय नमः, २. ॐ द्वापर युगाय नमः ३. ॐ शुक्राय नमः ४. ॐ बुधाय नमः आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

- द्वार की दाहिनी सामवेद का पूजन करे - **ॐ सामवेदाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।**
- द्वार की बायीं ओर कलशस्थापित कर उसमें वाक्पति का पूजन करे-

ॐ वाक्पतये नमः, आवाहयामि स्थापयामि।

४. उत्तरे द्वारे-सुप्रभतोरण पूजनम्-

बरगद निर्मित पीतवस्त्रावेष्टित श्वेतवर्णीय हिमालयपर्वत सहित पद्मचिन्हांकित उत्तर तोरण द्वार में सुप्रभादि सहित कलियुग का तथा कलश में अथर्ववेद का आवाहन पूजन करे -

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये।
शंय्यो रभिस्त्रवन्तुनः।।

१. ॐ अथर्ववेदाधिष्ठिताय सुप्रभतोरणाय नमः २. ॐ कलियुगाय नमः ३. ॐ सोमाय नमः ४. ॐ केतवे नमः ५. ॐ शनैश्चराय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

- द्वार के दायीं ओर एक कलश में अथर्ववेद का पूजन करें - **ॐ अथर्ववेदाय नमः आवाहयामि।**
- द्वार की बायीं ओर एक कलश स्थापित कर उसमें विघ्नेश का पूजन करे -

ॐ विघ्नेशाय नमः, आवाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

❑❑

अथ मण्डपे द्वारस्थ देवानां दिक्पालानाञ्च स्थापनं पूजनञ्च

- पूर्वादि चारों द्वारों में दोनों ओर एक-एक कलश कुल आठ कलश तथा दस कलश दिग्पालों के लिए स्थापित करके उनके ऊपर दीपक जलाकर या श्रीफल रखकर देवताओं का आवाहन पूजन करे।

<u>पूर्वद्वारे-</u>

दक्षिण-कलशे—**ॐ गंगायै नमः, गङ्गामावाहयामि स्थापयामि।**

वाम-कलशे— **ॐ यमुनायै नमः, यमुनामावाहयामि स्थापयामि।**

कलशद्वये – **ॐ ऐरावत-दिग्गजाय नमः, ऐरावत दिग्गजमावाहयामि स्थापयामि।**

पूर्व दिक्पाल-कलशोपरि इन्द्रमावाह्येत् –

ॐ भूर्भुवः स्वः कलशेऽस्मिन् इन्द्राय नमः। साङ्कुलायुध-शक्तिकमिन्द्रमावाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।।

द्वारस्य दक्षिण-भागे— **ॐ धात्रे नमः। ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ दिगम्बराय नमः। ॐ चित् शक्त्यै नमः।**

द्वारस्य वाम भागे— **ॐ विधात्रे नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ असितांग भैरवाय नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः।**

द्वार-पार्श्वे – **ॐ शंखनिधये नमः।** द्वारपुरतः – **ॐ पद्मनिधये नमः।**

द्वार-उर्ध्वं – **ॐ श्रियै नमः। ॐ गणपतये नमः।**

अधो-देहल्याम् – **ॐ वास्तु पुरुषाय नमः।**

द्वारस्योभयोर्भागस्थस्तम्भयोः – **श्री गणेशाय नमः। श्री स्कन्दाय नमः। ॐ कादम्बर्यै गजारुढायै बज्रहस्तायै नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।**

- पूर्व द्वार के अन्दर दो ऋग्वैदिकों का पूजन करके वरण करें।
- पीले रंग की ध्वजा तथा पताका लगावे।

आग्नेय-कोणे -

मण्डप के अग्निकोण के कलश में आवाहन पूजन करें

ॐ पुण्डरीकाय नमः। ॐ अमृताय नमः। आवाहयामि स्थापयामि।

ॐभूर्भुवःस्वः ॐ अग्नये नमः। साङ्गकुलायुध शक्तिकं अग्निमावाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

ॐ दिगम्बराय नमः। ॐ रुरु भैरवाय नमः। ॐ उल्कायै नमः। ॐ अजारुढायै नमः। ॐ शक्ति-हस्तायै नमः। आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।।

- लाल ध्वजा तथा पताका लगावें।

दक्षिणद्वारे-

दक्षिण द्वार के कलशों में आवाहन पूजन करें-

दक्षिण-कलशे– **ॐ गोदावर्यै नमः, गोदावरीमावाहयामि स्थापयामि।**

वाम-कलशे– **ॐ कृष्णायै नमः, कृष्णामावाहयामि स्थापयामि।**

कलश-द्वये– **ॐ वामनाख्यं दिग्गजमावाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।।**

दिग्पाल-कलशे यममावाहयेत् (द्वार कलश के अतिरिक्त एक कलश में) –

ॐभूर्भुवःस्वः यमाय नमः, साङ्गाकुलायुधशक्तिकं यममावाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।।

द्वारस्य दक्षिणभागे– **ॐ बलाय नमः। ॐ ह्रीं क्रीं कौमार्यै नमः। ॐ चित्शक्त्यै नमः। ॐ दिगम्बराय नमः।**

द्वारस्य वाम भागे– **ॐ सबलाय नमः। ॐ ह्रीं श्रीं वैष्णव्यै नमः। ॐ चण्डभैरवाय नमः।**

द्वार पार्श्वे – **ॐ कराल्यै नमः। शंख निधये नमः।**

द्वार पुरतः – **ॐ पद्म निधये नमः।** द्वारोर्ध्वम् – **ॐ श्रियै नमः।**

अधो देहल्याम् – **ॐ वास्तु पुरुषाय नमः।**

द्वारस्योभयोर्स्तम्भयोः – **श्री गणेशाय नमः। श्री स्कन्दाय नमः। ॐ कं**

करात्यै महिषारुढायै दण्डहस्तायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

- (मण्डप के दक्षिण द्वार के अंदर दो यजुर्वैदिक ब्राह्मणों का पूजन करके वरण करें)
- काले रंग का ध्वज तथा पताका लगावे।

नैर्ऋत्यकोणे-

(नैर्ऋत्यकोण के कलश में आवाहन पूजन करें)

ॐ कुमुदाय नमः। ॐ दुर्जयाय नमः। आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ भूर्भूवः स्वः निर्ऋते नमः साङ्गकुलायुध शक्तिकं निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

ॐ दिगम्बराय नमः। क्रोध भैरवाय नमः। ॐ प्रेतारूढ-खड्गहस्तायै रक्ताक्ष्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

- नीले रंग का ध्वज और पताका लगावे।

पश्चिमद्वारे-

पश्चिम द्वार के दोनों कलशों में आवाहन पूजन करें -

दक्षिणकलशे– **ॐ रेवायै नमः।** वाम–कलशे– **ॐ नर्मदायै नमः।**

कलश–द्वये– **ॐ अञ्जनाख्य दिग्गजाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।**

दिग्पाल कलशे वरुणमावाहयेत् (एक अन्य कलश में वरुण का आवाहन पूजन करे।) –

ॐभूर्भुवःस्वः वरुणाय नमः, साङ्गकुलायुध–शक्तिकं वरुणमावाहयामि स्थापयामि। आवाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

द्वारस्य दक्षिण भागे – **ॐ जयाय नमः। ॐ चित् शक्त्यै नमः। ॐ ह्रीं हूं**

वाराही देव्यै नमः।

द्वारस्य वाम भागे – ॐ विजयाय नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः।

द्वार पार्श्वे – ॐ शंखनिधये नमः।

द्वारपुरतः– ॐ पद्म निधये नमः।

द्वारोर्ध्वम् – ॐ श्रियै नमः। ॐ गणपतये नमः।

अधो देहल्याम् – ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।

स्तम्भयोः (द्वार के दोनों ओर के स्तम्भों में) – ॐ नन्दिने नमः। ॐ चन्द्राय नमः।

ॐ कौवेरी श्वेतारुढपाशहस्तायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

❑ पश्चिमद्वार के अन्दर दो सामवेदज्ञों ब्राह्मणों का पूजन तथा वरण करें।

❑ श्वेत ध्वज तथा पताका लगावे।

वायव्यकोणे -

(वायव्य कोण के कलश में आवाहन पूजन करें-)

ॐ पुष्पदन्ताय नमः। ॐ सिद्धार्थाय नमः। आवाहयामि स्थापयामि।

ॐभूर्भुवःस्वः वायवे नमः साङ्गायुध-कुलशक्तिकं वायुमावाहयामि।

ॐ दिगम्बराय नमः। ॐ कपाल भैरवाय नमः, ॐ हं हरित मृगवाहिन्यै अंकुशहस्तायै नमः, आवाहयामि स्थापयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

❑ धूम्र वर्ण के ध्वज तथा पताका लगावे।

उत्तरद्वारे-

उत्तर द्वार के दो कलशों में आवाहन पूजन करें-

दक्षिणकलशे– **ॐ वारुण्यै नमः।** वाम-कलशे– ॐ वेण्यै नमः।

कलश-द्वये– **ॐ सार्वभौम दिग्गजाय नमः।**

दिग्पाल-कलशे कुबेरावाहनम् (एक अन्य कलश स्थापित करके)

ॐभूर्भुवःस्वः कुबेराय नमः, साङ्गयुधकुलशाक्तिकं कुबेरमावाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

द्वारस्यदक्षिणभागे – ॐ चण्डाय नमः। ॐ चित् शक्त्यै नमः।

द्वारस्य वाम भागे – ॐ प्रचण्डाय नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः।

द्वार पार्श्वे – ॐ शंखनिधये नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः।

द्वार पुरतः – ॐ पद्म निधये नमः। ॐ यक्षिण्यै नमः।

द्वारोर्ध्वम् – ॐ श्रियै नमः। ॐ गणपतये नमः।

अधो देहल्याम् – ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।

ॐ दिगम्बर भीषण भैरवमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ अं ह्रीं क्ष्म्रौं नारसिंह्यै नमः। ॐ मं यक्षिणि-सिंहवाहिनि-गदाहस्तायै नमः आवाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

- ❑ उत्तर द्वार के अन्दर दो अथर्ववेदज्ञों ब्राह्मणों का पूजन करके वरण करें।
- ❑ श्वेत ध्वज एवं पताका लगावे।

ऐशान्ये -

ईशान कोण के कलश में आवाहन पूजन करें-

ॐ सुप्रतीकाय नमः। ॐ मंगलाय नमः। आवाहयामि स्थापयामि।

दिग्पाल-कलशे ईशानमावाहयेत् –

ॐभूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, साङ्गायुधकुलशक्तिकमीशानमावाहयामि स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

ॐ दिगम्बराय नमः। संहारभैरवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि।

ॐ कं कालिवृषभारुढशूलहस्तायै नमः, आवाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

- ❑ श्वेत एवं पचरंग ध्वज पताका लगावे।

ईशानपूर्वयोर्मध्ये दिग्पाल कलशे

ईशानपूर्व के मध्य वाले कलश में आवाहन पूजन करें –

ॐभूर्भुवःस्वः ब्रह्मणे नमः साङ्गायुधकुलशकितकं ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

ॐ सं सर्वराज्यचक्रहस्तायै नमः, आवाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचरार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

❑ लाल ध्वज एवं पताका लगावे।

नैर्ऋत्यपश्चिममध्ये

नैऋत्यपश्चिम के मध्य वाले कलश में आवाहन पूजन करें –

दिग्पाल–कलशे–

ॐभूर्भुवःस्वः अनन्ताय नमः साङ्गायुधकुलशक्तिकं अनन्तमावाहयामि स्थापयामि। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत-पुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

❑ धूम्र या श्वेत ध्वज तथा पताका लगावे।

बलिप्रदानम् –

मण्डप से बाहर दशों दिशाओं में दिग्पालों के कलशों के समीप दही, उड़द तथा भात दोनिया में रखकर बलि प्रदान करे –

हाथ में जलाक्षत लेकर – **भो भो मण्डपस्थदेवाः इन्द्रादिदशदिग्पालाश्च एतान् दधिमाषभक्तबलीन् समर्पयामि** जलाक्षत सामने गिरा देवे। पुनः जल लेकर **एभिर्बलिदानैः मण्डपस्थदेवाः दिग्पालाश्च प्रयीन्ताम्** जल सामने गिरा देवे।

❑ यज्ञ मण्डप के मध्य में ध्वजा तथा सप्त रंग पताका लगावे और प्रार्थना करें–

प्रार्थयेत् – **यज्ञभागभुजो देवाः सर्वकर्मफलप्रदाः।**
यज्ञं पातु इहागत्य नमस्तेभ्यो ममाद्य वै।।

ईशाने भूतबलिदानम् (ईशान कोण में मण्डप के बाहर दही, उड़द, भात की बलि प्रदान करे।) –

ये केचित्विह–लोकेषु आगता बलिकांक्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे संक्षिप्त मण्डपपूजनं सम्पूर्णम्)

❑❑

मण्डप के स्तम्भों के पूजन की सारणी

क्र.	स्थान	क्रम	देवता	अधिदेवताः	स्तंभ	पूजनमंत्र (संकेत)
1	ईशानस्तंभे रक्तवर्ण	प्रथमस्तंभे	ब्रह्मणे नमः (ब्रह्मा)	साकित्र्यै नमः वास्तुपुरुषाय नमः, ब्राह्म्यै नमः	शिरसि नागमात्रे नमः	ब्रह्मजज्ञानं 0
2	आग्नेयस्तम्भे कृष्णावर्ण	द्वितीय	विष्णवे नमः (विष्णु)	लक्ष्म्यै नमः आदित्यनन्दायै नमः वैष्णव्यै नमः	,,	इदंविष्णु0
3	नैर्ऋत्यस्तम्भे श्वेतवर्ण	तृतीय	रुद्राय नमः (रुद्र)	गौर्यै नमः शोभनायै नमः माहेश्वर्यै नमः	,,	परिणोरुद्रस्य0
4	वायव्यस्तम्भे पीतवर्ण	चतुर्थ	इन्द्राय नमः (इन्द्र)	इन्द्राण्यै नमः आनन्दायै नमः विभूत्यै नमः	,,	इन्द्र आसांनेता0
5	बहिरीशानकोणे-स्तम्भे रक्तवर्ण	पंचम	सूर्याय नमः (सूर्य)	भूत्यै नमः साकित्र्यै नमः मंगलायै नमः	,,	चित्रंदेवानां0
6	ईशप्राच्यन्तराले-स्तम्भे श्वेतवर्ण	षष्ठ	गणपतये नमः (गणपति)	सिद्ध्यै नमः बुद्ध्यै नमः विघ्नहारिण्यै नमः जयायै नमः	,,	गणानांत्वा0
7	पूर्वाग्नेययोरन्तराले-स्तम्भे कृष्णावर्ण	सप्तम	धर्मराज्ञे नमः (धर्मराज)	धर्मराज्ञे नमः प्राक् संध्यायै नमः अंजनायै नमः क्रूरायै नमः	,,	यमाय त्वा0
8	आग्नेय कोणे-स्तम्भे कृष्णावर्ण	अष्टम	नागराज्ञे नमः (नागराज)	मध्यमसंध्यायै नमः पद्मिन्यै नमः महापद्मिन्यै नमः अंगनायै नमः	,,	नमोस्तु सर्पेभ्यो
9	आग्नेययाम्यो-रन्तरालेस्तम्भे श्वेतवर्ण	नवम	स्कन्दाय नमः (स्कन्द)	स्कन्दप्रियायै नमः पश्चिमसंध्यायै नमः	,,	यदक्रन्दः 0

10	याम्यनैऋत्या-योरन्तरा लेस्तम्भे धूम्रवर्ण	दशम	वायवे नमः (वायु)	वायुप्रियायै नमः वायव्यै नमः कौमार्यै नमः	,,	वायो ये ते०
11	नैऋत्यस्तम्भे पीतवर्ण	एकादश	सोमाय नमः (सोम)	सोमप्रियायै नमः सौम्यै नमः अमृतकलायै नमः विजयायै नमः	,,	वय गुं सोम०
12	निर्ऋति वरुणयोरन्तराले-स्तम्भे श्वेतवर्ण	द्वादश	वरुणाय नमः (वरुण)	वरुणप्रियायै नमः वारुण्यै नमः बृहस्पत्यै नमः	,,	तत्वा यामि०
13	पश्चिम वायव्ययोरन्तराले-स्तम्भे श्वेतवर्ण	त्रयोदश	वसुभ्यो नमः (अष्टवसु)	सिद्धयमृतायै नमः वितातायै नमः विभूत्यै नमः	,,	निवेशनः
14	वायुकोणेस्तम्भे पीतवर्ण	चतुर्दशस्तंभे	बलदेवाय नमः (बलदेव)	प्रियायै नमः आदित्यै नमः लघिम्न्यै नमः सिनीवाल्यै नमः	,,	बण्महा०
15	वायव्योदीच्ययोर-न्तरालेस्तम्भे पीतवर्ण	पंचदश	बृहस्पतये नमः (बृहस्पति)	पौर्णमास्यै नमः सावित्र्यै नमः		बृहस्पते अति०
16	उदगीशामयोर-न्तरालेस्तम्भे रक्तवर्ण	षोडश	विश्वकर्मणे नमः (विश्वकर्मा)	गायत्र्यै नमः वास्तव्यै नमः	,,	विश्वकर्मन्हविषा

❑❑

विष्णु पञ्चायतन

शिव	गणेश
विष्णु	
देवी	सूर्य

गणेश पञ्चायतन

विष्णु	शिव
गणेश	
देवी	सूर्य

दुर्गोपनिषत्कल्पद्रुमोक्त चण्डी का विशिष्टहवन विधान

१. प्रथम अध्याय- प्रथम अध्याय के "खड्गिनी शूलिनी घोरा...से ...अहमीशान एव च।" (८० से ८४ मन्त्र तक) हवन न करे किन्तु मूल मन्त्र पढ़कर, घी से पांच आहुति प्रदान करें।

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
बलादाकृष्यमोहाय......	५६	शर्करा (शक्कर)
आस्तीर्य शेषमभजत्....	६७	कमलबीज (कमलगट्टा)
वञ्चिताभ्यामिति तदा....	१००	कर्पूर (कपूर)
विलोक्य ताभ्यां गदितो..	१०१	कमलगट्टा
तथेत्युक्तवा भगवता.....	१०३	मधु, केला, गुग्गुल, नागर पान

प्रथम अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ मधु, पुष्प लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै वाग्भव-बीजाधिष्ठातृ-महाकाल्यै स्वाहा। घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा।** ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

२. द्वितीय अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
अस्त्राण्यनेकरूपाणि......	२८	कर्पूर
श्येनानुकारिणः प्राणान् ..	६०	सरसो
क्षणेन तन्महासैन्य.......	६७	राई
देव्या गणैश्चतैस्तत्र......	६९	पुष्प, बिल्वपत्र

द्वितीय अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय

द्रव्य के साथ गुग्गुल लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै बीजाधिष्ठातृ-महालक्ष्म्यै स्वाहा। घृताहुति- ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

३. तृतीय अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
बिडालस्यासिना.........	२०	निम्बू कागजी
ततः क्रुद्धा जगन्माता....	३४	गुड़, दुग्ध
गर्ज गर्ज क्षणं मूढ......	३८	मधु
अर्धनिष्क्रान्त एवासौ....	४२	घिया (लौकी)
तुष्टुवुस्तां सुरा देवी......	४४	पान-सुपारी

तृतीय अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ काली उड़द, दही, गुग्गुल लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै अष्टाविंशतिवर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै स्वाहा। घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

४. चतुर्थ अध्याय- मन्त्र संख्या १ से २३ तक हलुआ से हवन करें जबकि "शूलेनपाहिनो..... से ..... रक्षसर्वतः।" **तक श्लोक २४ से २७ मूल मन्त्र से चार बार घृताहुति प्रदान करें।**

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
देव्यायया ततमिदं जगदा-	३.	कदली फल
हेतुः समस्तजगतां त्रिगु.....	७.	बिल्व फल
यस्याः समस्तसुरतासमु.....	८.	श्वेतचन्दन
मेधासि देवि विदिता.....	११.	कर्पूर

त्रैलोक्यमेतदखिलं.....	२३.	शरीफा (सीताफल)
एवं स्तुता सुरैर्दिव्यै.....	२९.	रक्तचन्दन
भक्तया समस्तैस्त्रिदशै.....	३०.	धूप
रक्षणाय च लोकानां	४२.	तिल-धूप-मधु

चतुर्थ अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ घी, पायस या हलुआ लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ सांगायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै त्रिवर्णात्मिकायै त्रिशक्त्यै महालक्ष्म्यै स्वाहा।

घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

५. पञ्चम अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
नमो देव्यै महादेव्यै.....	९	हलुवा
रौद्रायै नमो नित्यायै.....	१०	ऑवला
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै..	११	भोजपत्र
निधिरेष महापद्म.........	९६	कमलगट्टा
यो मां जयति संग्रामे.....	१२०	कज्जल
तदागच्छतु शुम्भोऽत्र......	१२१	हिंगुल
स त्वं गच्छ............	१२९	ताम्बूल, सुपारी, इक्षु

पञ्चम अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ श्वेत चन्दन, कुंकुम, विल्वपत्र में रखकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै विष्णुमायादि चतुर्विंशति -देव्यै सरस्वत्यै स्वाहा।

घृताहुति- ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

६. षष्ठ अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
हे धूम्रलोचनाशु त्वं	४	गुग्गुल
इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्ताम्...	१३	निम्बू, विजौरा
विच्छिन्नबाहुशिरसः.........	१८	केसर
क्षणेन तद्बलं सर्वं.........	१९	राई
श्रुत्वा तमसुरं देव्या.......	२०	सुपारी, लोहवान, कमलगट्टा
केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा......	२३	भोजपत्र
तस्या हतायां दुष्टायाम्	२४	इक्षु, कनेर-पुष्प

छठें अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ कुष्माण्ड लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै धूम्राक्ष्यै शक्त्यै स्वाहा।

घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

७. सप्तम अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
ततः कोपं-चकारो....	५	कस्तूरी
उत्थाय च महासिं हं.....	२०	कदलीफल (केला)
शिरश्चण्डस्य काली च-	२३	निम्बू, विजौरा
तावानीतौ ततो दृष्टवा-	२६	कमलगट्टा
यस्माच्चण्डं च मुण्डं च	२७	चिरौंजी

सप्तम अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ चिरौंजी, बादाम, काजू, लजवन्ती के फूल लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै कर्पूरबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डायै स्वाहा।

घृताहुति– ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

८. अष्टम अध्याय–

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
इति मातृगणं क्रुद्धं........	३९	सरसो
रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ........	४१	लाल चन्दन
भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा...	५६	लाल चन्दन
मुखेनकाली जगृहे........	५७	लाल चन्दन
तांश्चखादाथ चामुण्डा.....	६०	इक्षु
जघान रक्तबीजं...........	६१	लाल चन्दन
नीरक्तश्च महीपाल.........	६२	बिजौरा, निम्बू

आठवें अध्याय के अन्त में महाहुति– पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ लाल चन्दन, मधु लेकर आहुति देवें।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै अष्टमातृसहितायै रक्ताक्ष्यै देव्यै स्वाहा। घृताहुति– **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

९. नवम अध्याय–

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
विचित्रमिदमाख्यातं........	२	निम्बू विजौरा
ततः परशुहस्तं तमायान्तं..	१६	कपीठ (चूक)
पूरयामास ककुभो निज.....	२०	केशर
भिन्नस्य तस्य शूलेन.......	३५	निम्बू विजौरा
तस्य निष्क्रामतो देवी...	३६	कण, गुग्गुल, इन्द्र जौ
खण्डं खण्डं च चक्रेण ...	४०	गन्ना के टुकड़े
केचिद्विनेशुरसुराः	४१	पान, सुपारी, बेलगिरी

नवें अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ बिजौरा नीबू , जावित्री लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनीम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै भैरव्यै देव्यै स्वाहा। घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

१०. दशम अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
निशुम्भं निहतं..........	२	केशर, कस्तूरी
तमायान्तं ततो देवी.....	२६	पका केला
स गतासुः पपातोर्व्याम्..	२७	भोजपत्र
जज्वलुश्चाग्नयः.........	३२	इन्द्र-जौ,
		कमलगट्टा-बटपत्र में देवें

दशवें अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ कस्तूरी लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनाम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्यै देव्यै स्वाहा। घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

११. एकादश अध्याय-

इस अध्याय में प्रारम्भ से २८ मन्त्र तक खीर या हलुवा से हवन करें, जबकि मन्त्र २४ से २८ तक के पांच मन्त्रों से आहुति न दें वरन् मूल मन्त्र से हवन करें।

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त.....	५	बिजौरा निम्बू
रोगानशेषानपहंसि.........	२९	राई या काली मिरीच, गिलोय
सर्वाबाधा प्रशमनं.........	३९	काली मिरीच

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते......	४१	सरसो
नन्दगोप गृहे ...	४२	मक्खन मिसरी
भक्षयन्त्याश्वतानुग्रान्	४४	अनार पुष्प तथा दाना
ततो मां देवताः स्वर्गे.....	४५	मजीठ
भूयश्च शतवार्षिक्या........	४६	नारंगी (संतरा)
ततः शतेन नेत्राणां........	४७	कमलगट्टा
शाकम्भरीति विख्यातं.....	४९	सोआ, पालक
भ्रामरीति च मां लोका......	५४	काली मिर्च
तदा तदावतीर्याहं.........	५५	सरसो

ग्यारहवें अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ पायस, कपूर, शक्कर, घी लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनाम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै नारायण्यै देव्यै स्वाहा। घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

१२. द्वादश अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
एभिःस्तवैश्च मां नित्यं....	२	अगर
बलिप्रदाने पूजायां........	१०	पेड़ा
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो......	१३	छोटी इलायची
उपसर्गाः शमं यान्ति.....	१७	भोजपत्र
सर्वं ममैतन्माहात्म्यम् ..	२०	लौंग, बिजौरा, पुष्प, कपूर
पश्यतामेव देवानां	३३	सर्वौषधि
सैवकाले महामारी......	३९	अनारफल तथा छिलका
स्तुता सम्पूजिता........	४१	लाल पुष्प

बारहवें अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ अगर, केशर, कस्तूरी, पुष्प लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनाम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै बालायै त्रिपुरसुन्दर्यै देव्यै स्वाहा। घृताहुति- ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।

१३. त्रयोदश अध्याय-

श्लोकमन्त्र-संकेत	श्लोक-संख्या	हवनीय पदार्थ
ददतुस्तौ बलिं चैव.........	१२	गुड, पुष्प
ततो वव्रे नृपो राज्यं.........	१७	काली मिर्च
सूर्याज्जन्म समासाद्य.......	२९	पान, सुपारी

तेरहवें अध्याय के अन्त में महाहुति- पान के पत्ते में सुपाड़ी तथा हवनीय द्रव्य के साथ श्वेत तिल, केशर, कपूर, श्वेत पुष्प लेकर आहुति देवे।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवसिनाम्। ॐ साङ्गायै सपरिवारायै सशक्तिकायै सायुधायै सवाहनायै श्रियै त्रिपुरसुन्दर्यै महावैष्णव्यै देव्यै स्वाहा। घृताहुति- **ॐ अम्बायै स्वाहा। ॐ अम्बिकायै स्वाहा। ॐ अम्बालिकायै स्वाहा।**

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे दुर्गोपनिषत्कल्पद्रुमोक्त- विशिष्ट- हवनविधानं सम्पूर्णम् ।)



शिव पञ्चायतन

विष्णु		सूर्य
	शिव	
देवी		गणेश

देवी पञ्चायतन

विष्णु		शिव
	दुर्गा	
सूर्य		गणेश

सूर्य पञ्चायतन

शिव		विष्णु
	सूर्य	
देवी		गणेश

श्री जगदीश्वर भगवान विष्णु जी की आरती

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे।
भक्तजनों के संकट, क्षण में दूर करे।। ॐ जय०।।
जो ध्यावै फल पावै, दुःख विनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का।। ॐ जय०।।
मात-पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ किसकी।। ॐ जय०।।
तुम पूरन परमात्मा, तुम अन्तर्यामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी।। ॐ जय०।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी , कृपा करो भर्ता।। ॐ जय०।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपती।
किस विधि मिलूँ दयामय मैं तुमको कुमती।। ॐ जय०।।
दीनबन्धु दुःखहर्ता, तुम ठाकुर मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे।। ॐ जय०।।
विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।
श्रद्धा-भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा।। ॐ जय०।।
जगदीश्वर की आरती जो नर नित गावै।
रोग शोक दुख विगलत सुखसम्पति पावे।। ॐ जय०।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे जगदीश्वर भगवान विष्णु जी की आरती समाप्त)

❑❑

त्रिगुणेश्वर भगवान शिव जी की आरती

ॐ जय शिव ओंकारा, प्रभु जय शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा।।१।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे ।
हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे ।।२।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन-जन मोहै ।।३।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
अक्षमाला वनमाला मुण्डमालाधारी ।
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी ।।४।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अङ्गे।
सनकादिक प्रभुतादिक भूतादिक सङ्गे।।५।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
कर मध्ये सुकमण्डल चक्र त्रिशूल धर्त्ता।
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जगपालनकर्त्ता ।।६।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका ।।७।।
ॐ हर हर हर महादेव।।
त्रिगुण स्वामी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी वाञ्छित फल पावै।।८।।
ॐ हर हर हर महादेव।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे त्रिगुणेश्वर भगवान शिव जी की आरती समाप्त)



जगत जननी भगवती दुर्गा जी की आरती

जगजननी जय, जय, माँ जगजननी जय, जय।
भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय।। माँ जग०।।
तू ही सत चित सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर भूपा ।।१।। माँ जग०।।
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी ।।२।। माँ जग०।।
अविकारी अघहारी, अकल, कलाधारी ।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि, हर संहारकारी ।।३।। माँ जग०।।

तू विधिवधू, रमा तू, उमा महामाया ।
मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया ।।४।। माँ जग०।।
राम, कृष्ण, तू सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छा-कल्पद्रुम, हारिणि सब-बाधा ।।५।। माँ जग०।।
दशविद्या, नवदुर्गा, नाना-शस्त्रकरा ।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा ।।६।। माँ जग०।।
तू परधाम-निवासिनि, महा-विलासिनि तू।
तू ही श्मशान-विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू।।७।। माँ जग०।।
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा ।।८।। माँ जग०।।
तू ही स्नेह सुधामयि, तू अति गरलमना ।
रत्नविभूषित तू ही तू ही अस्थि-तना ।।९।। माँ जग०।।
मूलाधार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे ।
कालातीता काली, कमला तू वरदे ।।१०।। माँ जग०।।
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी ।
भेद-प्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी ।।११।। माँ जग०।।
हम अति दीन दुखी मां ! विपत-जाल घेरे ।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे ।।१२।। माँ जग०।।
निज स्वभाव-वश जननी ! दयादृष्टि कीजै ।
करुणा कर करुणामयि ! चरण-शरण दीजै।।१३।। माँ जग०।।
(इति कर्मकाण्डप्रबोधे माँ दुर्गा जी की आरती समाप्त)

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदुच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।
।। ॐ शान्तिः ।। शान्तिः ।। शान्तिः ।।
सुशान्तिर्भवतु ।। हरिःॐ ।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधस्य द्वितीयो- भागः सम्पूर्णा)

□□

संस्कृत-संख्या

प्रायः पण्डित वर्ग को संकल्प में संख्या भी बोलना पड़ता है। संख्या की संस्कृत अशुद्ध होने की आशंका के परिमार्जन हेतु एक से महाशंख तक की गिनती को संस्कृत में दिया जा रहा है।

१ एकः, एकम् ,एका
२ द्वौ ,द्वे, द्वे
३ त्रयः ,त्रीणि ,तिस्रः
४ चत्वारः, चत्वारि,चतस्रः
५ पञ्च
६ षट्
७ सप्त
८ अष्ट/अष्टौ
९ नव
१० **दश**

११ एकादश
१२ द्वादश
१३ त्रयोदश
१४ चतुर्दश
१५ पञ्चदश
१६ षोडश
१७ सप्तदश
१८ अष्टादश
१९ नवदश
२० **विंशतिः**

२१ एकविंशतिः
२२ द्वाविंशतिः
२३ त्रयोविंशतिः
२४ चतुर्विंशतिः
२५ पञ्चविंशतिः
२६ षड्विंशतिः
२७ सप्तविंशतिः
२८ अष्टाविंशतिः
२९ नवविंशतिः
३० **त्रिंशत्**

३१ एकत्रिंशत्
३२ द्वात्रिंशत्
३३ त्रयस्त्रिंशत्
३४ चतुस्त्रिंशत्
३५ पञ्चत्रिंशत्
३६ षट्त्रिंशत्
३७ सप्तत्रिंशत्
३८ अष्टात्रिंशत्
३९ नवत्रिंशत् , एकोनचत्वारिंशत्
४० **चत्वारिंशत्**

४१ एकचत्वारिंशत्
४२ द्विचत्वारिंशत् , द्वाचत्वारिंशत्
४३ त्रिचत्वारिंशत् , त्रयश्चत्वारिंशत्
४४ चतुश्चत्वारिंशत्
४५ पञ्चचत्वारिंशत्
४६ षट्चत्वारिंशत्
४७ सप्तचत्वारिंशत्
४८ अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
४९ नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्
५० **पञ्चाशत्**

५१ एकपञ्चाशत्
५२ द्विपञ्चाशत्, द्वापञ्चाशत्
५३ त्रिपञ्चाशत्, त्रयःपञ्चाशत्
५४ चतुःपञ्चाशत्
५५ पञ्चपञ्चाशत्
५६ षट्पञ्चाशत्
५७ सप्तपञ्चाशत्
५८ अष्टपञ्चाशत्, अष्टापञ्चाशत्
५९ नवपञ्चाशत् , एकोनषष्टिः
६० **षष्टिः**

६१ एकषष्टिः	९१ एकनवतिः
६२ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः	९२ द्विनवतिः, द्वानवतिः
६३ त्रिषष्टिः , त्रयःषष्टिः	९३ त्रिनवतिः, त्रयोनवतिः
६४ चतुःषष्टिः	९४ चतुर्नवतिः
६५ पञ्चषष्टिः	९५ पञ्चनवतिः
६६ षट्षष्टिः	९६ षण्णवतिः
६७ सप्तषष्टिः	९७ सप्तनवतिः
६८ अष्टषष्टिः, अष्टाषष्टिः	९८ अष्टनवतिः , अष्टानवतिः
६९ नवषष्टिः , एकोनसप्ततिः	९९ नवनवतिः , एकोनशतम्
७० सप्ततिः	**१००. शतम्**
७१ एकसप्ततिः	एक हजार - सहस्रम्
७२ द्विसप्ततिः , द्वासप्ततिः	दस हजार - अयुतम् (दशसहस्रम्)
७३ त्रिसप्ततिः , त्रयःसप्ततिः	एक लाख - लक्षम्
७४ चतुःसप्ततिः	दस लाख - नियुतम्, प्रयुतम्, दशलक्षम्
७५ पञ्चसप्ततिः	
७६ षट्सप्ततिः	एक करोड़ - कोटिः
७७ सप्तसप्ततिः	दस करोड़ - दशकोटिः
७८ अष्टसप्ततिः, अष्टासप्ततिः	एक अरब - अर्बुदम्
७९ नवसप्ततिः, एकोनाशीतिः	दस अरब - दशार्बुदम्
८० अशीतिः	एक खरब - खर्वम्
८१ एकाशीतिः	दस खरब - दशखर्वम्
८२ द्व्यशीतिः	एक नील - नीलम्
८३ त्र्यशीतिः	दस नील - दशनीलम्
८४ चतुरशीतिः	एक पद्म - पद्मम्
८५ पञ्चाशीतिः	दशपद्म - दशपद्मम्
८६ षडशीतिः	एक शंख - शंखम्
८७ सप्ताशीतिः	दस शंख - दशशंखम्
८८ अष्टाशीतिः	महाशंख - महाशंखम्
८९ नवाशीतिः , एकोननवतिः	
९० नवतिः	

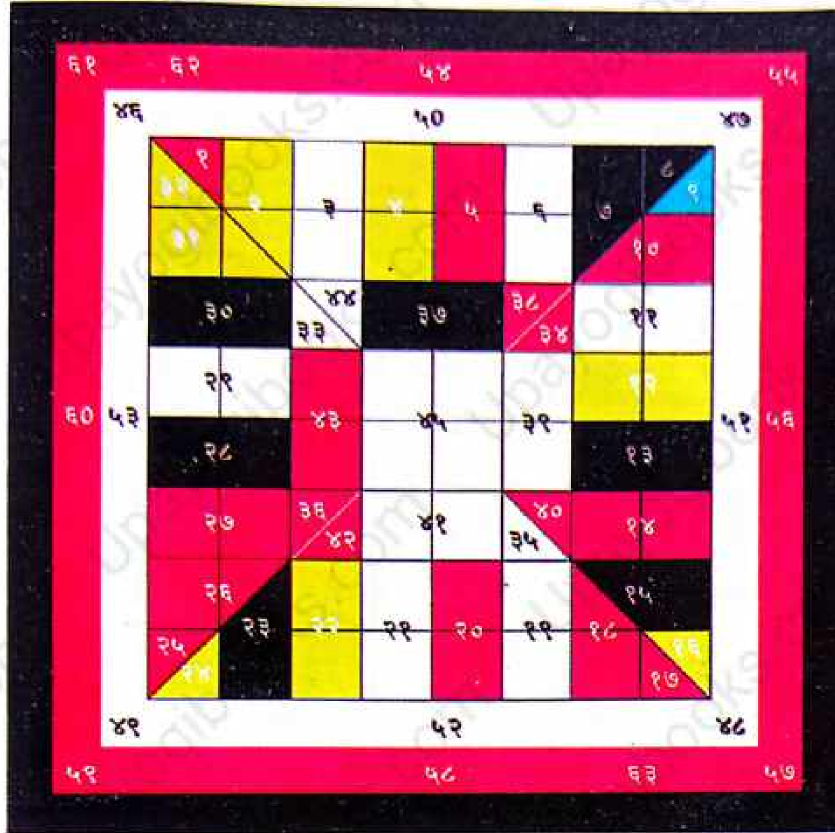
सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

(इति डॉ. राममिलनमिश्रेण कृतः कर्मकाण्डप्रबोधोऽयं ग्रन्थः सम्पूर्णः)

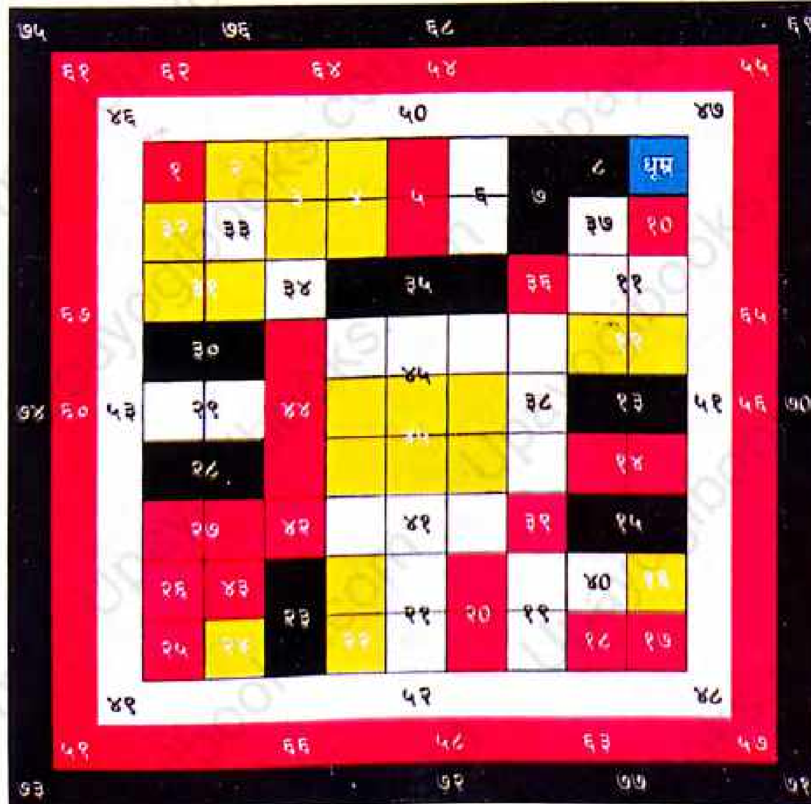
।। श्रीनारायणार्पणमस्तु ।।

हरिः ॐ

चतुःषष्ठिपद वास्तु मण्डल



एकाशीति पद गृहवास्तु मण्डल



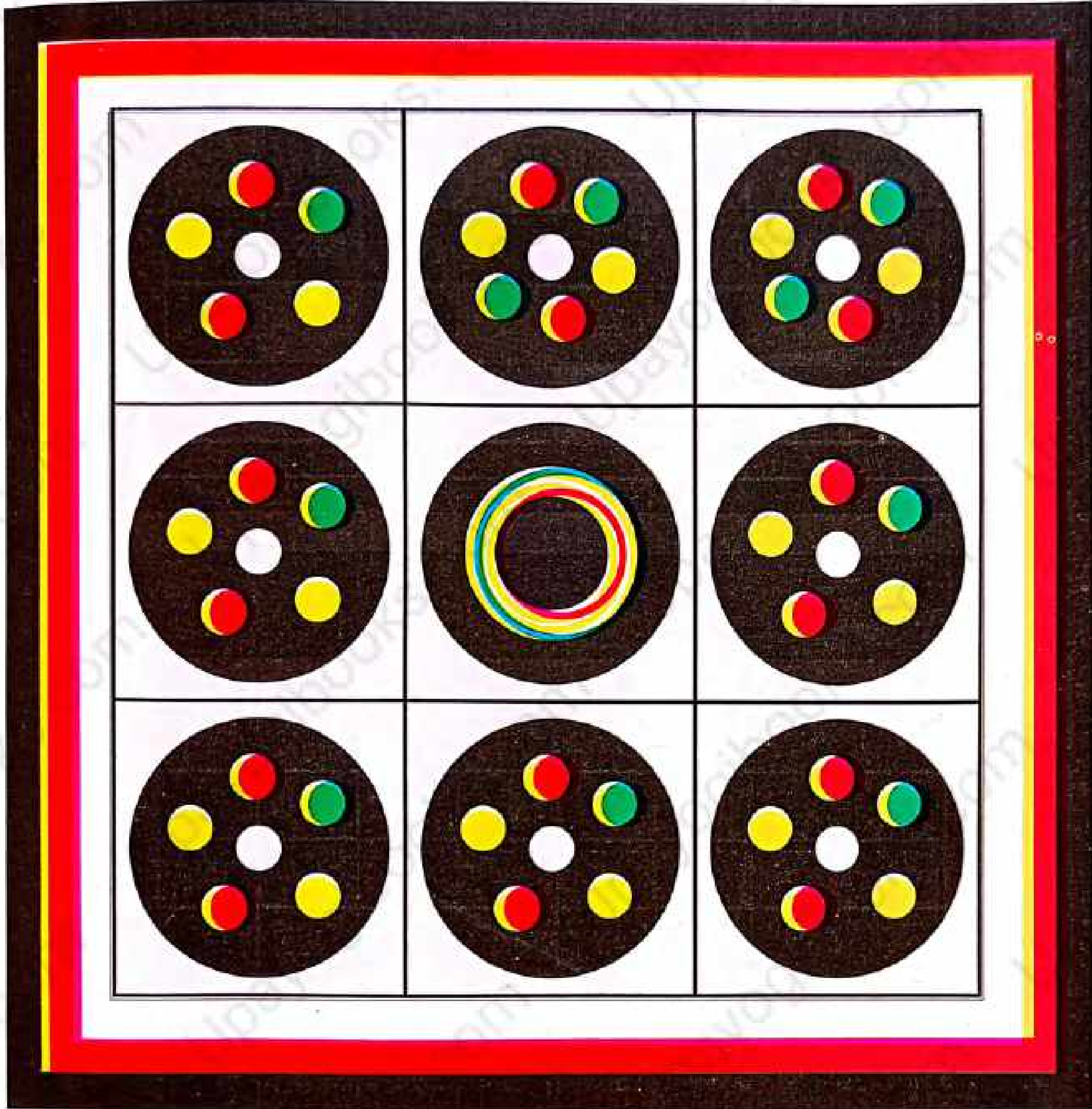
चतुःषष्टि योगिनी मण्डल

3 महा सरस्वती			2 महालक्ष्मी			1 महाकाली	
६४	५६	४८	४०	३२	२४	१६	८
६३	५५	४७	३९	३१	२३	१५	[illegible]
६२	५४	४६	३८	३०	२२	१४	६
६१	५३	४५	३७	२९	२१	१३	[illegible]
६०	५२	४४	३६	२८	२०	१२	४
५९	५१	४३	३५	२७	१९	११	[illegible]
५८	५०	४२	३४	२६	१८	१०	२
५७	४९	४१	३३	२५	१७	९	[illegible]

एकोनपञ्चाशत्पद क्षेत्रपालमण्डल

२१	२२	२३	२५	२७	२९	४०	४८
२०	१३	२४	२६	२८	३०	३९	४७
१९	१२					३८	४६
१८	११		क्षेत्रपाल			३७	४५
१७	१०		४९			३६	४४
१६	९					३५	४३
१५	८	६	४	२	३१	३४	४२
१४	७	५	३	१	३२	३३	४१

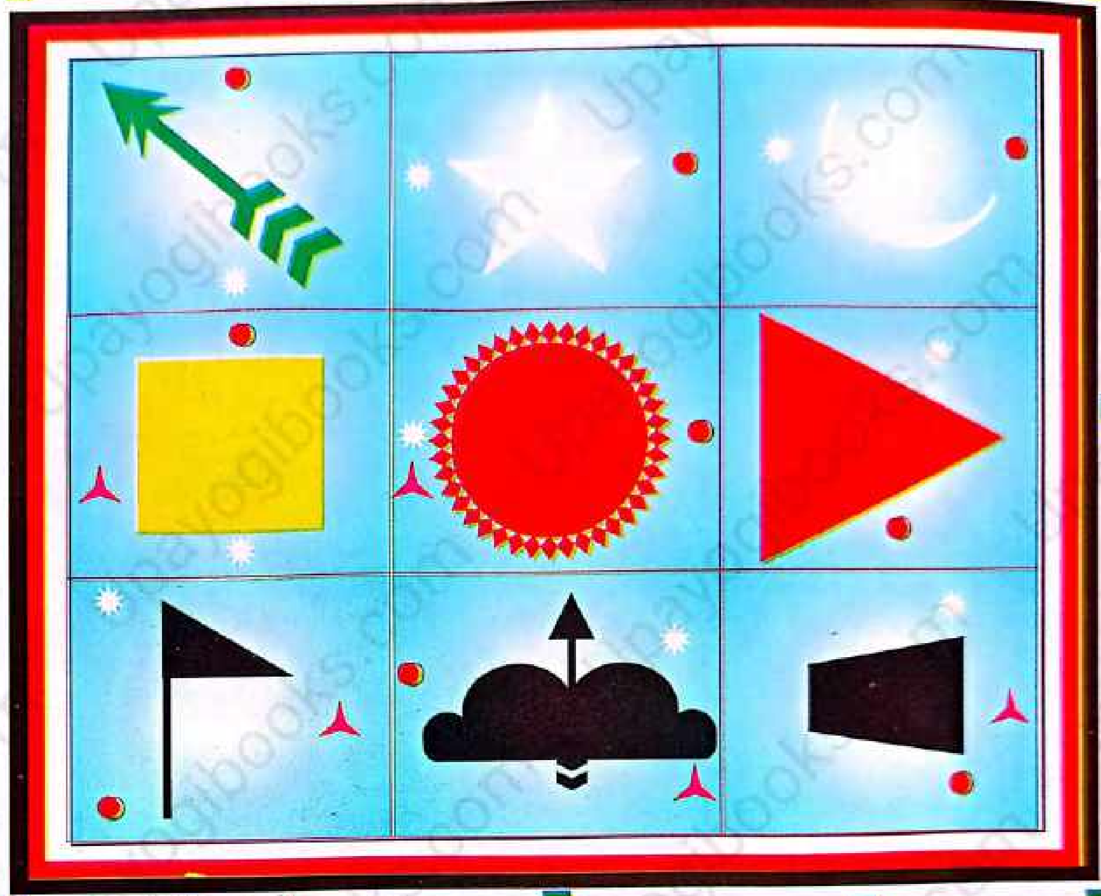
एकपञ्चाशत् कोष्ठक क्षेत्रपाल मण्डल



निर्माण विधि

एक हाथ लम्बी, चौड़ी तथा ऊँची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत, रक्त या पीत वस्त्रावेष्टित करके चार-चार तिर्यक् एवं ऊर्ध्व रेखा करने पर नव कोष्ठक का मण्डल बनेगा जिसमें प्रत्येक कोष्ठक में छः छः पद (चित्रानुसार) बनावें, पूर्व एवं अग्निकोण के कोष्ठक में सात-सात पद तथा मध्य के कोष्ठक में एक पद बनाने पर इक्यावन (५१) पद का क्षेत्रपाल मण्डल बनेगा।

नवग्रह मण्डल



निर्माण विधि

एक हाथ लम्बी, चौड़ी तथा ऊँची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत, रक्त या पीत वस्त्रावेष्टित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर चार-चार रेखा करने से नव पद का नवग्रह मण्डल बनता है, चित्रानुसार ग्रहों की आकृति का निर्माण रंगीन अक्षत से करके यज्ञमण्डप में (पूजन स्थल में) ईशान कोण में रखकर इनका आवाहन पूजन करना चाहिए। ग्रहों के प्रत्येक कोष्ठक में दाहिनी ओर अधि देवताओं का तथा बाईं ओर प्रत्यधि देवताओं का आवाहन होता है, साथ ही पञ्चलोकपालों का तथा वेदी के बाहर दशों दिशाओं में इन्द्रादि दशदिक्पालों का आवाहन पूजन किया जाता है।

चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डल



निर्माण विधि

सवा हाथ लम्बी चौड़ी तथा ऊँची काठ की चौकी या वेदी में श्वेत, रक्त या पीत वस्त्रावेष्ठित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर अठारह रेखा करने से सत्रह-सत्रह पद का चतुर्लिङ्गतोभद्र मण्डल बनता है। चारों कोनों में तीन-तीन पदों का श्वेत इन्दु, तीन तीन पद की चारों कोने में कृष्ण शृंखला, सात-सात पद की हरित या नील वल्ली, चार पद का सभी ओर रक्त भद्र, अठारह पद का चारों ओर कृष्ण महारुद्र (शिवलिङ्ग) पांचपद की महारुद्र के दोनों ओर श्वेत वापी, एकपद पीत भद्र एवं वापी के मध्य चारों ओर शृंखला के शीर्षभाग में चारों ओर तीन तीन पीत पद, लिङ्गों के स्कन्ध से बीस-बीस पद की रक्त परिधि उसके अन्दर सोलह पद की पीत परिधि, मण्डल के मध्य में नवश्वेत पद में कर्णिकासहित रक्त पद्म बनाना चाहिए। मण्डल के बाहर श्वेत-सत, रक्त-रज एवं कृष्ण-तम परिधि बनाते हैं, कुछ विद्वान कृष्ण परिधि चतुर्लिङ्गतोभद्र में नहीं बनाते। उक्त क्रम से रंगीन अक्षतों से वेदी पूरित करके शिवजी के किसी भी यज्ञ अनुष्ठान, महामृत्युञ्जय मंत्र जप, रुद्रयज्ञादि में इस वेदी को यज्ञमण्डप के पूर्व की ओर मध्य में रखकर आवाहन, पूजन किया जाता है।

सर्वतोभद्र मण्डल



निर्माण विधि

काठ की सवा हाथ लम्बी, चौड़ी एवं ऊँची चौकी अथवा वेदी में श्वेत, पीत अथवा रक्त वस्त्रावेष्टित करके पीत या रक्त रंग से अथवा कुंकुम से पूर्वापर (खड़ी एवं तिरछी) उन्नीस रेखा खींचने से अठारह-अठारह कोष्ठक का सर्वतोभद्र मण्डल (वेदी) बनता है। वेदी के चारों कोनों में तीन पद का श्वेत खण्डेन्दु, पांच कोष्ठक कृष्ण शृंखला ग्यारह पद की हरित या नीला वल्ली नव कोष्ठक का रक्त भद्र, चौबीस पद का श्वेत वापी, बीस पद की पीत परिधि (वेदी के अन्दर की परिधि) तथा मध्य वेदी में पांच श्वेत पद में अष्टदल बनाना चाहिए। वेदी के बाहर सत्व- श्वेत से, रज- रक्तवर्ण से तथा तम- कृष्ण वर्ण से तीन परिधि बनावें। उक्त पदों (कोष्ठकों) को रक्त, पीत, हरित एवं कृष्ण वर्ण से तण्डुल (अक्षत) रंगकर पूरित करना चाहिए। वेदी बनाकर यज्ञमण्डप में (पूजा स्थल में) पूर्व दिशा के मध्य में स्थापित करके पूजन करना चाहिए। यज्ञमण्डप के छोटे या बड़े होने पर उसी अनुपात में वेदी की लम्बाई चौड़ाई भी कम ज्यादा आधी डेढ़गुणा या दो गुना करना चाहिए।

नोट - अक्षत ही पूजन में ग्राह्य एवं सर्वश्रेष्ठ है अत: वेदी रंगीन अक्षतों से ही पूरित करना चाहिए कुछ लोग नानावर्ण की दाल प्रयुक्त करते हैं वह शास्त्रसम्मत नहीं है। वैसे भी अनुष्ठानादि कार्य में द्विदल (दाल) वर्जित है।

चतस्त्रकुण्ड

एक हाथ, सवा हाथ लम्बा चौड़ा अथवा आहुति के अनुसार छोटा बड़ा बनाया जा सकता है, इसका प्रयोग किसी भी देवी देवताओं के हवन में किया जाता है।

ऊपर की श्वेत परिधि ४ अंगुल चौड़ी तथा ४ अंगुल ऊँची

मध्य की रक्त परिधि ३ अंगुल चौड़ी तथा ३ अंगुल ऊँची



योनि १२ अङ्गुल ऊँची १२ अङ्गुल लम्बी तथा ८ अङ्गुल चौड़ी रक्तवर्ण की

नीचे की कृष्ण परिधि २ अंगुल चौड़ी तथा २ अंगुल ऊँची

योनिकुण्ड



इस योनि कुण्ड का प्रयोग देवी के हवन में किया जाता है।

यादै ~~पाइ~~ मा बाट्छु भन्दा छिटै यो खरानी

आगो बनि पोल्छ किन बिछोडको निसानी

संक्षिप्त-परिचय



नाम : डॉ० राममिलन मिश्र

पितृनाम : श्री द्वारिकेश प्रसाद मिश्र

मातृनाम : स्व. कमलादेवी मिश्रा

जन्मतिथि : 30 नवम्बर, 1971 ई०

स्थायी निवास : विसौंधा, इटवां, चित्रकूट (उ.प्र.)

शिक्षा : आचार्य (साहित्य, ज्योतिष, पुराणेतिहास) नेट, पी-एच.डी.

सम्पादन : पर्वदर्शन (वार्षिक), पर्वपत्र (वार्षिक), वेदाङ्ग वीथी पत्रिका (अर्द्धवार्षिक), श्रीरामचन्द्रचरितामृतम्, रहस्य, व्यास उवाच।

प्रकाशित कृतियाँ कवचकुञ्ज, स्तोत्रमञ्जूषा, श्रावणी उपाकर्म पद्धति, ब्रह्मवर्चस्व सिद्धि, भारतीय त्योहार, सन्ध्या विज्ञान, कालसर्प शांति पद्धति, चण्डीयज्ञप्रकाश, कुशकण्डिका रहस्य, जीवन दर्पण, ब्राह्म-विवाह-लग्नपत्रिका, श्री हनुमान चालीसा, महाविद्यानुष्ठान पद्धति, महामृत्युञ्जय अनुष्ठान पद्धति।

शीघ्र प्रकाश्य : ग्रहशांति कल्प, संस्कृत सरणिः, ब्राह्म-विवाह पद्धति, संकल्प सागर, वेदाङ्ग-ग्रन्थमाला (शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द), सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती, सूर्य शतकम्, सुदर्शन शतकम्।

सेवा : संस्कृत, ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड द्वारा समाजसेवा।

निवास : 'कमलानिलयम्', कमलानगर, यमुना विहार (तिगनौता), डांडी, प्रयागराज - 211008

सम्पर्क : 9415366822, 8840762381

E-mail : acharyarammilan@yahoo.in



₹ 250/-

श्री वेदाङ्ग संस्थान (पंजीकृत)

कमलानिलयम्, कमलानगर, यमुना विहार

तिगनौता (डाड़ी) प्रयागराज 211008

सम्पर्क- 9415366822



ISBN : 978-81-935160-0-3